सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 115, नई दिल्ली । शुक्रवार, 04 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सत्य बोलकर मित्र बनाना अच्छा है, परन्तु झूठ बेलकर मित्र बनाने से सत्य बोलकर शत्रु बनाना अधिक अच्छा है, क्योंकि आप संसार में सबको एक साथ प्रसन्न नहीं कर सकते।

03 देश में नशे के सौदागरों का बढ़ता जाल
06 अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस कैसे मनाएं
08 मंत्री गडकरी के हाथों झारखंड में 6300 करोड़ योजनाओं का शिलान्यास

दिल्ली में इन वाहनों पर से हटे बैन लोगों ने सरकार से की अपील

दिल्ली में पुराने वाहनों को लेकर संशय और नाराजगी है। लोग दिल्ली सरकार से बेहतर रखरखाव वाले वाहनों को प्रतिबंध से बाहर रखने की नीति बनाने की मांग कर रहे हैं। उनका कहना है कि प्रदूषण के अन्य कई कारण हैं और पुराने वाहनों पर प्रतिबंध लगाना दिल्ली वालों को प्रताड़ित करने जैसा है। कई लोगों की रोजी-रोटी वाहनों से जुड़ी है।

संजय बाटला

नई दिल्ली। अवधि पूरी कर चुके वाहनों को पेट्रो पदार्थ न देने के मामले में भले ही दिल्ली सरकार का रुख दो दिन बाद ही बदल गया हो और आदेश को वापस लेने के प्रयास तेज कर दिए गए हो, लेकिन इसे लेकर दिल्ली वालों में संशय और नाराजगी बरकरार है।

उन्होंने इस मामले में अन्य राज्यों की तरह दिल्ली सरकार से पुराने वाहनों को लेकर स्पष्ट नीति बनाने की मांग की है। जिसमें बेहतर रखरखाव वाली अवधि पूरी कर चुके वाहनों को इस प्रतिबंध के दायरे से बाहर रखने की मांग शामिल है।

यह इसलिए भी क्योंकि अभियान ने मध्यमवर्गीय व निम्न मध्यमवर्गीय दिल्ली के समाज में इस अभियान ने बड़ी चिंता पैदा की है, जो न सिर्फ 10 वर्ष डीजल व 15 वर्ष के पेट्रोल वाहनों को लेकर बल्कि उन वाहनों के लिए भी है जो इस उम्र मियाद के आसपास हैं। और कुछ वर्ष में उनपर भी दिल्ली की सड़कों से बाहर जाने का संकट आ जाएगा।

दिल्ली के करीब ढाई हजार आरडब्ल्यूए के फेडरेशन यूनाईटेड रेजिडेंट ज्वाइंट एक्शन (ऊर्जा) के अध्यक्ष अतुल भार्गव ने कहा कि यह पूरा अभियान अपनी नाकामियों को दिल्ली वालों के सिर फोड़ने और सजा देने का प्रयास है। जबकि,

प्रदूषण के और भी कारण है।

कूड़े का ढेर, गंदगी के साथ ही उद्योग से होने वाला प्रदूषण तथा पड़ोसी राज्यों में जलने वाला पराली समेत अन्य कारक हैं, जिससे दिल्ली में वायु प्रदूषण होता है। उसपर शासन-प्रशासन द्वारा तो रोक नहीं लगाई जा रही है। उल्टे दिल्ली वालों को प्रताड़ित किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि कई निजी कारें ऐसी है, जो काफी कम चली है और उसकी स्थिति काफी बेहतर है। उसके मालिक उसका रखरखाव बेहतर तरीके से रख रखे हैं और कारों के लिए प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र (पीयूसी) भी है। बहुत सारे परिवार ऐसे है, जिन्होंने वर्षों से बचत में एक गाड़ी ली और उससे उनका भावनात्मक लगाव है।

वह उसके रोजीरोटी से भी जुडी है, लेकिन उन्हें सड़कों पर नहीं चलने दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि अभियान शुरू होने से पहले इस संबंध में ऊर्जा द्वारा दिल्ली सरकार को पत्र लिखा गया था तथा मांग की गई थी कि अन्य राज्यों की तरह दिल्ली में भी ऐसे वाहनों के लिए नीति लाई जाए।

आरडब्ल्यूए के एक अन्य फेडरेशन यूनाईटेड रेजिडेंट आफ दिल्ली (यूआरडी) के महासचिव सौरभ गांधी के अनुसार, पूर्व में केंद्रीय परिवहन मंत्रालय ने भी इस संबंध में नीति बनाने को को कहा था, जिसमें वाहनों की फिटनेस जांच के बाद पांच वर्ष और चलने की अनुमति देने का प्रविधान है।

दिल्ली पेट्रो डीलर्स एसोसिएशन (डीपीडीए) के अध्यक्ष निश्चल सिंघनिया ने कहा कि बेहतर फिटनेस वाले वाहनों को इस दायरे से बाहर लाना चाहिए। इसके लिए स्पष्ट नीति की आवश्यकता है।

फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेडर्स एसोसिएशन (फेस्टा) के महासचिव राजेंद्र शर्मा के अनुसार, कई लोगों की रोजी रोटी वाहनों से जुड़ी हुई है। इसलिए प्रतिबंध लगाते समय यह तथ्य भी ध्यान में रखना चाहिए।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

रेल यात्रियों के लिए जरूरी खबर, नई दिल्ली की 100 से ज्यादा ट्रेनों का बदला स्टेशन

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास का काम जल्द शुरू होगा जिससे यात्रियों को एयरपोर्ट जैसी सुविधाएं मिलेंगी। पहले चरण में पहाड़गंज की तरफ मल्टी मॉडल ट्रांसपोर्ट हब बनेगा और कुछ प्लेटफार्मों का पुनर्निर्माण होगा। इस दौरान 105 ट्रेनों को अन्य स्टेशनों पर भेजा जाएगा। निर्माण के लिए कई बाधाएं दूर की जा रही हैं और वैकल्पिक टर्मिनलों का विकास किया जा रहा है।

नई दिल्ली। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास के लिए निर्माण कार्य शीघ्र शुरू होने की उम्मीद है। इसकी प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। पहले चरण में स्टेशन के पहाड़गंज की तरफ मल्टी मोडल ट्रांसपोर्ट हब (एमएमटीएच) बनाने के साथ ही एक से नौ नंबर तक के प्लेटफार्म का भी पुनर्निर्माण होगा।

इससे रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को एयर पोर्ट की तरह सुविधाएं मिलने के साथ ही भीड़ प्रबंधन में आसानी होगी। स्टेशन के आसपास यातायात व्यवस्था को सुधारने में मदद मिलेगी जिससे कि यात्री आसानी से यहां पहुंच सकेंगे।

लेकिन, निर्माण कार्य शुरू होने से यहां से ट्रेन परिचालन बाधित होगी। दिल्ली मंडल की एक रिपोर्ट के अनुसार यहां से 105 ट्रेनों को अन्य स्टेशनों पर स्थानांतरित करना होगा। यह रेलवे प्रशासन के सामने बड़ी चुनौती है।

रेलवे अधिकारियों ने बताया, निर्माण कार्य के लिए मिट्टी की जांच के साथ ही स्टेट एंट्री रोड स्थित रेल निवास रेलवे क्लब और जेई कार्यालय को ध्वस्त करने के लिए सर्वे पूरा हो गया है। शीघ्र ही इन्हें ध्वस्त करने का काम शुरू हो जाएगा। साथ ही नगर निगम के नाले को स्थानांतरित करने का काम चल रहा है।

वन विभाग से निर्माण क्षेत्र में आने वाले वृक्षों को काटने व स्थानांतरित करने की अनुमति नहीं मिलने से निर्माण कार्य रूका हुआ था। अब शीघ्र अनुमति मिलने की उम्मीद है। अगले वर्ष फरवरी तक पहाड़गंज की तरफ स्थित स्टेशन के भवन के कुछ हिस्से को भी तोड़ा जाएगा।

इसके साथ ही एक से पांच नंबर तक के प्लेटफार्म और फिर छह से नौ नंबर के प्लेटफार्म का पुनर्निर्माण किया जाएगा। इससे पहले ट्रेनों को अन्य स्टेशनों पर स्थानांतरित करना होगा। अभी पुरुषोत्तम एक्सप्रेस सहित छह ट्रेनों को अन्य स्टेशनों से चलाने की घोषणा की गई है। आने वाले दिनों में अन्य ट्रेनों को लेकर भी निर्णय लिए जाएंगे।

यह काम चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि पुरानी दिल्ली, हजरत निजामुद्दीन के साथ ही आनंद विहार टर्मिनल से भी काफी संख्या में ट्रेनों का संचालन होता है। इस कारण बहुत अधिक ट्रेनें यहां स्थानांतरित नहीं हो सकती हैं। इसे ध्यान में रखकर निर्माणाधीन बिजवासन टर्मिनल के काम में तेजी लानी होगी।

वहीं, तुगलकाबाद और आदर्श नगर में नए रेल टर्मिनल बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। दोनों स्टेशनों पर दो-दो अतिरिक्त प्लेटफार्म बनाने के साथ ही वाशिंग लाइन (ट्रेन के रखरखाव के लिए) और स्टेबलिंग लाइन (खाली रेक रखने के लिए) बनेंगे।

अधिकारियों के अनुसार पूर्व दिशा की नई दिल्ली से चलने वाली पूर्व दिशा की कई ट्रेनों को आनंद विहार टर्मिनल और पुरानी दिल्ली से चलाने पर विचार चल रहा है। वहीं, दक्षिण व पश्चिम दिशा की कई ट्रेनों को हजरत निजामुद्दीन व तुगलकाबाद स्थानांतरित किया जाना है।

इसी तरह से उत्तर दिशा की कई ट्रेनें सराय रोहिल्ला व आदर्श नगर से चलेंगी। शकूरबस्ती, दिल्ली छावनी, सफदरजंग सहित कई अन्य छोटे स्टेशनों से भी कुछ ट्रेनें चलाई जाएंगी।

नोएडा में इन 38 जगह लगेंगे ट्रैफिक आइलैंड, इस दिशा में तेजी से काम शुरू

नोएडा में यातायात व्यवस्था को सुधारने के लिए 38 नए ट्रैफिक आइलैंड लगाए जाएंगे। यह कदम पुलिसकर्मियों को धूप और बारिश से बचाने में मदद करेगा। साथ ही जिले में 22 नए पुलिस बूथ भी बनाए जाएंगे। डीसीपी यातायात लखन सिंह यादव ने बताया कि इन पहलों से शहर में यातायात प्रबंधन बेहतर होगा।

नोएडा। नोएडा में 38 जगह पर नए ट्रैफिक आइलैंड(यातायात पुलिसकर्मियों के लिए चौराहे पर ड्यूटी देने में प्रयोग होने वाली संरचना) लगाए जाएंगे। इससे यातायात पुलिसकर्मियों को बारिश व धूप के दौरान ड्यूटी देने में कोई दिक्कत नहीं आएगी।

दुर्घटनाओं को रोकने व यातायात को सुगम करने में मदद मिलेगी। अधिकांश जगह पर पूर्व में लगाए आइलैंड गलकर खराब हो चुके हैं। उधर, जिले में 22 जगह पर बूथ बनाकर लगाए जाएंगे। यह यातायात पुलिस के रंग में रंगे नजर आएंगे।

नोएडा में अधिकांश तिराहे व चौराहे पर ट्रैफिक आइलैंड स्थापित किए गए थे। ट्रैफिक लाइट लगने, जरूरत महसूस नहीं होने पर हटाए गए या गलने पर पूरी तरह से विस्थापित कर दिए गए। कई बार ट्रैफिक लाइट खराब होने पर यातायात पुलिसकर्मियों को ड्यूटी देने में दिक्कत आती है।

इस बाबत प्रमुख चौराहे व तिराहे पर इनको लगाया जा रहा है। इनकी मदद से ड्यूटी देना आसान होगा। डीसीपी यातायात लखन सिंह यादव ने बताया कि यातायात व्यवस्था को बेहतर करने के लिए ट्रैफिक आइलैंड लगाने की कवायद की जा रही है।

इन जगहों पर लगेंगे

यातायात पुलिस के मुताबिक हाजीपुर चौराहा, एबीसीडी चौराहा, सेक्टर 62 ओकाया चौक, 12-22-56 तिराहा, स्टेडियम चौराहा, गोलचक्कर आइओसीएल, झुंडपुरा चौराहा, डीएम चौराहा, सेक्टर 19-20 राइ रेजिडेंसी, शशि चौक, 12-22 चौराहा, सेक्टर 66 डीएस ग्रुप तिराहा, होशियारपुर तिराहा, एल्डिको चौराहा।

अट्टा पीर, एडोब चौराहा, सेक्टर 125 एचसीएल चौराहा, स्पाइस माल चौराहा, एनएसइजेड तिराहा, इंडस वैली स्कूल तिराहा, सेक्टर 57 चौराहा, 31-25 चौराहा, गिझौड़ चौराहा, पाथवे स्कूल, श्रमिक कुंज चौराहा।

स्वामी फर्नीचर 8-10-11-12 चौराहा, सेक्टर 21 वाटर टैंक, खोड़ा कालोनी चौक, 11-56 चौक, 57-55 चौक, सफायर स्कूल, सेक्टर 93 चौराहा, सेक्टर 104 हाजीपुर गांव, गिझोड़-57 चौराहा व सेक्टर 100 के पास आदि जगह चिह्नित की गई हैं।

जम्मू-कश्मीर में नई परिवहन नीति लाने की मांग

जम्मू। प्रदेश के ट्रांसपोर्टरों ने वीरवार को श्रीनगर नागरिक सचिवालय में मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला से मुलाकात कर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने जम्मू-कश्मीर में जल्द नई परिवहन नीति लाने की मांग की। ई-रिक्शा पर नकेल कसने के साथ उनके लिए रूट और जोन निर्धारित करने की भी गुहार लगाई। यात्री किराये में 35 प्रतिशत तक वृद्धि की मांग की गई।

ट्रांसपोर्टरों ने कहा कि प्रदेश में उचित परिवहन नीति नहीं होने के कारण नियमों की धज्जियां उड़ रही हैं। खासतौर पर ई रिक्शा का चलन बढ़ने से अव्यवस्था बढ़ रही है। यह सुनिश्चित किया जाए कि निर्धारित रूट पर ही ई रिक्शा चलें। उन्होंने कहा कि जम्मू और कश्मीर संभाग के दूरदराज क्षेत्रों से वाहनों को फिटनेस के लिए जिला मुख्यालय आना पड़ता है। इसमें कई रूटों पर यह 40 से 50 किमी का सफर है। इसके लिए कस्बों तक ही फिटनेस की सुविधा दी जाए। मौके पर ऑल जेएंडके ट्रांसपोर्टर वेलफेयर एसोसिएशन के चेयरमैन कर्ण सिंह वजीर, प्रधान विजय सिंह चिब, लाभ सिंह, मोहम्मद यूसुफ, माजिद आदि मौजूद रहे।

भूल सुधार

परिवहन विशेष समाचार पत्र के 2 जुलाई 2025 के अंक में पेज नंबर 1 पर 'दिल्ली के इस इलाके में 11 साल बाद पहुंची डीटीसी की बस, 35 हजार की आबादी को नसीब हुआ 'सुहाना सफर'' शीर्षक से प्रकाशित खबर में त्रुटिवश दिल्ली परिवहन मंत्री का नाम कपिल मिश्रा प्रकाशित हो गया है। इसकी जगह पंकज कुमार सिंह होना चाहिए था। इस त्रुटि के लिए हमें अत्यंत खेद है।

- संपादक

कैब से पीक टाइम में सफर हुआ दुश्वार, दोगुना किराया-दोगुनी परेशानी, सरकार के फैसले से एनसीआर के यात्रियों में हैरानी

दिल्ली-एनसीआर में कैब किराया बढ़ा...प्रमुख कैब कंपनियां अब पीक आवर्स में दोगुना किराया वसूलेंगी। प्रमुख कैब कंपनियों ने तय किया है कि पीक आवर्स यानी सुबह-शाम ऑफिस आवागमन के समय यात्रियों से दोगुना किराया वसूला जाएगा। इस फैसले से रोजाना लाखों लोगों का सफर महंगा होने वाला है। जानिए नया चार्ज लोगों की राय और सरकार के नए नियम...

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में कैब सर्विस इस्तेमाल करने वालों को अब अपनी जेब और ज्यादा ढीली करनी पड़ेगी। प्रमुख कैब कंपनियों ने तय किया है कि पीक आवर्स, यानी सुबह-शाम ऑफिस आवागमन के समय, यात्रियों से दोगुना किराया वसूला जाएगा। इस फैसले से रोजाना लाखों लोगों का सफर महंगा होने वाला है।

यात्रियों पर अतिरिक्त बोझ पड़ेगा

अभी तक दिल्ली-एनसीआर में कई लोग ट्रैफिक चालान, पार्किंग और जब्ती की कार्रवाई के डर से अपनी निजी गाड़ियां छोड़कर कैब से सफर कर रहे थे। लेकिन अब उन्हीं यात्रियों पर अतिरिक्त बोझ पड़ने वाला है। सोशल मीडिया पर इस फैसले का विरोध भी शुरू हो गया है। लोग इसे आम आदमी पर सीधी मार बता रहे हैं।

सरकार ने दिए नए दिशा-निर्देश

सरकार के नए दिशा-निर्देशों के मुताबिक सभी राज्यों को अगले तीन महीने में यह व्यवस्था लागू करनी होगी। दिल्ली, नोएडा, गुरुग्राम, गाजियाबाद और फरीदाबाद जैसे इलाकों में रोजाना लाखों लोग कैब से यात्रा करते हैं। यात्रियों का कहना है कि सरकार ने पहले चालान और जब्ती का डर दिखाकर पुरानी गाड़ियां सड़क से हटवाईं और अब कैब कंपनियों को किराया बढ़ाने की खुली छूट दे दी गई है।

कैब यूजर्स ने जताई नाराजगी

राजेश गुप्ता, प्रीतमपुरा निवासी कहते हैं...

"मुझे रोज दिल्ली से गुरुग्राम के डीएलएफ तक जाना पड़ता है। अभी तक मैं 30 से 35 किलोमीटर की यात्रा के लिए 486 से 548 रुपये देता था। दोगुना किराया लागू होने पर यह खर्च 972 से 1096 रुपये तक पहुंच जाएगा। एक ट्रिप पर ही 400 से 500 रुपये ज्यादा देने पड़ेंगे।"

पंकज कुमार, रोहिणी निवासी ने कहा...

"मैं फरीदाबाद से दिल्ली तक 24.8 किलोमीटर का सफर करता हूं। अभी यह दूरी 510 से 569 रुपये में तय होती है। किराया बढ़ने पर यह खर्च बढ़कर 1000 से 1138 रुपये तक जाएगा। पहले महीने भर का कैब

खर्च 1500 से 2000 रुपये था, अब यह 3000 से 3500 रुपये के बीच पहुंचेगा।"

दीनानाथ सोमकर, वसंत विहार निवासी ने कहा...

"सरकार के इस फैसले ने लाखों लोगों को चौंका दिया है। किराया बढ़ने से आम आदमी की जेब पर सीधा असर होगा। लोग मजबूरन मेट्रो या अन्य साधनों से यात्रा करेंगे।"

अशोक कटारिया, चांदनी चौक निवासी ने कहा...

"पीक आवर्स में कैब मिलना पहले ही मुश्किल होता है। अब एक ट्रिप के लिए दोगुना किराया देना होगा। जितना पैसा पहले दो-तीन ट्रिप में लगता था, उतना अब एक ही ट्रिप में देना पड़ेगा।"

क्या कहते हैं जानकार

ट्रांसपोर्ट एक्सपर्ट्स का कहना है कि इस कदम से कैब कंपनियों को तो फायदा होगा, लेकिन रोजाना यात्रा करने वालों पर बड़ा असर पड़ेगा। ऑफिस आवर्स में मेट्रो पहले ही भीड़ से भरी रहती है, ऐसे में मेट्रो का दबाव और बढ़ेगा।

एनसीआर में कैब किराया क्यों बढ़ा?

कैब कंपनियों का कहना है कि बढ़ते ईंधन खर्च और ड्राइवरों को अतिरिक्त इंसेंटिव देने के कारण यह कदम जरूरी है। हालांकि आम लोग इसे एकतरफा फैसला मान रहे हैं।

'तुलना क्यों हानिकारक है?'

तुलना सामाजिक दृष्टि से समाज की सुख-शांति के लिए हानिकारक है।

राष्ट्रीय दृष्टि से राष्ट्र की सुख-समृद्धि और विकास के लिए बाधक है।

सब लोग एक-दूसरे की ओर देखते रहते हैं बजाय राष्ट्र की ओर देखने के।

आध्यात्मिक दृष्टि से स्वयं के लिए हानिकारक है।

क्यों और कैसे?

उपनिषद में एक उदाहरण से बताया है।

एक वृक्ष में दो पक्षी बैठे हुए हैं।

छोटा पक्षी जीव है जो कर्ता भाव से अच्छे बुरे फल को खाकर सुखी दुखी होता है।

बडा पक्षी कुछ नहीं खाता।वह उसकी महिमा में स्थित है।

सारी इच्छाओं से मुक्त।

इच्छा दीन-हीन बना देती है।

छोटे पक्षी को यह तकलीफ़ झेलनी होती है।

इसे हम हमारे भीतर घटता देख सकते हैं।

छोटा पक्षी है-मन(मानसिक मैं,छोटा मैं)।

बडा पक्षी है हृदय में आत्मा(स्वयं)।

दोनों हैं।

मन में हम मानसिक मैं की तरह हैं,हृदय में हम स्वयं हैं।

यह जो स्वयं है इसे ईश्वर का अंश भी कहा है।

परमात्मा का अंश जीवात्मा है।

यह हृदय में रहता है।

मन का मैं,कल्पित मैं मन में है, बुद्धि में है-अहंबुद्धि की तरह, अहम्मन्यता की तरह।

हृदय का मैं बडा मैं है,स्वयं है-

बड़े पक्षी की तरह-अपनी महिमा में स्थित।

हमारे भीतर दोनों हैं।

लेकिन मानसिक मैं हमारा वास्तविक रुप नहीं है।यह कल्पित है,मान्यता है। कल्पना में उडान भरता रहता है,सुखी दुखी होता रहता है।

हृदय में जो आत्मा है स्वयं वह काल्पनिक नहीं है, वास्तविक है।

सबके आधार की तरह।

मूलतः वही हम सब हैं।

वह सबमें है इसीलिए किसीकी किसीसे तुलना करने की जरूरत नहीं है।

यह ऐसा है जैसे एक कक्ष में अनेक देशों के राष्ट्रपति इकट्ठे हो जायें -सब महामहिम।

कोई छोटा बडा नहीं।

जब आत्मा अर्थात स्वयं हर हृदय में मौजूद है फिर आदमी क्यों अपनी महिमा से वंचित है?

कारण है वह मन के मैं को जीता है,बडे अर्थात स्वयं को भूल जाता है।

इसके लिए चाहिए योग क्यों कि छोटा मैं, हृदय में जो स्वयं है उसके संबंध में है।

भेद बाहर नहीं है,भेद भीतर है।

भीतर ही छोटा मैं और बडा मैं मौजूद हैं।

बडा मैं,स्वयं है,बडा पक्षी अपनी महिमा में स्थित।

उसे साक्षी भी कहा गया हे।

वह कर्ता भोक्ता की तरह नहीं है।वह छोटा पक्षी है।

हम अपना निरीक्षण करें तो अपने को मन में छोटे पक्षी की तरह, मानसिक मैं की तरह पायेंगे कर्ता भोक्ता भाव से कडवा मीठा फल खाकर सुखी दुखी होते हुए।

हमें अपने असली स्वरूप को पहचानना चाहिए जो हृदय में स्वयं है।

किसी को यह ज्ञान मार्ग की बात लग सकती है।

आत्मा की दृष्टि से कहें तो ज्ञान मार्ग,

परमात्मा की दृष्टि से कहें तो भक्ति मार्ग।

जैसा कि गीता कहती है-हृदय में विराजमान परमात्मा की शरण में जाओ।'

उस परमात्मा की।

ज्ञान मार्ग में यह आत्मा की तरह है,स्वयं की तरह।

जिसे जिस तरह ठीक लगे वैसा कर सकता है।

सत्य के अनेक द्वार हैं और सभी खुले हुए हैं। कोई किसीभी द्वार से प्रवेश कर सकता है।गीता के अठारह अध्याय अठारह योग हैं। विषाद योग भी है। विषाद दुख झेलने के लिए नहीं अपितु उसे साधन की तरह उपयोग करने के लिए है। आदमी बुद्धिमान हो तो वह विषाद का भी सीढी की तरह उपयोग कर सकता है बजाय उससे ठोकर खाने के।

आध्यात्मिक दृष्टि से हम छोटे मैं और बडे स्वयं(आत्मा)की तरह हैं।

बड़े स्वयं को भूल गये हैं और छोटे मैं (मानसिक मैं, कल्पित मैं)को ही सब कुछ मान बैठे हैं।

एक शेर का बच्चा, भेड़-बकरी के साथ रहकर भूल गया वह कौन है?

एक शेर के आने पर भेड बकरियों के साथ वह भी भागने लगा।

शेर उसे पकड़ कर नदी किनारे ले गया,उसे उसका प्रतिबिंब दिखाया और जोर से आवाज करने के लिए कहा तो दहाड निकली।वह आवाज ही भूल गया था। कभी ध्यान ही नहीं गया।

उस शेर की भूमिका एक गुरु की,एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक की बताई जाती है।

वह कहता है-मन में मैं मैं,मेरा मेरा मत करो,

हृदय में स्वयं को पहचानों,स्वयं से जुडो।

एक कहावत है-डरा सो मरा।

डरने का मरने से क्या संबंध?

मन में मैं मैं की तरह जीनेवाला,दिन में सौ बार मरता है लेकिन जो हृदय में स्वयं से जुड गया वह निर्भय हो जाता है।उसका आधार उसके भीतर मिल गया।

जो मन में मैं मै करता है वह तो टूटा हुआ है,उखडा हुआ है स्वयं से।

सारे दुर्भाग्य का कारण यही है।

उसे चाहिए वह खुद से जुडे हृदय में। इसमें बहुत बडा बल है।

यह आत्मबल है।

जो खुद से जुडा हुआ है उसे कौन डरा सकता है,कौन दबा सकता है?

इसीलिए तो क्रांतिकारियों पर अंग्रेज हावी न हो सके।जो मौत कि भी परवा नहीं करता उससे सब डरते हैं।

यह तो जो खुद से टूटा हुआ है उसीकी गति बिगडती है।

हमें देख लेना चाहिए कि हम मन में मैं मैं कर रहे हैं,उसी में खोये हुए हैं या हृदय में स्वयं से जुडे हुए हैं?

ऐसे तो कोई घमंडी, अभिमानी भी 'मैं स्वयं' करके जी सकता है।

मगर यह अहंबुद्धि है जो अस्तित्व बोध,आत्मबोध का दुरुपयोग कर रही है।

ऐसा बल तमोगुणी बल है।

रावण का बल।

राम का बल अस्तित्व बोध,आत्मबोध के दुरुपयोग से नहीं है वह तो स्वयं आत्मा है बल्कि परमात्मा।

जब तक हम अहंबुद्धि की तरह हैं तब तक तुलना है और यह हर दृष्टि से हानिकारक है

लेकिन जब हम हृदय में स्वयं से जुड जाते हैं तृप्ति का,पूर्णता का, गहरे संतोष का अनुभव होता है।

यही योग है।

इसे करना पडता है।यह साधना है।

मन और हृदय के बीच में है चित्त।

जब तक चित्त,मन में है वियोग जारी रहता है।

जब चित्त,हृदय में -स्वयं में ठहरने लगता है, गहराने लगता है स्थिरता आने लगती है।

यह स्थिरता ही आत्मस्थिति में परिणमित होती है।

फिर कुछ नहीं ऐसा योगी सदा आनंद में है तथा ₹बडे भारी दुख₹ से भी विचलित नहीं होता।

विचलित होने का अर्थ है चित्त का हृदय से टूटकर मन-बुद्धि में बने रहना। आदमी अपने आपसे बचता रहता है।

जितना ज्यादा मन में

उतना खुद से दूर भागा हुआ।

हर वक्त दूर,हर वक्त बाहर किसीके साथ तुलना में।

यह दो मानसिक प्रतिमाओं (इमेज) में संघर्ष है।

इसका कारण भी आदमी ही है।वह खुद से जुडा हुआ नहीं है,वह योगी नहीं है।कुयोगी है।

सारा खेल हमारे भीतर हो रहा है और हम बाहर एक दूसरे को देख रहे हैं तुलना करते हुए।

अच्छा हो अगर हर आदमी हृदय में स्वयं से जुड़ने की कोशिश करे

तब हर आदमी अतुलनीय है।

भारत का हर नागरिक अतुलनीय है तो राष्ट्र की सुख-समृद्धि को कौन रोक सकता है?

हानि तो अहंकार पूर्ण तुलना के कारण है जिसका अर्थ है अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना।

तुलना करने वाला स्वयं से टूटा हुआ है, दूसरे पर पूरी तरह से निर्भर है यह समझ में आ जाय तो इस सारी मूर्खतापूर्ण दौड का अंत हो सकता है।

नकारात्मक प्रतिस्पर्धा का कोई अर्थ नहीं। अपनी महिमा में स्थित होने का जरुर अर्थ है।

हींग Asafoetida

1. दांतों में कीडे लग जाने पर रात्रि को दांत में हींग दबाकर सोएँ। कीड़े खुद-ब-खुद निकल जाएंगे।

2. यदि शरीर के किसी हिस्से में कांटा चुभ गया हो तो उस स्थान पर हींग का घोल भर दें। कुछ समय में कांटा स्वतः निकल आएगा।

3. हींग में रोग-प्रतिरोधक क्षमता होती है। दाद, खाज, खुजली व अन्य चर्म रोगों में इसको पानी में घिसकर उन स्थानों पर लगाने से लाभ होता है।

4. हींग का लेप बवासीर, तिल्ली में लाभप्रद है।

5. कब्जियत की शिकायत होने पर हींग के चूर्ण में थोड़ा सा मीठा सोड़ा मिलाकर रात्रि को फांक लें, सबेरे शौच साफ होगा।

6. पेट के दर्द, अफारे, ऐंठन आदि में अजवाइन और नमक के साथ हींग का सेवन करें तो लाभ होगा।

7. पेट में कीड़े हो जाने पर हींग को पानी में घोलकर एनिमा लेने से पेट के कीड़े शीघ्र निकल आते हैं।

8. जख्म यदि कुछ समय तक खुला रहे तो उसमें छोटे-छोटे रोगाणु पनप जाते हैं। जख्म पर हींग का चूर्ण डालने से रोगाणु नष्ट हो जाते हैं।

9. प्रतिदिन के भोजन में दाल, कढ़ी व कुछ सब्जियों में हींग का उपयोग करने से भोजन को पचाने में सहायक होती है।

10. मासिक धर्म के दौरान होने वाली परेशानियां जैसे पेट में दर्द और मरोड़ या अनियमित मासिक धर्म में हींग का सेवन करने से फायदे होते हैं। यह औषधि कैंडिडा संक्रमण और ल्यूकोरहोइया से भी छुटकारा दिलाने में मददगार साबित होता है।

11. सूखी खांसी, अस्थमा, काली खांसी के लिए हींग और अदरक में शहद मिलाकर लेने से काफी आराम मिलता है।

12. हींग की मदद से शरीर में ज्यादा इन्सुलिन बनता है और ब्लड शुगर का स्तर नीचे गिरता है। ब्लड शुगर के स्तर को घटाने के लिए हींग में पका कड़वा कद्दू खाना चाहिए।

13. हींग में कोउमारिन होता है जो खून को पतला करने में मदद करता है और इसे जमने से रोकता है। हींग बढ़े हुए ट्राइग्लीसेराइड और कोलेस्ट्रोल को कम करता है और उच्च रक्तचाप को भी घटाता है।

14. यह औषधि विचार शक्ति को बढ़ाती है और इसलिए उन्माद, ऐंठन और दिमाग में खून की कमी से बेहोशी जैसे लक्षण से बचने के लिए भी हींग खाने की सलाह दी जाती है।

15. अफीम के असर को कम करने में हींग मदद करता है। इसलिए इसे विषहरण औषधि भी कहा जाता है।

16. शोध के अनुसार हींग में वह शक्ति होती है जो कर्क (कैंसर) रोग को

भडल्या नवमी आज

हर वर्ष आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से लेकर नवमी तिथि तक गुप्त नवरात्र मनाया जाता है। इस दौरान जगत जननी मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है। साथ ही विशेष कार्यों में सिद्धि पाने के लिए व्रत रखा जाता है। गुप्त नवरात्र के दौरान दस महाविद्याओं की देवियों की पूजा की जाती है। इनकी पूजा करने से साधक को सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है। साथ ही जीवन में व्याप्त दुख एवं संकट दूर हो जाते हैं। इस वर्ष गुप्त नवरात्र की नवमी तिथि 15 जुलाई को है। इस दिन जगत जननी आदिशक्ति मां सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है। साथ ही शुभ कार्यों में सिद्धि पाने के लिए उनके निमित्त व्रत रखा जाता है।

कब मनाई जाती है भड़ली नवमी?

सनातन धर्म में भड़ली नवमी का विशेष महत्व है। यह पर्व हर वर्ष आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को मनाया जाता है। इस तिथि पर सभी प्रकार के शुभ कार्य किए जाते हैं। इसके लिए किसी ज्योतिष की सलाह लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। भड़ली नवमी को अबूझ मुहूर्त भी कहा जाता है। वर्तमान वर्ष में भड़ली नवमी के दिन विवाह समेत सभी प्रकार के कार्यों के लिए शुभ मुहूर्त है।

भडल्या नवमी की तिथि

भडल्या की नवमी तिथि 3 जुलाई को दोपहर में 2 बजकर 7 मिनट शुरू हो जाएगी, जो 4 जुलाई को शाम 4 बजकर 33 मिनिट तक रहेगी। उदया तिथि के अनुसार 4 जुलाई को मनाई जाएगी।

धार्मिक महत्व

ज्योतिषियों की मानें तो भड़ली नवमी तिथि स्वयंसिद्ध मुहूर्त है। इस तिथि पर शुभ कार्य करने के लिए ज्योतिष गणना की आवश्यकता नहीं पड़ती है। किसी भी समय जातक अपनी सुविधा के अनुसार शुभ कार्य कर सकते हैं। साथ ही शुभ कार्य का श्रीगणेश कर सकते हैं। इस तिथि

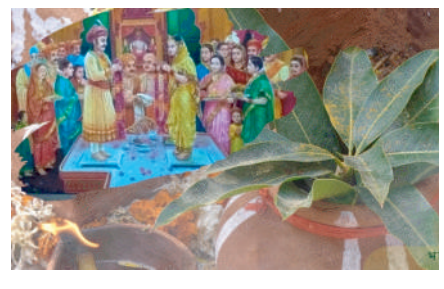

पर शुभ कार्य करने से अक्षय तृतीया के समतुल्य फल प्राप्त होता है

देवी पार्वती की ऐसी कौन सी जिज्ञासा थी जिस पर भगवान शंकर को क्रोध नहीं आया?

यहाँ माता पार्वती जी ने संसार के लिए यह भी स्पष्ट कर दिया, कि भगवान श्रीराम जी की कथा कभी भी एक प्रकार से नहीं कही जाती है। ऐसा नहीं, कि किसी संत ने जैसी कथा कही, ठीक वैसे ही दूसरे संत भी कहेंगे।

मुनि भारद्वाज जी को श्रीराम जी की कथा श्रवण करने का अत्यंत उत्साह है। मुनि याज्ञवल्क्य जी, भगवान शंकर के प्रसंगों के माध्यम से ही, उन्हें श्रीराम जी की कथा सुनानी आरम्भ करते हैं। वे कहते हैं, कि एक समय कैलाश पर्वत पर भगवान शंकर और माता पार्वती दोनों अत्यंत ही सुंदर व मनोहर वातावरण में बैठे थे। भगवान शंकर को अपने पर अपार स्नेहयुक्त भावों से सरोबार देख, माता पार्वती ने कहा-

'जौं मो पर प्रसन्न सुखरासी।
जानिअ सत्य मोहि निज दासी।।
तौ प्रभु हरहु मोर अग्याना।
कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना।।'

अर्थात हे प्रभु! अगर आप मुझ पर प्रसन्न हैं, और सचमुच मुझे अपनी दासी जानते हैं, तो हे प्रभु! आप श्री रघुनाथजी की नाना प्रकार की कथा कहकर मेरा अज्ञान दूर कीजिए।

यहाँ माता पार्वती जी ने संसार के लिए यह भी स्पष्ट कर दिया, कि भगवान श्रीराम जी की कथा कभी भी एक प्रकार से नहीं कही जाती है। ऐसा नहीं, कि किसी संत ने जैसी कथा कही, ठीक वैसे ही दूसरे संत भी कहेंगे। एक ही प्रसंग को कोई संत किसी ओर प्रकार से बाँचेंगे, और दूसरे संत किसी अन्य प्रकार से।

इसमें एक और विशेषता होगी, कि उसी प्रसंग में अगर एक संत राग की व्याखया से रंगेंगे, तो हो सकता है, कि दूसरे संत उसी प्रसंग को वैराग्य की दृष्टि से बाँचते हुए भी दिख जायें। ठीक वैसे जैसे एक कुशल गृहणी, दूध से दही बनाते दिख सकती है, वहीं दूसरी गृहणी उसी दूध में नींबू डालकर, उसे पनीर बनाते भी दृष्टिपात हो सकती है।

'तौ प्रभु हरहु मोर अग्याना। कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना।।'

यहाँ माता पार्वती जी ने एक बात पर और बल दिया। वह यह, कि जो नाना प्रकार की श्रीराम कथा आप मुझे सुनाने जा रहे हैं, उसके सुनने से मेरे मन में उलझन नहीं होगी, अपितु मेरे अज्ञान का ही नाश होगा। किंतु जब माता पार्वती जी विनती करती हैं, तो एक शब्द ऐसा कहती हैं, मानों उनके मन में, अभी पूर्व जन्म वाली गाँठ अभी भी उन्हें खटक रही हो। वे आदर भाव से पूछती हैं-

'जौं नृप तनय त ब्रह्म किमि नारि बिरहँ मति मोरि।
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि।।'

अर्थात यदि श्रीराम राजपुत्र हैं, तो वे ब्रह्म कैसे हैं? यदि वे ब्रह्म हैं, तो एक साधारण मानव की भाँति, पत्नि बिरह में उनकी मति बावली कैसे हो गई? ऐसे में मैं उनकी महान चरित्र गाथा को सुनकर, व दूसरी ओर, उनके ऐसे मानवीय चरित्र को देखकर, मेरी मति मानो चकरा गई है।

भगवान शंकर ने जब माता पार्वती जी के श्रीमुख से यह शब्द सुने, तो वे किसी भी प्रकार से खिन्न अथवा निराश नहीं हुए। उनके मन में एक क्षण के लिए भी नहीं उठा, कि देवी पार्वती का मन तो पूर्व जन्म की भाँति, फिर से शंकापूर्ण है। क्योंकि पूर्व जन्म, सती रुप में, उनके मन में, यही तो समस्या उत्पन्न हुई थी, कि श्रीराम जी ब्रह्म हैं, अथवा एक साधारण जीव? तब इसी संशय के कारण ही, सती के प्राणों की बलि हुई थी। आज वही प्रश्न फिर से पफ़न उठाये है। क्या इस जन्म में भी माता पार्वती जी को ऐसे प्रश्न ले डूबेंगे, अथवा समाधान होगा?

निश्चित ही भगवान शंकर को देवी पार्वती की ऐसी जिज्ञासा पर किसी प्रकार का क्रोध नहीं आया। कारण कि वे जानते हैं, कि प्रश्न भले ही वही हैं, जो पिछले जन्म में सती के मन में उठे थे। किंतु इस बार इन प्रश्नों के पीछे छिपी भावना संशय की नहीं, अपितु जिज्ञासा व लोक कल्याण की है। भोलेनाथ कहते भी हैं, कि हे पार्वती! तुमने जो श्री रघुनाथ जी की कथा का प्रसंग पूछा है, वह कथा समस्त लोकों के लिए जगत को पवित्र करने वाली गंगाजी के समान है। तुमने जगत के कल्याण के लिए ही प्रश्न पूछे हैं। तुम श्रीरघुनाथजी के चरणों में प्रेम रखने वाली हो।

'पूँछेहू रघुपति कथा प्रसंगा।
सकल लोक जग पावनि गंगा।।
तुम्ह रघुबीर चरन अनुरागी।
कीन्हिहु प्रस्न जगत हित लागी।।'

साथ में यह भी कह दिया-

'राम कृपा तें पारबति सपनेहुँ तव मन माहिं।
सोक मोह संदेह भ्रम मम बिचार कछु नाहिं।।'

अर्थात हे पार्वती! मेरे विचार में तो श्रीराम जी की कृपा से तुम्हारे मन में स्वपन में भी शोक, मोह, संदेह और भ्रम इत्यादि कुछ भी नहीं है। फिर भी तुमने इसीलिए फिर वही शंका की है, कि इस प्रसंग को कहने-सुनने से सबका कल्याण होगा।

Pearl मोती रत्न जन्मपत्री ग्रह अनुसार लाभ हानि

सादगी, पवित्रता और कोमलता की निशानी माने जाने वाला मोती एक चमत्कारी ज्योतिषीय रत्न माना जाता है। इसे मुक्ता, शीशा रत्न और पर्ल (Pearl) के नाम से भी जाना जाता है। मोती सिर्फ एक रंग का ही नहीं होता बल्कि यह कई अन्य रंगों जैसे गुलाबी, लाल, हल्के पीले रंग का भी पाया जाता है। मोती, समुद्र के भीतर स्थित घोंघे नामक कीट में पाए जाते

मोती के तथ्य (Facts of Moti or Pearl in Hindi)

* मोती के बारे में बताया जाता है कि यह रत्न, बाकी रत्नों से कम समय तक ही चलता है क्योंकि यह रत्न रूखेपन, नमी तथा एसिड से अधिक प्रभावित हो जाता है।

* प्राचीनकाल में मोती (Pearl or Moti) को सुंदरता निखारने के लिए इस्तेमाल में लाया जाता था तथा इसे शुद्धता का प्रतीक माना जाता था।

मोती के लिए राशि (Moti for Cancer Rashi)कर्क राशि के जातकों

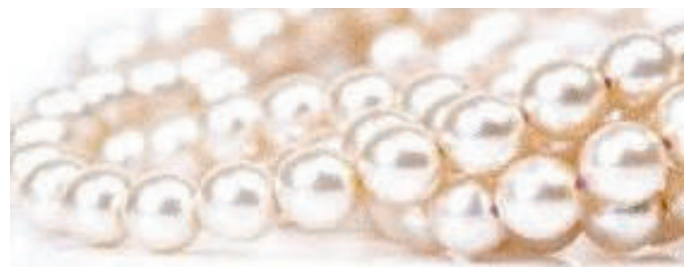

के लिए मोती धारण करना अत्याधिक लाभकारी माना जाता है। चन्द्रमा से जनित बीमारियों और पीड़ा की शांति के लिए मोती धारण करना लाभदायक माना जाता है।

मोती के फायदे (Benefits of Pearl or Moti in Hindi)

* मोती धारण करने से आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। जो जातक मानसिक तनाव से जूझ रहें हों उन्हें मोती को धारण कर लेना चाहिए।

* जिन लोगों को अपनी राशि ना पता हो या कुंडली ना हो, वह भी मोती धारण कर सकते हैं।

स्वास्थ्य में मोती का लाभ (Benefits of Pearl in Health)

* मानसिक शांति, अनिद्रा आदि की पीड़ा में मोती बेहद लाभदायक माना जाता है।

* नेत्र रोग तथा गर्भाशय जैसे समस्या से बचने के लिए मोती धारण किया जाता है।

* मोती, हृदय संबंधित रोगों के लिए भी अच्छा माना जाता है।

संघटन

खनिज संघटन के दृष्टिकोण से मोती अरैगोनाइट नामक खनिज का बना होता है। इस खनिज के रवे विषम अक्षीय क्रिस्टल होते हैं। अरैगोनाइट वस्तुतः कैल्शियम कार्बोनेट है। मोती के रासायनिक विश्लेषण से पता चला है कि इसमें 90-92 प्रतिशत कैल्शियन कार्बोनेट, 4-6 प्रतिशत कार्बनिक पदार्थ तथा 2-4 प्रतिशत पानी होता है। मोती अम्ल में घुलनशील होते हैं। तनु खनिज अम्लों के संपर्क में आने पर मोती खदबदाहट के साथ प्रतिक्रिया कर कार्बन डाईआक्साइड मुक्त करता है। यह एक कोमल रत्न है। किसी भी धातु या कठोर वस्तु से इस पर खरोंच पैदा हो जाती है। इसका विशिष्ट घनत्व 2.40 से 2.78 तक पाया गया है। उत्पत्ति के दृष्टिकोण से मोतियों की तीन श्रेणियां होती हैः 1. प्राकृतिक मोती, 2. कृत्रिम या संवर्धित मोती, तथा 3. नकली (आर्टिफिशल) मोती

आधार से अकाउंट खाली होने से बचाव, जानें कैसे करें आधार लॉक

आधार कार्ड में आपके बायोमेट्रिक डेटा, नाम, पता और मोबाइल नंबर जैसी संवेदनशील जानकारियां होती हैं। अगर कोई धोखेबाज इसे गलत तरीके से उपयोग करे, तो वह फर्जीवाड़ा कर सकता है, बैंक से पैसे निकाल सकता है या आपके नाम पर कर्ज तक ले सकता है।

आज के डिजिटल युग में आधार कार्ड एक जरूरी पहचान दस्तावेज़ बन गया है। बैंक से लेकर मोबाइल सिम और सरकारी योजनाओं तक, लगभग हर जगह इसकी जरूरत होती है। लेकिन जितनी इसकी उपयोगिता है, उतना ही बड़ा खतरा भी है। अगर आपके आधार कार्ड की जानकारी गलत हाथों में चली गई, तो आपका बैंक अकाउंट तक खाली हो सकता है। इसलिए अपने आधार को लॉक करना अब समझदारी नहीं, बल्कि ज़रूरी बन गया है। आइए जानते हैं इसे कैसे करें।

क्यों जरूरी है आधार कार्ड को लॉक करना?

आधार कार्ड में आपके बायोमेट्रिक डेटा, नाम, पता और मोबाइल नंबर जैसी संवेदनशील जानकारियां होती हैं। अगर कोई धोखेबाज इसे गलत तरीके से उपयोग करे, तो वह फर्जीवाड़ा कर सकता है, बैंक से पैसे निकाल सकता है या आपके नाम पर कर्ज तक ले सकता है। UIDAI ने इसी खतरे को ध्यान में रखते हुए 'Aadhaar Lock/Unlock' की सुविधा शुरू की है जिससे आप जरूरत न होने पर अपना आधार लॉक कर सकते हैं और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं।

आधार लॉक करने की प्रक्रिया

1. UIDAI वेबसाइट पर जाएं

सबसे पहले UIDAI की आधिकारिक वेबसाइट https://myaadhaar.uidai.gov.in पर जाएं। यहां पर आपको कई विकल्प मिलेंगे जिनमें Aadhaar Services नाम का सेक्शन होगा।

2. लॉगिन करें

अब 'Login' पर क्लिक करें और अपने आधार नंबर और उससे लिंक मोबाइल नंबर के जरिए OTP की मदद से लॉगिन करें। OTP आपके मोबाइल नंबर पर आएगा जिसे दर्ज करके आप वेबसाइट में प्रवेश कर सकते हैं।

3. Aadhaar Lock/Unlock का विकल्प चुनें

लॉगिन करने के बाद 'Aadhaar Services' में जाकर 'Aadhaar Lock/Unlock' पर क्लिक करें। यहां आपको दो विकल्प मिलेंगे – Lock UID और Unlock UID।

4. Lock UID पर क्लिक करें

अब 'Lock UID' पर क्लिक करें। इसके बाद एक और OTP आपके रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर आएगा। OTP दर्ज करने के बाद आपका आधार नंबर लॉक हो जाएगा। इसका मतलब है कि कोई भी व्यक्ति आपके आधार नंबर का उपयोग कर आपके बैंक या अन्य सेवाओं तक नहीं पहुंच पाएगा।

आधार अनलॉक करने की जरूरत कब होती है?

अगर कभी आपको आधार नंबर का उपयोग करना हो, जैसे कि KYC या किसी सरकारी स्कीम के लिए, तो आप कुछ देर के लिए उसे अनलॉक भी कर सकते हैं। इसके लिए 'Unlock UID' पर क्लिक करें, OTP डालें और अपनी सुविधा के अनुसार तय समय के लिए आधार को अनलॉक करें।

मोबाइल ऐप से भी कर सकते हैं लॉक/अनलॉक

UIDAI का mAadhaar ऐप भी इसी काम के लिए बेहद उपयोगी है। आप इसे Google Play Store या Apple App Store से डाउनलोड करके आधार को लॉक/अनलॉक कर सकते हैं। प्रक्रिया लगभग वेबसाइट जैसी ही है – लॉगिन करें, OTP डालें और Lock/Unlock का विकल्प चुनें।

ध्यान देने योग्य बातें

- यह सुविधा केवल उन्हीं लोगों के लिए उपलब्ध है जिनका मोबाइल नंबर आधार से लिंक है।

- आधार लॉक करने के बाद बायोमेट्रिक या OTP आधारित सेवाओं का उपयोग नहीं किया जा सकेगा जब तक कि आप इसे अनलॉक न करें।

- यह पूरी **प्रक्रिया** मुफ्त है और 24x7 उपलब्ध है।

आधार कार्ड की सुरक्षा आपकी जिम्मेदारी है। अगर आप चाहते हैं कि आपकी पहचान और बैंकिंग से जुड़ी जानकारियां सुरक्षित रहें, तो आधार को लॉक करना एक जरूरी कदम है। UIDAI ने यह सुविधा देकर नागरिकों को सशक्त किया है कि वे अपनी डिजिटल पहचान को खुद नियंत्रित कर सकें। आधार को समय-समय पर लॉक/अनलॉक करते रहना एक समझदार डिजिटल नागरिक की पहचान है।

समाज में, उस लड़की के लिए, जिसको पति मिल जाता है उसको 'सुहागिन' कहा जाता है और जिसका पति मर जाता है उसको 'अभागिन' कहा जाता है

यद्यपि पति का असली अर्थ 'मालिक' होता है यहां किसी भी पुरुष की किसी लड़की के साथ शादी हो जाती है तो वह स्वयं को 'पति/मालिक' मान लेता है और असली पति को तो खोज ही नहीं पाते हैं। जबकि कबीर महाराज जी कहतें हैं कि हमें सगुन को भी छोड़ना है निर्गुन को भी छोड़ना है, उसके बाद ही जीवात्मा के दर्शन/साक्षात्कार होंगें। कबीर जी कहते हैं कि जिसे परमात्मा रुप में पति मिल गया, वह सुहागिन। लेकिन हम तो स्वयं/खुद ही किसी के पति/मालिक बने पड़े हैं तो फिर हम उस मालिक/पति की खोज कैसे करेंगे? जब तक हमारा आत्मा रुपी जीवात्मा से साक्षात्कार नहीं होता तब तक हम पति/मालिक नहीं हो सकते। जीवन एक अभागिन विधवा स्त्री जैसा ही होकर रह गया है, यदि परमात्म/पति संग साक्षात्कार न हो जाए। ध्यान रहे कि जैसे विधवा स्त्री के जीवन में कोई रंग नहीं होता है कोई रस नहीं होता है, बिल्कुल ऐसा ही हमारा जीवन बन गया है। हमारे जीवन की सबसे विकट समस्या है कि हम ध्यान नहीं साधते हैं। वास्तव में जीवन में यदि चेतन/जागृत जैसा कुछ होता है तो उसका माध्यम है ध्यान।

सांसद प्रवीन खंडेलवाल ने अधिकारियों के साथ चावड़ी बाजार, सीताराम बाजार एवं माता सुंदरी गुरुद्वारा क्षेत्र का निरीक्षण दौरा किया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : चांदनी चौक से सांसद सांसद प्रवीन खंडेलवाल ने क्षेत्र के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ चावड़ी बाजार, सीताराम बाजार एवं माता सुंदरी गुरुद्वारा क्षेत्र का निरीक्षण दौरा किया। उनके साथ दिल्ली नगर निगम शहरी क्षेत्र उपायुक्त एवं दिल्ली पुलिस के मध्य दिल्ली उपायुक्त के साथ ही नगर निगम, पुलिस, दिल्ली जल बोर्ड, लोक निर्माण विभाग, बी.एस.ई.एस. एवं दिल्ली मैट्रो के अधिकारियों के साथ चांदनी चौक जिला भाजपा अध्यक्ष अरविंद गर्ग, दिल्ली भाजपा के मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर, कार्यालय मंत्री अमित गुप्ता, भाजपा नेता दीप्ति इंदौरा आदि भी थे।

सांसद प्रवीन खंडेलवाल ने निगम अधिकारियों को चावड़ी बाजार से कुछ स्थाई अतिक्रमण हटाने के साथ ही जलबोर्ड एवं लोकनिर्माण विभाग अधिकारियों को सड़कों पर धसते सीवर एवं गड्ढे ठीक करने और पुलिस को अवैध पार्किंग एवं रिक्शा कंट्रोल करने का निर्देश दिया।

हौजकाज़ी चौक से अवैध स्कूटर पार्किंग हटाने के निर्देश भी पुलिस को दिया और सीताराम बाजार की सड़के ठीक कर पटरी दुकानदार जो स्थानीय निवासी भी हैं उनको व्यवस्थित करके यहीं बैठाने को कहा।

सांसद खंडेलवाल ने नगर निगम की शहरी क्षेत्र उपायुक्त से माता सुंदरी रोड़ पर खासकर दीनदयाल उपाध्याय पार्क के पीछे से, लोकनायक अस्पताल के गेट के पास से और गुरुद्वारा साहब के आसपास के कबाड़ियों के अवैध कब्जों को हटवाने की योजना बनाने को कहा।

ऑटो कंपनियों से सांठगांठ कर 61 लाख मीडिल क्लास को नई गाड़ियां खरीदने को मजबूर कर रही बीजेपी सरकार- मनीष सिसोदिया

मुख्य संवाददाता

दिल्ली की सड़कों से पुरानी गाड़ियों को हटाने के बीजेपी सरकार के तुगलकी फरमान पर आम आदमी पार्टी ने तीखा हमला बोला। ''आप'' के वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया ने कहा कि यह तुगलकी फरमान बीजेपी और ऑटो कंपनियों के बीच सांठगांठ का परिणाम है। बीजेपी ऑटो कंपनियों को फायदा पहुंचाने के लिए दिल्ली के 61 लाख मीडिल क्लास को नई गाड़ियां खरीदने के लिए मजबूर कर रही है। जबकि इनमें से कई गाड़ियां बहुत कम चली हैं और प्रदूषण भी नहीं कर रहीं हैं, लेकिन बीजेपी सरकार उनको खराब बताकर स्क्रैप करने को कह रही है। उन्होंने कहा कि फुलेरा की पंचायत वाली सरकार के इस फैसले से सिर्फ वाहन निर्माता कंपनियों, स्क्रैप डीलर, हाई सिक्युरिटी नंबर प्लेट बनाने वाली कंपनियों को फायदा होगा। ''आप'' की मांग है कि सरकार पुरानी गाड़ियों को पेट्रोल पंप पर तेल नहीं देने के जनविरोधी आदेश तुरंत वापस ले।

गुरुवार को पार्टी मुख्यालय पर प्रेसवार्ता कर मनीष सिसोदिया ने कहा कि पंचायत वेब सीरीज पंचायत का जिक्र करते हुए कहा कि इस सीरीज में साम, दाम, दंड, भेद और झूठ बोलकर, साजिशें करके, लोगों को बदनाम करके फुलेरा की नई पंचायत बनती है। दिल्ली सरकार भी फुलेरा की नई पंचायत की तरह व्यवहार कर रही है। साम, दाम, दंड, भेद करके, एजेंसीज और पुलिस का दुरुपयोग करके इन्होंने फुलेरा की नई पंचायत बना ली। लेकिन इनके साथ समस्या यह है कि इनको सरकार नहीं चलानी आती है। इसलिए ये कुछ भी आदेश दे रहे हैं और सरकारों का फायदा उठाने वाली ताकतें सरकारें चला रही हैं।

मनीष सिसोदिया ने कहा कि यह वाहन स्वामी आज खून के आंसू रो रहे हैं। क्योंकि उनकी गाड़ी ठीक है, गाड़ी को मेंटेन करके रखी हुई है। बहुत सारी गाड़ियां 20 हजार किलोमीटर भी नहीं चली है। लोगों ने इन गाडियों के प्रदूषण कंट्रोल के मानदंडों को मेंटेन करके रखा हुआ है। लेकिन फुलेरा की नई पंचायत का आदेश है कि अब इन गाड़ियों को पेट्रोल-डीजल नहीं मिलेगा। अब ये लोग नई कार या बाइक खरीदें। बीजेपी की सरकार दिल्ली के 61 लाख परिवारों को नई कार या बाइक खरीदने के लिए मजबूर कर रही है। पुरानी बाइक या कार घर में रखने नहीं देंगे।

उन्होंने कहा कि बीजेपी सरकार के इस फैसले से ऑटो मोबाइल कंपनियां सबसे ज्यादा फायदे में हैं। आम आदमी दुखी है, लेकिन ऑटो मोबाइल कंपनियों की चांदी हो रही है। जब सरकार इन पुराने वाहनों को सड़क से हटा देगी तो मजबूर होकर 18 लाख लोगों को नई कार और 41 लाख लोगों को नई बाइक खरीदनी पड़ेगी। फुलेरा की पंचायत के फैसले से दिल्ली का सारा मीडिल क्लास दुखी है। बीजेपी सरकार के इस फैसले की चपेट में सैलरी क्लास आ रहा है। सैलरी क्लास का एक व्यक्ति चार-पांच साल बचत करता है तब जाकर 5-10 की लोन पर एक बाइक या कार लेता है।

मनीष सिसोदिया ने कहा कि सैलरी वाला बाइक या कार आदमी घर से दफ्तर और दफ्तर से घर आता है। परिवार के लिए कार खरीद कर रखता है। उसकी कार 10 किलोमीटर भी नहीं चली होगा और कई गाड़ियों का अभी लोन भी नहीं उतरा होगा। लेकिन बीजेपी इनको नई कार खरीदने के लिए कह रही है। वरिष्ठ नागरिक अपने पास गाड़ियां रखते हैं, जो बहुत कम कभी कभार चलती हैं। अब वरिष्ठ नागरिकों को कार रखनी है तो उसे भी नई कार खरीदनी होगी। बड़ी मुश्किल से बचत करके लोन लेकर कार या बाइक खरीदने वाले सैलरी क्लास को बीजेपी नई कार खरीदने को मजबूर कर रही है।

मनीष सिसोदिया ने कहा कि फुलेरा की पंचायत के इस फरमान से सबसे पहले ऑटो मोबाइल कंपनियों को फायदा हो रहा है। बीजेपी ऑटो मोबाइल कंपनियों को फायदा पहुंचाने के लिए दिल्ली के 61 लाख लोगों को नई गाड़ी खरीदने के लिए बाध्य कर रही है। पुरानी गाड़ियों को ठिकाने के लगाने के लिए स्क्रैप इंडस्ट्री आएगी। दूसरा फायदा स्क्रैप इंडस्ट्री को होगा। तीसरा, हायर सिक्युरिटी नंबर प्लेट वाली कंपनियों को फायदा होगा। चौथा, ओला, उबर कंपनियों को फायदा होगा।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश का बहाना बनाकर पुरानी गाड़ियों को सड़कों से हटा रही बीजेपी सरकार के सवाल पर मनीष सिसोदिया ने कहा कि मुझे यह तर्क सुनकर हंसी आती है। क्योंकि बीजेपी वाले किसी कोर्ट के आदेश को नहीं मानते हैं। कोई कोई आदेश देता है तो ये लोग रातों-रात अध्यादेश लेकर आ जाते हैं। हमने इसी दिल्ली में देखा है। अगर बीजेपी सुप्रीम कोर्ट के संविधान पीठ के आदेश के खिलाफ अरविंद केजरीवाल के अधिकार रोकने के लिए रातों-रात अध्यादेश ला सकती है तो क्या वह दिल्ली के 61 लाख परिवारों को राहत देने के लिए कुछ नहीं कर सकती है। बीजेपी कोर्ट का बहाना लेकर दिल्ली के लोगों को लूट रही है।

देश में नशे के सौदागरों का बढ़ता जाल

भारत में नशे का संकट अब व्यक्तिगत बुराई नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आपदा बन चुका है। ड्रग माफिया, तस्करी, राजनीतिक संरक्षण और सामाजिक चुप्पी—सब मिलकर युवाओं को अंधकार में ढकेल रहे हैं। स्कूलों से लेकर गांवों तक नशे की जड़ें फैल चुकी हैं। यह सिर्फ स्वास्थ्य नहीं, सोच और सभ्यता का संकट है। समाधान केवल कानून से नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना, संवाद, शिक्षा और सामाजिक नेतृत्व से आएगा। अगर आज हम नहीं जगे, तो कल हम एक खोई हुई पीढ़ी का मातम मनाएंगे।

डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत आज एक दोहरी लड़ाई लड़ रहा है—एक तरफ तकनीक और विकास की उड़ान है, और दूसरी ओर समाज के भीतर नशे का अंधकार फैलता जा रहा है। नशा अब सिर्फ एक व्यक्तिगत बुराई नहीं रह गया, बल्कि यह एक संगठित उद्योग, एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र और एक सामाजिक महामारी का रूप ले चुका है। देश के गाँव से लेकर शहर तक, स्कूलों से लेकर कॉलेजों तक, और अमीरों की पार्टियों से लेकर गरीबों की गलियों तक, नशे के सौदागर अपना जाल फैलाए बैठे हैं।

सबसे चिंताजनक बात यह है कि अब यह जाल केवल शराब या गांजे तक सीमित नहीं रहा। सिंथेटिक ड्रग्स, केमिकल नशे, हेरोइन, ब्राउन शुगर, कोकीन जैसे घातक पदार्थ अब भारत के युवाओं के जीवन को खोखला कर रहे हैं। पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, दिल्ली, मणिपुर, गोवा जैसे राज्यों में तो यह जहर सामाजिक ताने-बाने को चीर चुका है। एक ओर सरकार ₹युवाओं को स्किल्ड बनाने₹ की बात करती है, दूसरी ओर लाखों नौजवान नशे की गिरफ्त में अपनी ऊर्जा, जीवन और भविष्य गंवा रहे हैं।

नशे के पीछे एक पूरा तंत्र सक्रिय है—पैसे के लिए इंसानियत का सौदा करने वाले ड्रग माफिया, पुलिस और राजनीति में मिलीभगत, विदेशों से आने वाली तस्करी की खेप, और स्थानीय स्तर पर युवाओं को इस दलदल में धकेलने वाले एजेंट। ये सब मिलकर देश को अंदर से खोखला कर रहे हैं। यह कोई संयोग नहीं कि हर बड़ी ड्रग बरामदगी के पीछे किसी न किसी रसूखदार का नाम सामने आता है, लेकिन मामला वहीं दबा दिया जाता है।

एक वर्ग ऐसा भी है जो नशे को ₹लाइफस्टाइल₹ का हिस्सा मानने लगा है। ऊंचे दर्जे की पार्टियों में ड्रग्स फैशन बन चुकी है। वहां कोई इसे सामाजिक अपराध नहीं मानता, बल्कि 'कूलनेस' का प्रतीक बना दिया गया है। वहीं दूसरी तरफ गरीब युवा—जो बेरोजगारी, हताशा और टूटी हुई उम्मीदों के शिकार हैं—उन्हें नशा एक अस्थायी राहत की तरह दिखता है। दोनों ही हालात समाज को विनाश की ओर ले जा रहे हैं।

स्कूलों और कॉलेजों में नशा जिस तरह से प्रवेश कर चुका है, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक गहरी चेतावनी है। कई रिपोर्टें बताती हैं कि स्कूल के बच्चे तक ड्रग्स की चपेट में हैं। छोटे-छोटे पाउच, चॉकलेट जैसे पैकेट्स, खुशबूदार पाउडर—इनके ज़रिए नशा परोसा जा रहा है। और जब बच्चे इसकी गिरफ्त में आते हैं, तो परिवार, शिक्षक और समाज—सभी असहाय हो जाते हैं।

भारत के संविधान ने हमें एक 'स्वस्थ राष्ट्र' का सपना दिया था, लेकिन जिस देश के युवा ही बीमार और नशे में हों, उस राष्ट्र की कल्पना कैसे साकार होगी? युवा ही देश की रीढ़ होते हैं—यदि वही झुक जाएं, टूट जाएं या खोखले हो जाएं, तो देश भी खड़ा नहीं रह सकता।

नशा केवल शरीर को नहीं, आत्मा को भी मारता है। यह निर्णय क्षमता को खत्म करता है, रिश्तों को तोड़ता है, अपराध को जन्म देता है और समाज में हिंसा और उदासी का माहौल फैलाता है। नशे की लत में पड़ा व्यक्ति अपने परिजनों के लिए बोझ बन जाता है। वह चोरी करता है, झूठ बोलता है, आत्महत्या तक कर लेता है।

यह एक मात्र स्वास्थ्य या क़ानून व्यवस्था की समस्या नहीं है—यह नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संकट है।

माफिया नेटवर्क में पुलिस और राजनीतिक संरक्षण की बात करना कोई षड्यंत्र नहीं है, बल्कि कई बार कोर्ट और जांच एजेंसियों के रिकॉर्ड में यह स्पष्ट रूप से सामने आ चुका है। NDPS एक्ट (Narcotic Drugs and Psychotropic Substances Act) जैसे कानून मौजूद हैं, लेकिन इनका क्रियान्वयन बेहद कमजोर और पक्षपाती है। कई मामलों में पकड़ में आए ड्रग तस्करों को तकनीकी खामियों के चलते छोड़ दिया जाता है। वहीं गरीब या छोटे उपयोगकर्ता जेल में सड़ते हैं।

सरकारें अक्सर ड्रग्स के खिलाफ ₹जागृति अभियान₹, ₹स्लोगन प्रतियोगिता₹, या ₹परेड₹ जैसे प्रतीकात्मक कार्यक्रम करती हैं, लेकिन सवाल है कि क्या इससे कुछ बदलता है? ज़रूरत है एक मजबूत नीति, ईमानदार क्रियान्वयन और सबसे बड़ी बात—राजनीतिक इच्छाशक्ति की।

नशे की तस्करी अक्सर सीमावर्ती इलाकों से होती है—पंजाब-पाकिस्तान सीमा, मणिपुर-म्यांमार सीमा, गुजरात समुद्री तट और मुंबई बंदरगाह जैसे स्थानों से। इन इलाकों में हाई अलर्ट की जरूरत है, लेकिन अक्सर सुरक्षा तंत्र या तो लापरवाह होता है या भ्रष्ट। पिछले कुछ वर्षों में टनों की मात्रा में ड्रग्स पकड़े जाने के बावजूद, ड्रग लॉर्ड्स पर कार्यवाही न के बराबर हुई है। इससे अपराधियों का मनोबल और बढ़ता है।

इसमें मीडिया की भूमिका भी कमज़ोर रही है। कुछ चुनिंदा मामलों में मीडिया टीआरपी के लिए ₹ड्रग्स ड्रामा₹ दिखाता है, लेकिन अधिकतर समय वह इस गंभीर मुद्दे को उपेक्षित छोड़ देता है। और जब बॉलीवुड जैसी चमकती दुनिया में ड्रग्स की चर्चा होती है, तो उसे भी 'गॉसिप' बना दिया जाता है, असल सामाजिक विमर्श नहीं।

इस पूरे संकट का सबसे दुखद पहलू यह है कि इससे जुड़ा व्यक्ति अकेला नहीं मरता—उसके साथ पूरा परिवार, और धीरे-धीरे एक पीढ़ी मुरझा जाती है। मां-बाप अपनी औलाद को नशे में खोते हैं, भाई-बहन रिश्तों की राख में बदल जाते हैं, और गांव-शहर अपने युवाओं को खोकर बस मौन शोक में डूब जाते हैं।

समाधान केवल दवाओं या जेलों में नहीं है। समाधान है—सशक्तिकरण में, संवाद में, शिक्षा में, और सामूहिक सामाजिक प्रयास में।

हर पंचायत, हर स्कूल, हर मोहल्ले में नशे के खिलाफ ईमानदार मुहिम चलानी होगी। युवा मंडलों, महिला समूहों और शिक्षकों को इस मुद्दे पर नेतृत्व देना होगा। समाज को यह समझना होगा कि नशा केवल ₹व्यक्ति की कमजोरी₹ नहीं है, बल्कि यह एक षड्यंत्र है—जिसका शिकार पूरा समाज बन सकता है।

हमें ऐसी शिक्षा व्यवस्था बनानी होगी जो युवाओं को केवल परीक्षा पास करने के लिए नहीं, बल्कि जीवन जीने की समझ दे। जीवन के संघर्षों से लड़ने का हौसला दे, असफलता को स्वीकार करने की शक्ति दे और आत्म-नियंत्रण का संस्कार दे। माता-पिता को भी बच्चों की मानसिक स्थिति, व्यवहार और संगति पर सतर्क रहना होगा। संवाद और विश्वास के बिना कोई समाधान संभव नहीं। डर या दंड से बच्चे छिपते हैं, लेकिन संवाद से खुलते हैं।

और अंततः, जब तक समाज नशे को ₹अपराध₹ की तरह नहीं, बल्कि एक ₹आपदा₹ की तरह देखेगा—जिसमें पीड़ित को मदद और माफिया को सज़ा मिलनी चाहिए—तब तक यह जहर फैलता रहेगा।

नशा एक धीमा ज़हर है—जो शरीर से पहले सोच को मारता है। आज ज़रूरत है उस सोच को जगाने की, जो कहे—नशा छोड़ो, जीवन चुनो।

स्ट्रीक्स प्रोफेशनल ने प्रोफेशनल ब्यूटी इंडिया 2025 में पेश किया ग्लैमरस 'इवोक' कलेक्शन

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली :स्ट्रीक्स प्रोफेशनल, प्रोफेशनल हेयरकेयर और कलर इंडस्ट्री में एक बड़ा ब्रांड, ने प्रोफेशनल ब्यूटी इंडिया (पीबीआई) 2025 – दिल्ली संस्करण में क्रिएटिविटी एवं इनोवेशन का शानदार प्रदर्शन किया। यह आयोजन 30 जून और 1 जुलाई 2025 को दिल्ली के प्रगति मैदान में हुआ, जिसमें देश-भर के प्रमुख हेयरड्रेसर, सैलून प्रोफेशनल्स और उद्योग विशेषज्ञ शामिल हुए। इस दौरान स्ट्रीक्स ने बोटब्राजील लॉन्च किया, जो एक नया फॉर्मल्डिहाइड से रहित बोटोक्स हेयर ट्रीटमेंट है। इसमें हाइड्रा प्रोटीन टेक्नोलॉजी है, जो बालों को सैलून जैसी चमक और स्मूदनेस देता है।

हेयर कैटेगरी में सफल होने के बाद, स्ट्रीक्स प्रोफेशनल स्किन रेंज भी लेकर आया है, जिसमें ब्राइटनिंग और एंटी-एजिंग फेशियल किट शामिल हैं, और इसमें ग्लोबल स्किनकेयर साइंस का संगम रोज हिप और बकुची जैसी शक्तिशाली सामग्रियों से किया गया है। यह रेंज पिगमेंटेशन, फाइन लाइन्स और बेजान त्वचा पर असरदार तरीके से काम करती है। इस लॉन्च के साथ, ब्रांड प्रकृति और अनुसंधान को मिलाकर प्रोफेशनल स्किनकेयर में एक नया मानक स्थापित कर रहा है।

इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण इवोक कलेक्शन का शानदार लॉन्च था, जो स्ट्रीक्स प्रोफेशनल की कलर और स्टाइल की सबसे नई कहानी है। "इवोक" और "वोग" से प्रेरित, यह इवोक कलेक्शन आत्मविश्वास, पुराने जमाने की यादों और आधुनिक शैली का मिश्रण है। सुंदर डिज़ाइनों और क्लासिक आकर्षण के साथ, यह कलेक्शन पुराने ग्लैमर को आज के स्टाइल में फिर से जीवंत करता है।

इस कलेक्शन में आठ ट्रेंड-फॉरवर्ड लुक्स शामिल हैं, जिन्हें स्ट्रीक्स प्रोफेशनल के आधुनिक अर्गन सीक्रेट्स और ह्यूमैजिक रंग तकनीकों का उपयोग करके बड़े ही कलात्मक ढंग से बनाया गया है। ये लुक्स हैं - मोचा मिराज, एस्प्रेसो फेड, ऑबर्न शैग, ऐश मुलेट, वायलेट फ्रिंज, एम्बर क्लासिक, क्रिमसन लेयर्स और सेंद्रे कर्ल्स। स्टॉल नंबर 800, हॉल 4G पर आने वाले आगंतुकों ने लाइव प्रदर्शनों, बूथ की शानदार गतिविधियों और 30 जून को एक विशेष स्टेज शो के माध्यम से इन स्टाइल्स का अनुभव किया, जहां मॉडल्स ने ईवोक लुक्स को शानदार ढंग से प्रदर्शित किया।

रोशेल छाबड़ा, हेड, स्ट्रीक्स प्रोफेशनल, ने कहा, "पीबीआई दिल्ली 2025 में मिले शानदार रिस्पॉन्स से हम बहुत खुश हैं। ईवोक कलेक्शन और बोटब्राजील रेंज के लॉन्च के साथ, हम सिर्फ एक हेयर ट्रेंड नहीं, बल्कि एक नया नजरिया पेश कर रहे हैं। यह ऐसा नजरिया है जहां पुराने स्टाइल और आज की रचनात्मकता मिलते हैं, और हर लुक आत्मविश्वास व व्यक्तित्व की कहानी कहता है। ईवोक कलेक्शन को बोल्ड, आत्मविश्वासी और पूरी तरह व्यक्तिगत बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। स्ट्रीक्स प्रोफेशनल में, हम स्टाइलिस्ट समुदाय को नए उपकरणों, वैश्विक प्रेरणाओं और बहुमुखी तकनीकों के साथ सशक्त करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो क्लासिक सौंदर्य को आधुनिक अंदाज़ में पेश करते हैं। पीबीआई दिल्ली जैसे मंच हमें जुड़ने, सहयोग करने और हेयरड्रेसिंग की कला को शानदार तरीके से सेलिब्रेट करने का मौका देते हैं।"

प्रियंका पुरी, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट-मार्केटिंग, हाइजीनिक रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (एचआरआईपीएल), ने पीबीआई दिल्ली 2025 में स्ट्रीक्स प्रोफेशनल की भागीदारी के बारे में कहा, "स्ट्रीक्स प्रोफेशनल में, हम नए विचारों को सौंदर्य की बदलती इच्छाओं और पेशेवर जरूरतों से प्रेरणा लेकर विकसित करते हैं। ईवोक कलेक्शन सिर्फ एक फैशन शो नहीं है; यह आज के सैलूनिस्टों और हेयरस्टाइलिस्टों के आत्मविश्वास और व्यक्तित्व को दर्शाता है। हमने पीबीआई दिल्ली 2025 में इस कलेक्शन को लॉन्च करने का लक्ष्य रखा ताकि स्टाइलिस्ट समुदाय से सीधे जुड़ा जा सके और भारतीय हेयर फैशन को और बेहतर बनाने की हमारी प्रतिबद्धता को दिखाया जा सके। हमारी बोटब्राजील पोस्ट-केयर रेंज के लॉन्च के साथ, हमें गर्व है कि हम देश भर के पेशेवरों को रचनात्मक प्रेरणा और उच्च गुणवत्ता वाले सैलून-ग्रेड देखभाल उत्पाद प्रदान कर रहे हैं।"

विपुल चुडास्मा, स्ट्रीक्स प्रोफेशनल के क्रिएटिव डायरेक्टर, ने कहा, "ईवोक कलेक्शन का मकसद पुराने और नए स्टाइल को मिलाना है, ताकि रेट्रो ग्लैमर को आधुनिक, पहनने योग्य और आकर्षक तरीके से पेश किया जाए। हर लुक को स्ट्रीक्स की खास रंग तकनीकों से बनाया गया है, जो इमोशन, मूवमेंट और पर्सनैलिटी को दर्शाता है। पीबीआई दिल्ली में इसे प्रदर्शित करना हमारे लिए कला का जश्न मनाने और उस बेहतरीन सैलून समुदाय से जुड़ने का मौका था, जो हमें हमेशा नई रचनात्मक ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए प्रेरित करता है।"

लोगों से खचाखच भरे सेशंस, जीवंत प्रदर्शनों और व्यावहारिक जुड़ाव के साथ, पीबीआई 2025 – दिल्ली संस्करण में स्ट्रीक्स प्रोफेशनल की उपस्थिति ने भारतीय हेयर आर्टिस्ट्री के भविष्य को आकार देने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल किया।

एम्स के ट्रॉमा सेंटर में लगी आग, मचा हड़कंप

AIIMS के ट्रॉमा सेंटर में गुरुवार की दोपहर को भीषण आग लगने से इलाके में हड़कंप मच गया। आग ट्रॉमा सेंटर में लगे 33,000 वोल्ट के बिजली के ट्रांसफार्मर में लगी थी। तत्काल आग की जानकारी दमकल विभाग को दी गई दमकल विभाग को दोपहर कम से कम 3:35 बजे मिली सूचना मिली, जिसके बाद उसी समय दमकल विभाग की 8 गाड़ियां वहां पर गईं। दमकलकर्मियों की तत्परता तथा सूझबूझ से एक बड़ा हादसा टला। आग जिस ट्रांसफार्मर में लगी थी, उसके पास से ही दो और 33,000 वोल्ट के ट्रांसफार्मर थे। यदि आग उन तक पहुंच जाती, तो हालत और भयावह हो जाती। और तो और सिर्फ 5 मीटर की दूरी पर डॉक्टरों का हॉस्टल भी स्थित है। वक्त रहते ही आग पर दमकल कर्मियों ने काबू पा लिया और पूरे इलाके को सुरक्षित कर लिया ।

प्राचीन मां पथवारी देवी मन्दिर में सहस्त्र चंडी महायज्ञ की धूम

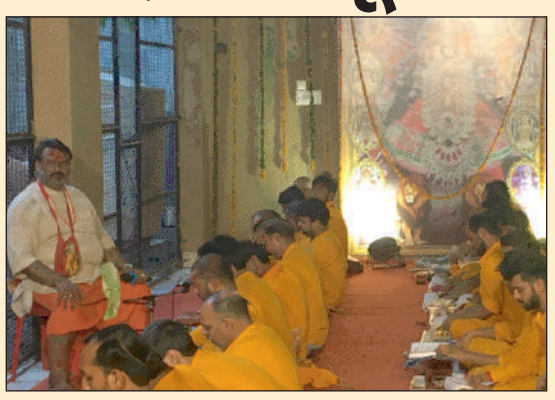

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

मथुरा। मसानी तिराहा स्थित प्राचीन मां पथवारी देवी मन्दिर प्रांगण में मां रंगेश्वरी महाकाली देवी भक्त मण्डल के द्वारा गुप्त नवरात्रि के उपलक्ष्य में सहस्त्र चंडी महायज्ञ अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ चल रहा है ।जिसके अंतर्गत सैकड़ों वेदज्ञ विप्रों के द्वारा दैनिक दुर्गा सप्तशती पाठ, हवनएवं अर्चन आदि के कार्यक्रम किए जा रहे हैं।

मां रंगेश्वरी महाकाली के परम्भक्त अशोक गुप्ता (माई दास) ने कहा कि भारतीय वैदिक सनातन धर्म में मां भगवती की उपासना का अत्यधिक महत्व है ।उनका सुमिरन, स्मरण व ध्यान तीनों ही मंगलकारी और कल्याणकारी होता है।

यज्ञाचार्य पंडित रामनिहोर त्रिपाठी ने कहा कि नवरात्रों में कन्या पूजन का विशेष महत्व है। इन दिनों कन्या व लांगुरों का पूजन-अर्चन करके प्रसाद ग्रहण कराने से मां दुर्गा अति शीघ्रही प्रसन्न होकर भक्तों को मनवांछित फल प्रदान करती हैं। राजेश चौधरी ने बताया कि सहस्त्र चंडी महायज्ञ के अन्तर्गत 04 जुलाई को शतचंडी महायज्ञ की पूर्णाहुति होगी। इसके अलावा रात्रि को देवी जागरण आयोजित होगा।05 जुलाई को सैकड़ों कन्या-लांगुरोंओं का पूजन-अर्चन करके उन्हें भोजन प्रसाद ग्रहण कराया जाएगा।

इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, चित्रकार कोविद द्वारिका आनंद, संत रसिया बाबा महाराज, अमरनाथ गोयल, कन्हैया लाल अग्रवाल (स्वीटी सुपारी वाले), आनन्द अग्रवाल, डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

धान पर 84100 तो गेहूं पर 86500 तक मिलेगा बीमा, आखिरी तारीख से पहले किसान फटाफट ऐसे करें आवेदन

ग्रेटर नोएडा। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत खरीफ मौसम में जिले के लिए बीमा कराने की तिथि 31 जुलाई है। फसल का बीमा अवश्य कराकर किसान फसल में होने वाली क्षति के जोखिम से बच सकते हैं। योजना को संचालित करने के लिए एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड को नामित किया गया है।

खरीफ की फसल में धान, बाजरा व रबी की फसल में गेहूं की फसल को इस योजना के अंतर्गत अधिसूचित किया गया है। धान की फसल की बीमा धनराशि 84100 रूपये है। किसान अंश के रूप में दो प्रतिशत धनराशि 1682 रूपये प्रति हेक्टेयर प्रीमियम बैंक द्वारा लिया जाएगा।

बाजरा की बीमा धनराशि 33600 रूपये है व किसान अंश के रूप में दो प्रतिशत धनराशि 672 रूपये प्रति हेक्टेयर प्रीमियम बैंक द्वारा लिया जाएगा व गेहूं की फसल की बीमा धनराशि 86500 रूपये व किसान अंश के रूप में 1.5 प्रतिशत धनराशि 1297.50 रुपये प्रति हेक्टेयर प्रीमियम बैंक द्वारा लिया जाएगा।

फसल कटाई के बाद 14 दिनों तक खेत में सूखने हेतु रखी गयी फसल को क्षति की स्थिति में किसान को 72 घंटे के अंदर भारत सरकार के फसल बीमा टोल फ्री नंबर 14447 व क्रॉप इंश्योरेंस ऐप के माध्यम से आपदा घटित होने की सूचना देना अनिवार्य है।

विश्व प्रसिद्ध राजकीय मुड़िया मेला 2025 को लेकर सिविल डिफेंस मथुरा ने की बैठक

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा: नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा ने कान्हा की नगरी मथुरा में 4 जुलाई 2025 से 11 जुलाई 2025 तक होने वाले विश्व प्रसिद्ध राजकीय मेला गोवर्धन मुड़िया मेला 2025 में गोवर्धन की परिक्रमा में जनपद एवं बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं की सेवा के लिए सुरक्षा, यातायात व्यवस्था एवं भीड़ नियंत्रण करने के लिये सिविल डिफेंस की ड्यूटी जिला अधिकारी के आदेश अनुसार लगाई गई। कलेक्ट्रेट स्थित सिविल डिफेंस मथुरा कार्यालय पर बैठक का आयोजन किया गया । जिसमें अपर जिला अधिकारी नमामि गंगे प्रभारी सिविल डिफेंस राजेश यादव एवं नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा के उप नियंत्रक मुनेश कुमार गुप्ता की अध्यक्षता में सिविल डिफेंस के 120 वार्डन एवं स्वयंसेवक की ड्यूटी जनपद के विभिन्न चौराहे पर शान्ति, सुरक्षा, यातायात व्यवस्था एवं भीड़ नियंत्रण में लगाई गई । चीफ वार्डन राजीव अग्रवाल डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मित्तल सीनियर स्टाफ ऑफीसर दीपक चतुर्वेदी बैंकर के नेतृत्व में राष्ट्रीय आपदा मोचन बल नागपुर एवं राज्य आपदा मोचन बल लखनऊ से प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके सिविल डिफेंस मथुरा के पोस्ट वार्डन एवं आपदा मित्र अशोक यादव की क्विक रिस्पांस टीम को गोवर्धन दानघाटी मन्दिर एवं गोवर्धन चौराहा , मण्डी चौराहे पर आपदा किट एवं मेडिकल कीट के साथ बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं की सेवा में ड्यूटी लगाई गई बैठक में श्री गुप्ता के द्वारा बताया गया कि सिविल डिफेंस हमेशा लोगों की सेवा के लिए हमेशा तैयार है जिसके लिए समय समय पर सभी वार्डन एवं स्वयंसेवक की ट्रेनिंग चलाई जाती हैं । इस बार विश्व प्रसिद्ध राजकीय मेला गोवर्धन मुड़िया मेला 2025 को 9 सुपर जोन, 21 जोन व 62 सेक्टर में विभाजित किया गया है जिसमें सुरक्षा हेतु सिविल डिफेंस, पुलिस प्रशासन, पीएसी, गोताखोर, इंटेलीजेंस, दमकल, होमगार्ड, मेडिकल टीम आदि रहेंगे तैनात। कलेक्ट्रेट स्थित कार्यालय नागरिक सुरक्षा मथुरा को मुड़िया मेला 2025 का कंट्रोल रूम बनाया गया। बैठक में डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मित्तल, पोस्ट वार्डन अशोक यादव, रावेंद्र बंसल, गिरीश वार्ष्णेय, देवेन्द्र कुमार, राजेश कुमार शिवहरे , शुभम कुमार, राम सैनी, पवन प्रकाश, आकाश, गोविंद, जवर सिंह, रिंकी, जगदीश बाबू, रोहित कुशवाहा, अभिषेक आदि बैठक में उपस्थित रहे।

विकलांग आश्रम वजीरगंज में आंवला के रवि दुआ जी की पुण्यतिथि पर दिव्यांग बच्चों को भोजन कराया गया

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं जिले में विकलांग आश्रम वजीरगंज में आंवला निवासी रवि दुआ जी की पुण्यतिथि के अवसर पर विकलांग आश्रम वजीरगंज में उनके परिवार वालों ने पुण्यतिथि पर दिव्यांग बच्चों को भोजन कराया। फल व मिठाई बच्चों को वितरित की। वही आश्रम अध्यक्ष उनीश पाल सिंह ने बताया की हमारा यह आश्रम आप सभी के सहयोग से चल रहा है। आश्रम में दूर दराज से लोग आते हैं और बच्चों की मदद करते है। आश्रम में विकलांग बेसहारा बच्चों के चेहरे खिल उठे। विकलांग आश्रम में वैवाहिक वर्षगांठ, जन्मदिन, पुण्यतिथि, सहित ही नहीं लोग आश्रम के लिए भी सहयोग करते है। इस मौके पर आकाश कुमार, सुनीरा सिंह गौर, चंचल यादव, विनोद कुमार भारती सहित समस्त आश्रम वासी मौजूद रहे ।

कानपुर में पार्षद से 10 लाख की रंगदारी मांगने वाला हिस्ट्रीशीटर गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

कानपुर। पुलिस की लगातार प्रभावी कार्रवाई के बाद भी हिस्ट्रीशीटर अपराधी लोगों से रंगदारी मांगने से बाज नहीं आ रहे हैं। 10 लाख की रंगदारी मांगने वाले एक ऐसे ही हिस्ट्रीशीटर को पुलिस ने गिरफ्तार करके जेल भेज दिया।

मामला कर्नलगंज थाना क्षेत्र का है। यहां के वार्ड-110 के पार्षद से हिस्ट्रीशीटर ने 10 लाख की रंगदारी मांगी है। मना करने पर आरोपियों ने जान से मारने की धमकी दी। यही नहीं इसके पहले वह बीते 30 जून को तमंचे के बल पर 25 हजार रुपए पार्षद से ले भी चुका है। कल आरोपियों ने बाकी रकम की मांग की और न देने पर हत्या करने की धमकी दी।

मामले में कर्नलगंज थाने में रिपोर्ट दर्ज करने वाले वार्ड 110 के पार्षद मो. नौशाद ने बताया कि उन्होंने 2023 में निकाय चुनाव में पूर्व पार्षद मुरसलीन उर्फ भोलू की पत्नी को हराया था। जिसके बाद से मुरसलीन उनसे खुन्नस रखता है और उनकी हत्या की फिराख में है। मुरसलीन पूर्व विधायक इरफान सोलंकी के साथ आगजनी मामले में भी आरोपी है।

पुलिस को जानकारी देते हुए पार्षद नौशाद ने बताया कि मुरसलीन अपने साथी टिल्लू उर्फ शमशाद, हिस्ट्रीशीटर अकील खिचड़ी के साथ 10 लाख रुपए की मांग कर रहे हैं।

मना करने पर जान से मारने की धमकी दी गई।

दर्ज कराई गई रिपोर्ट के मुताबिक 30 जून की शाम चार बजे जीआईसी ग्राउंड के पास अकील व टिल्लू, शमशाद मिले और तमंचा दिखाते हुए कहा कि तुमने भोलू भाई का बहुत नुकसान कराया है। जिस पर पीड़ित ने उन्हें 25 हजार रुपए दे दिए। इसके बाद 2 जुलाई को अकील, शमशाद व टिल्लू ने 9.75 लाख रुपए की मांग की और न देने पर हत्या करने की धमकी दी। कर्नलगंज थाना प्रभारी रविंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि दर्ज कराई गई रिपोर्ट के आधार पर हिस्ट्रीशीटर अकील को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

विश्व में न्यायपालिकाओं का पावर-पीएम से लेकर एक आम नागरिक तक को कानून का उल्लंघन करने पर न्यायिक शक्तियों का डर एक महत्वपूर्ण कारक हो सकता है?

थाईलैंड की पीएम व डोनाल्ड ट्रंप, नेतन्याहू, इंदिरा गांधी सहित अनेकों अंतरराष्ट्रीय हस्तियों को न्यायपालिका के फैसलों का सामना करना पड़ा है
न्यायपालिकाओं की न्यायिक प्रक्रिया में खास से आम तक सभी व्यक्तियों को एक समान संहिता से लागू होकर सजा या बरी होना खूबसूरती है- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर सभी जानते हैं कि लोकतंत्र के प्रेस को मिलाकर चार स्तंभ होते हैं। विधायिका कार्यपालिका न्यायपालिका व मीडिया, जो अपने-अपने स्तरपर अपने-अपने कार्यक्षेत्र में पावरफुल होते हैं, परंतु अक्सर हम देखते हैं कि न्यायपालिका के पावरक्षेत्र में पंचायत समिति सदस्य से लेकर पार्षद व विधायक से लेकर संसद तथा मुख्यमंत्री से लेकर प्रधानमंत्री व स्टेट मंत्री से लेकर केंद्रीय मंत्री व पूरी मीडिया के प्लेटफॉर्म्स आते हैं, यांने अगर किसी भी कार्यक्षेत्र में कोई गड़बड़ी कानून का को तोड़ना उलंघन करना, भ्रष्टाचार करना या मानवाधिकार का हनन संविधान का उल्लंघन करते हैं तो न्यायिक क्षेत्र के पावर में आ जाते हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र, यह मानता हूं कि साफ सुथरे ईमानदार व्यक्ति को डरने घबराने की जरूरत नहीं, परंतु भ्रष्टाचार गलत आचरण से तो न्यायिक दायरे में आना ही पड़ेगा। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्यों के मंगलवार 1 जुलाई 2025 को थाईलैंड की पीएम को वहां के न्यायालय की संविधान पीठ ने7/2 के बहुमत से 1 जुलाई 2025 से पीएम पद के कार्य से निलंबित कर दिया है, जब तक संवैधानिक पीठ अपना फैसला नहीं सुनाती। पूरी दुनियाँ के प्रशासकीय व राजनीतिक क्षेत्र में खलबली मच गई है, क्योंकि यह एक बहुत बड़ी बात है। हालांकि विश्व के अनेक बड़े नेता डोनाल्ड ट्रंप, नेतन्याहू, इंदिरा गांधी सहित अनेको नेताओं को इन न्यायिक शक्तियों का सामना करना पड़ा है जिसकी चर्चा हम नीचे पैराग्राफ में करेंगे ।न्यायालय की न्यायिक प्रक्रिया में खास से आम तक सभी व्यक्तियों को एक समान संहिता लागू होकर सजा या बरी होना खूबसूरती है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्धजानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, विश्व में न्यायालय का पावर, पीएम से लेकर एक आम नागरिक तक को कानून का उल्लंघन करने पर न्यायिक शक्तियों का डर एक महत्वपूर्ण कारक हो सकता है।

साथियों बात अगर हम थाईलैंड की पीएम को संविधान पीठ द्वारा 7/2 बहुमत से पद से निलंबित करने की करें तो, संवैधानिक न्यायालय ने पीएम पाइतोंग्तार्न शिनावात्रा को उनके पद से सस्पेंड कर दिया है ।उनपर आरोप है कि उन्होंने कंबोडिया के नेता हुन सेन से फोन पर बातचीत की थी। इस बातचीत में उन्होंने थाई सेना के कमांडर की आलोचना की थी। इसे थाईलैंड में गंभीर मामला माना जाता है, क्योंकि सेना का वहां काफी प्रभाव है ।इस बातचीत के लीक होने के बाद देशभर में गुस्सा फैल गया था। कोर्ट ने 7-2 के अंतर से पीएम को पद से हटाया कोर्ट ने कहा कि उनके खिलाफ शिकायत की जांच की जाएगी। अगर वह दोषी पाई गईं तो उन्हें हमेशा के लिए पद से हटाया जा सकता है ।पीएम ने खिलाफ नैतिकता के उल्लंघन का मामला स्वीकार कर लिया है और अब जांच पूरी होने तक वह पीएम के पद पर काम नहीं कर सकेंगी। जब तक इस मामले पर अंतिम फैसला नहीं होता, तब तक डिप्टी पीएम फुमथम वेचायाचाई सरकार चलाएंगे ।किसी देश के पीएम को पद पर रहते हुए उसे निलंबित करना अपने आप में बहुत बड़ी बात होती है।

साथियों बात अगर हम अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को कोर्ट को शक्तियों की प्रक्रिया का सामना करने की करें तो, अब तक अमेरिकी अदालतों ने ट्रम्प प्रशासन के कम से कम 180 कार्यकारी आदेशों और नीतियों पर स्थाई या अस्थायी तौर पर रोक लगाई है। साथ ही, ट्रम्प ने खुद 11 प्रमुख फैसलों पर यू-टर्न लेते हुए पलटा है ।रिपोर्ट के अनुसार कोर्ट ने जन्मसिद्ध नागरिकता खत्म करने, संघीय कर्मचारियों की सामूहिक बर्खास्तगी और विदेशी सहायता रोकने जैसे आदेशों को अवैध या असंवैधानिक ठहराया है ।वहीं, ट्रम्प ने फेडरल फंडिंग फ्रीज, अंतरराष्ट्रीय छात्र वीजा और टैरिफ नीतियों जैसे फैसलों को कई बार बदला या वापस लिया है ।ट्रम्प के वो आदेश जिन्हें कोर्ट ने बदला ट्रंप ने वॉयस ऑफ अमेरिका को खत्म करने का फैसला लिया था, जिसे कोलोराडो की अदालत ने अवैध ठहराया। पर्यावरण नियमों को कमजोर करने वाले आदेशों को भी कैलिफोर्निया की अदालत ने रोका। वजह- वे क्लीन एयर एक्ट का उल्लंघन करते थे वाशिंगटन की अदालत ने गैर अमेरिकियों के लिए मतदान प्रतिबंध को असंवैधानिक माना। अप्रैल 2025 में एक हफ्ते में 11 मुकदमों में ट्रम्प प्रशासन को हार मिली ।ट्रम्प के ट्रांसजेंडर स्वास्थ्य अधिकारों को सीमित करने वाले आदेश को भी न्यूयॉर्क कोर्ट ने भेदभावपूर्ण ठहराते हुए अवैध ठहराया। इसके अलावा ट्रम्प के विदेशी फंडिंग से जुड़े आदेश को भी अदालत ने गलत माना ।टैरिफ व बर्थ राइट के फैसले खुद पलटने को मजबूर हुए, ट्रम्प ने जिन नीतियों को बार-बार पलटा उनमें सबसे बड़ा मामला टैरिफ से जुड़ा है। साथ ही प्रवासी बच्चों की बर्थ राइट रोकने का फैसला भी आदेश के कुछ दिनों के भीतर ट्रम्प ने रद्द कर दिया ।डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफिशिएंसी के तहत इबोला रोकथाम फंडिंग रद्द हुई, जिसे बाद में फिर बहाल किया गया ।मेक्सिको-कनाडा के साथ व्यापार समझौते को रद्द करने की घोषणा की लेकिन दबाव के बाद इसे स्थगित किया।

साथियों बात अगर हम भारत की तत्कालीन पीएम इंदिरा गांधी को इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले का सामना करने की करें तो, राजनारायण ने इंदिरा गांधी पर सात मुख्य आरोप लगाए थे, जैसे - चुनाव में विमानों और हेलीकॉप्टरों से उड़ान भरने के लिए सशस्त्र बलों की मदद लेना, मतदाताओं में कपड़े और शराब बांटना, चुनाव में गाय और बछड़े जैसे धार्मिक प्रतीक का उपयोग, मतदाताओं को मतदान केन्द्रों तक मुफ्त में पहुंचाना और सीमा से अधिक खर्च करना, लेकिन जस्टिस सिन्हा ने इन सात में पांच आरोपों को खारिज कर दिया, उन्होंने लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 123 (7) के तहत इंदिरा गांधी को दो भ्रष्ट आचरण का दोषी पाया, पहला - इंदिरा ने चुनाव में बेहतर संभावना प्राप्त करने के लिए अपने निर्वाचन क्षेत्र रायबरेली में राज्य के गैजेटेड अधिकारियों जैसे डीएम, एसपी और इंजीनियरों की मदद ली, दूँसरा, उन्होंने अपनी चुनावी संभावनाओं को आगे बढ़ाने के लिए एक गैजेटेड अधिकारी यशपाल कपूर की मदद ली, इलाहाबाद हाई कोर्ट के जज रहे जस्टिस जगमोहन सिन्हा ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी बनाम राजनारायण मामले में 12 जून, 1975 को अपने फैसले में इंदिरा के चुनाव को अयोग्य करार दिया था।

साथियों बात अगर हम इज़राइल के पीएम नेतन्याहू को इंटरनेशनल कोर्ट के फैसले का सामना करने की करें तो, आईसीसी के न्यायाधीशों ने इजरायल के पीएम बेंजामिन नेतन्याहू और पूर्व रक्षा मंत्री योआव गैलेंट के साथ-साथ हमास के सैन्य कमांडर के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किए हैं. एक बयान में कहा गया है कि एक प्री-ट्रायल चैंबर ने अदालत के अधिकार क्षेत्र में इजरायल की चुनौतियों को खारिज कर दिया था और बेंजामिन नेतन्याहू और योआव गैलेंट के लिए वारंट जारी किए थे.

साथियों बात अगर हमबांग्लादेश की पूर्व पीएम को 6 माह की कंटेंप्ट आफ कोर्ट की सजा की करें तो बांग्लादेश की अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण (आईसीटी) ने बुधवार को पूर्व प्रधानमंत्री और अवामी लीग की प्रमुख शेख हसीना को अदालत की अवमानना के मामले में छह महीने की कारावास की सजा सुनाई है। यह सजा सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक ऑडियो क्लिप के आधार पर दी गई, जिसमें कथित तौर पर शेख हसीना को न्यायिक प्रक्रिया में हस्तक्षेप करते और ट्राइब्यूनल को धमकी देते सुना गया था। तीन सदस्यीय ट्राइब्यूनल की अध्यक्षता कर रहे न्यायमूर्ति गोलाम मुर्तुजा माजुमदार ने यह फैसला सुनाया।

सथियों बात अगर हम भारत में पीएम को हटाए जाने के प्रावधानों की करें तो, किसी देश के प्रधानमंत्री को पद पर रहते हुए उसे निलंबित करना अपने आप में बहुत बड़ी बात होती है, ऐसे में यहां हमें यह जानने की जरूरत है कि क्या भारत में भी इस तरह से पीएम को लेकर कोई कार्रवाई संभव है ?मभारत में प्रधानमंत्री का कार्यकाल पांच साल के लिए रहता है। पीएम के कार्यकाल के लिए कोई समय-सीमा निर्धारित नहीं की गई है, इसीलिए एक पदस्थ पीएम अनिश्चित काल तक प्रधानमन्त्री पद पर बना रह सकता है, बशर्ते कि राष्ट्रपति को उस पर विश्वास हो, इसका अर्थ यह है कि एक व्यक्ति केवल तबतक पीएम पद पर बना रह सकता है, जब तक लोकसभा में बहुमत का विश्वास उसके विपक्ष में न हो, लेकिन अन्य परिस्थितियों में पीएम का कार्यकाल पांच साल से पहले भी खत्म हो सकता है, भारत में भी निलंबित किए जा सकते हैं पीएमभारत किसी भी कारणवश लोकसभा, प्रधानमंत्री के विरोध में अविश्वास प्रस्ताव पारित करे और किसी कारणवश, प्रधानमंत्री की संसद की सदस्यता शून्य हो जाती है तो उस वक्त पीएमअपने पद का त्याग कर सकता है और राष्ट्रपति को लिखित में त्यागपत्र सौंप सकता है। लेकिन भारत में प्रधानमंत्री को निलंबित करने जैसा कोई नियम नहीं है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्व में न्यायपालिकाओं का पावर-पीएम से लेकर एक आम नागरिक तक को कानून का उल्लंघन करने पर न्यायिक शक्तियों का डर एक महत्वपूर्ण कारक हो सकता है? थाईलैंड की पीएम व डोनाल्ड ट्रंप, नेतन्याहू, इंदिरा गांधी सहित अनेकों अंतरराष्ट्रीय हस्तियों को न्यायपालिका के फैसलों का सामना करना पड़ा है न्यायपालिकाओं की न्यायिक प्रक्रिया में खास से आम तक सभी व्यक्तियों को एक समान संहिता से लागू होकर सजा या बरी होना खूबसूरती है।

कैसे काम करते हैं ANPR कैमरे ? जो दिल्ली में पुरानी गाड़ियों को पकड़ने में कर रहे हैं मदद

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए ऑटोमेटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन (ANPR) कैमरों का उपयोग किया जा रहा है। टोल बूथों और पेट्रोल पंपों पर लगे ये कैमरे 15 साल से पुरानी पेट्रोल और 10 साल से पुरानी डीजल गाड़ियों की पहचान कर रहे हैं। इन वाहनों को जब्त करके क्रैप करने के लिए चिह्नित किया जा रहा है।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण पर लगाम लगाने और वाहनों की उम्र सीमा को सख्ती से लागू करने के लिए अब एक नई तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है। दिल्ली के टोल बूथों और पेट्रोल पंपों पर ऑटोमेटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन (ANPR) कैमरों को लगाया गया है। यह हाईटेक कैमरे उन पेट्रोल और डीजल गाड़ियों की पहचान कर रहे हैं, जो क्रमशः 15 साल और 10 साल से ज्यादा पुरानी हो चुकी हैं। इन गाड़ियों को जब्त करने के साथ ही क्रैप करने के लिए चिन्हित किया जा रहा है। दिल्ली में ANPR कैमरों को 500 पेट्रोल पंपों पर लगाया गया है। आइए जानते हैं कि ANPR कैमरे क्या है और कैसे काम करते हैं?

ANPR कैमरे क्या है?

यह कैमरे ऑटोमेटिक नंबर प्लेट रेकोनाइजेशन कैमरे होते हैं। इनको गाड़ियों के नंबर प्लेट को ऑटोमेटिक रूप से पढ़ने के लिए डिजाइन किया गया है। ANPR कैमरे खास तरह के होते हैं। इन्हें खासतौर पर हाईवे के टोल बूथ पर लगाया जाता है।

ANPR कैमरे काम कैसे करते हैं?

यह एक हाई-रिजोल्यूशन कैमरा है, जो गाड़ियों की नंबर प्लेट को साफ और सही तरीके से फोटो क्लिक करता है।

कैमरे में लगा OCR (ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन) सॉफ्टवेयर क्लिक की गई फोटो से अल्फान्यूमेरिक टेक्स्ट यानी अक्षर और संख्या निकालता है।

इसके बाद निकाले गए नंबर को एक डेटाबेस से मिलाया जाता है, जिससे वाहन के मालिक और रजिस्ट्रेशन से जुड़ी पूरी जानकारी मिल जाती है।

इस डेटा का इस्तेमाल करते ट्रैफिक की निगरानी, कानूनों को लागू करने, अपराध का पता लगाने और बाकी चीजों के लिए किया जाता है।

ANPR कैमरे कहां-कहां इस्तेमाल होते हैं?

ट्रैफिक कंट्रोल के लिए: इन कैमरों का इस्तेमाल गाड़ियों की स्पीड पर नजर रखने, रेड लाइट क्रॉस करने जैसे ट्रैफिक उल्लंघनों का पता लगाने के लिए किया जाता है।

कानून और व्यवस्था: ANPR कैमरों का इस्तेमाल चोरी हुई गाड़ियों की पहचान, संदिग्धों को ट्रैक करने और नियमों को तोड़ने वाले वाहनों पर जुर्माना लगाने में भी किया जाता है।

व्हीकल पार्किंग मैनेजमेंट: इन कैमरों का इस्तेमाल गाड़ियों की पार्किंग के लिए भी किया जाता है। यह वाहन के एंट्री और एग्जिट को रिकॉर्ड करते हैं और ऑटोमेटिक पार्किंग चार्ज कलेक्शन करने में मदद करते हैं।

टोल कलेक्शन: टोल प्लाजा पर वाहनों की नंबर प्लेट को पढ़कर ऑटोमेटिक टोल कटौती के लिए इनका इस्तेमाल किया जाता है।

सुरक्षा: प्रतिबंधित या संवेदनशील क्षेत्रों में अनधिकृत वाहनों का पता लगाने और समग्र निगरानी को बढ़ाने में ये सहायक होते हैं।

15 अगस्त को पेश हो सकती है महिंद्रा स्कॉर्पियो एन ईवी, सोशल मीडिया पर जारी हुआ पहला टीजर

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Mahindra की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जल्द ही नई Electric SUV के तौर पर Mahindra Scorpio N EV को पेश किया जा सकता है। इससे पहले सोशल मीडिया पर टीजर को जारी किया गया है। टीजर में किस तरह की जानकारी सामने आ रही है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में जिस तरह इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग बढ़ रही है। उसे देखते हुए कई वाहन निर्माताओं की ओर से नए उत्पादों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Mahindra की ओर से भी कई ईवी को ऑफर किया जाता है। अब निर्माता एक और Electric SUV को भारतीय बाजार में पेश करने की तैयारी कर रही है। किस एसयूवी को कब तक पेश किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

पेश होगी नई एसयूवी

महिंद्रा की ओर से जल्द ही नई एसयूवी को पेश करने की तैयारी की जा रही है। जानकारी के मुताबिक इस एसयूवी को Electric SUV सेगमेंट में ऑफर किया जा सकता है। नई एसयूवी को पेश करने से पहले सोशल मीडिया पर नए टीजर को जारी किया गया है।

क्या मिली जानकारी

नई एसयूवी के पहले टीजर को सोशल मीडिया पर महिंद्रा की ओर से जारी किया गया है। इस एसयूवी को Vision S नाम दिया गया है। लेकिन अभी इसके औपचारिक नाम को लेकर कोई जानकारी नहीं दी गई है। उम्मीद की जा रही है कि इसे Mahindra Scorpio N EV के नाम के साथ ऑफर किया जा सकता है।

कब होगी पेश

निर्माता की ओर से सोशल मीडिया पर टीजर के साथ जानकारी दी गई है कि वह Vision S को 15 अगस्त पर पेश करने की तैयारी कर रही है। पेश करने के कुछ समय बाद इसे लॉन्च भी किया जा सकता है।

एक और गाड़ी होगी पेश

निर्माता की ओर से सोशल मीडिया पर इससे पहले Vision T नाम से भी टीजर को 30 जून को जारी किया गया था। जिसके बाद यह उम्मीद की जा रही है थी कि Mahindra Thar EV को 15 अगस्त को पेश किया जाएगा। लेकिन अब दूसरे Vision S नाम से भी टीजर जारी होने के बाद यह उम्मीद की जा रही है कि अब 15 अगस्त को Vision T और Vision S नाम से दो एसयूवी को पेश किया जाएगा। जो Mahindra Thar EV और Mahindra Scorpio EV हो सकती हैं।

होंडा की दो कारों को खरीदना हुआ सस्ता, अमेज और सिटी के किन वेरिएंट्स की कीमतों में हुई कमी

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा की कीमत में कटौती जापानी वाहन निर्माता होंडा मोटर इंडिया की ओर से सेडान से लेकर एसयूवी सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक होंडा की ओर से अपनी दो कारों की कीमत में कमी की गई है। किन कारों की कीमत में कितनी कमी की गई है। अब किस कीमत पर इनको खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में होंडा की ओर से सेडान और एसयूवी सेगमेंट में कारों को ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से इनमें से दो कारों की कीमत में कमी की गई है। किन कारों की कीमत में कितनी कमी की गई है। अब इनको किस कीमत पर ऑफर (Honda car prices) किया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Honda की कारों की कीमत में आई कमी

रिपोर्ट्स के मुताबिक होंडा कार इंडिया की ओर से अपनी दो कारों की कीमत को घटाया गया है। जानकारी के मुताबिक जिन कारों की कीमत में कमी की गई है वह दोनों ही सेडान सेगमेंट में ऑफर की जाती हैं।

किन कारों की कीमत कम हुई

जानकारी के मुताबिक होंडा की ओर से कॉम्पैक्ट सेडान सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Honda Amaze की कीमत को कम किया गया है। इसके अलावा मिड साइज सेडान कार के तौर पर ऑफर की जाने वाली Honda City की हाइब्रिड की कीमत में कमी (Amaze City price drop) की गई है और एक वेरिएंट को बंद कर दिया गया है। निर्माता की ओर से ऑफर की जाने वाली इकलौती मिड साइज एसयूवी Honda Elevate और Honda City की कीमतों में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया गया है।

कितनी कम हुई कीमत

होंडा ने अमेज के सिर्फ एक ही वेरिएंट की कीमत कम की है। यह वेरिएंट ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ ऑफर किया जाता है। जिस वेरिएंट की कीमत कम की गई है वह VX है और इसकी कीमत में 0.09 फीसदी कीमत को कम किया गया है जो 900 रुपये है।

वहीं दूसरी ओर होंडा सिटी के हाइब्रिड का V वेरिएंट बंद कर दिया गया है और अब इसका सिर्फ एक ही वेरिएंट ZX उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस वेरिएंट की कीमत में भी 95 हजार रुपये तक कम किए गए हैं।

कितनी हुई कीमत

होंडा अमेज के जिस वेरिएंट की कीमत में कमी की गई है उसे अब 9.99 लाख रुपये में खरीदा जा सकता है पहले इसकी कीमत 10 लाख रुपये थी। वहीं दूसरी ओर होंडा सिटी हाइब्रिड के इकलौते वेरिएंट की नई कीमत 19.90 लाख रुपये हो गई है जो पहले 20.85 लाख रुपये थी।

किनसे है मुकाबला

Honda की ओर से Amaze को कॉम्पैक्ट सेडान कार सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका मुकाबला Maruti Suzuki Dzire, Hyundai Aura, Tata Tigor से होता है। वहीं मिड साइज सेडान कार सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Honda City को Hyundai Verna, Skoda Slavia, Volkswagen Virtus से चुनौती मिलती है।

शौक बड़ी चीज ! 1 लाख की स्कूटी पर 14 लाख का नंबर, VIP नंबर के लिए शख्स खाली किया खजाना

हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर के संजीव कुमार ने अपने शौक को पूरा करने के लिए एक स्कूटी के लिए 14 लाख रुपये का रजिस्ट्रेशन नंबर खरीदा। उन्होंने HP21C-0001 नंबर पाने के लिए ऑनलाइन नीलामी में भाग लिया और 14 लाख की बोली लगाकर जीत हासिल की। यह नंबर एक वीआईपी नंबर है जिसके लिए अक्सर लोग मोटी रकम खर्च करते हैं।

नई दिल्ली। आपने जरूर यह सुना होगा कि शौक बड़ी चीज है, इसे हिमाचल प्रदेश के एक शख्स ने इस बात को फिर से सच साबित कर दिया है। आपने अक्सर सुना होगा कि लोग अपनी कार के महंगी कार केलिए खास नंबर प्लेट खरीदते हैं, लेकिन हम यहां पर आपको एक स्कूटी के बारे में बता रहे हैं। हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर निवासी संजीव कुमार ने एक ऐसी स्कूटर खरीदा जिसकी कीमत तो शायद 1 लाख रुपये के आसपास होगी, लेकिन उस पर लगाया गया रजिस्ट्रेशन नंबर इतना खास है कि उसे पाने के लिए संजीव ने पूरे 14 लाख रुपये खर्च कर दिए। जी हां आपने सही पढ़ा, एक लाख रुपये की स्कूटर के लिए 14 लाख रुपये का नंबर प्लेट लिया है। इतने में तो एक लग्जरी कार आ जाएगी।

इस नंबर में क्या खास है?

संजीव कुमार मे अपने इस अनोखे शौक को पूरा करने के लिए ट्रांसपोर्ट विभाग द्वारा आयोजित ऑनलाइन नीलामी में हिस्सा लिया। इस नीलामी में उन्होंने HP21C-0001 नंबर हासिल करने के लिए 14 लाख रुपये की बोली लगाई और जीत गए। यह एक वीआईपी नंबर है, जिसे अक्सर लोग अपनी लग्जरी कारों या मोटरसाइकिल के लिए ऊंची कीमत पर खरीदते हैं।

कैसी रही नीलामी की प्रक्रिया?

ट्रांसपोर्ट विभाग की इस ऑनलाइन नीलामी में केवल दो लोगों ने हिस्सा लिया था, जिसमें से दूसरे बोली लगाने वाले सोलन जिले से थे, जिन्होंने 13.5 लाख रुपये की बोली लगाई थी, लेकिन संजीव कुमार ने 14 लाख रुपये की बोली लगाकर यह खास नंबर अपने नाम कर लिया।

नीलामी की रकम किसे मिलेगी?

इस नीलामी से मिली 14 लाख रुपये की पूरी रकम सीधे राज्य सरकार के खजाने में जाएगी। ट्रांसपोर्ट विभाग के अधिकारियों का कहना है कि यह अभी तक हिमाचल प्रदेश में दोपहिया वाहनों के नंबर प्लेट के लिए की गई सबसे बड़ी नीलामी है। इससे पहले किसी भी नंबर के लिए इतनी बड़ी रकम नहीं मिली थी।

क्या वापस हो सकती है दिल्ली में पेट्रोल या डीजल कार पर लगा बैन ?

दिल्ली में पुराने वाहनों पर लगे बैन को लेकर लोगों की चिंता पर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने समाधान का भरोसा दिलाया है। सरकार इस समस्या के लिए हर संभव प्रयास करेगी क्योंकि कई लोग अपने वाहनों से भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं। सुप्रीम कोर्ट और NGT के आदेशों के चलते दिल्ली में 10 साल से पुराने डीजल और 15 साल से पुराने पेट्रोल वाहनों पर प्रतिबंध है।

नई दिल्ली। दिल्ली में पुराने (ओवरएज) वाहनों पर लगे बैन को लेकर लोगों में भारी असमंजस और चिंता है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने भरोसा दिलाया है कि सरकार इस समस्या के समाधान के लिए हरसंभव प्रयास करेगी। हाल ही में मुख्यमंत्री गुप्ता एक कार्यक्रम में शामिल हुई, इस दौरान उन्होंने कहा कि कई लोग अपने वाहनों से भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं, खासकर अगर वाहन उन्हें किसी करीबी जैसे पिता से उपहार में मिला हो। उन्होंने कहा कि अक्सर ऐसे वाहन यादगार के तौर पर ही रखे जाते हैं और ज्यादा चले भी नहीं होते। गुप्ता ने कहा कि दिल्ली के लोगों का ये दर्द समझ में आता है। दिल्ली सरकार इस समस्या के समाधान के लिए हरसंभव प्रयास करेगी। हम जहां जरूरत होगी, वहां लोगों की आवाज़ उठाएंगे।

सुप्रीम कोर्ट और NGT के आदेशों का हवाला

साल 2018 के सुप्रीम कोर्ट के आदेश के तहत दिल्ली में 10 साल से पुराने डीजल वाहनों और 15 साल से पुराने पेट्रोल वाहनों पर प्रतिबंध लगाया गया था। 2014 के राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) के आदेश में सार्वजनिक स्थानों पर 15 साल से पुराने वाहनों की पार्किंग पर भी रोक लगाई गई है। 1 जुलाई से यह नियम लागू हो गया है, जिसके तहत ऐसे वाहनों में पेट्रोल पंपों पर ईंधन भरवाना भी प्रतिबंधित कर दिया गया है। कुछ रिपोर्ट्स के मुताबिक, अधिकारियों ने कई पुराने वाहनों को जब्त भी किया है।

पिछली सरकारों पर निशाना

मुख्यमंत्री गुप्ता ने अपने संबोधन में पूर्ववर्ती सरकारों पर निशाना साधते हुए कहा कि यह समस्या इसलिए है क्योंकि पिछली सरकारों ने वायु प्रदूषण की समस्या को गंभीरता से नहीं लिया। उन्होंने भरोसा दिलाया कि दिल्ली सरकार प्रदूषण कम करने के लिए कई कदम उठा रही है, जिसमें पानी का छिड़काव, स्मॉग गन का इस्तेमाल, मैकेनिकल स्वीपिंग मशीन, इस साल 70 लाख पौधे लगाने की योजना तक शामिल है।

फ्यूल बैन पर चुनौतियां

दिल्ली सरकार ने आयोग को पत्र लिखकर कहा है कि ओवरएज वाहनों पर फ्यूल बैन तकनीकी चुनौतियों और जटिल सिस्टम के कारण व्यवहारिक नहीं है। पर्यावरण मंत्री मंजींदर सिंह सिरसा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि इस फैसले से लोगों में नाराजगी है और सरकार जनता के साथ खड़ी है।

NCR में भी लागू हो सकता है नियम

सरकार का कहना है कि बैन सिर्फ दिल्ली में नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) में लागू किया जाना चाहिए। साथ ही सिरसा ने पूर्ववर्ती AAP सरकार पर पुराने वाहनों के लिए कड़े नियम बनाने का आरोप लगाया। दिल्ली सरकार ने 1 जुलाई से 10 साल या उससे पुराने डीजल और 15 साल या उससे पुराने पेट्रोल वाहनों के लिए ईंधन पर रोक लगा दी है। परिवहन विभाग और ट्रैफिक पुलिस अब पेट्रोल पंपों पर ईंधन भरवाने पहुंचे ऐसे वाहनों को जब्त कर रही है।

वापस हो सकता है बैन

दिल्ली के लोगों को उम्मीद है कि सरकार इस समस्या का कोई व्यावहारिक और न्यायसंगत समाधान जल्द ही निकालेगी ताकि उनकी रोजमर्रा की जिंदगी पर इसका नकारात्मक असर कम हो सके। साथ ही लोगों को दिल्ली सरकार से उम्मीद है कि पुरानी गाड़ियों लगे बैन को पावस लिया जा सकता है।

पंजाब की लड़कियां एसटीईएम क्रांति से क्यों गायब हैं, और क्या बदलने की जरूरत है

विजय गर्ग

पंजाब मध्य प्रदेश, झारखंड (29%), और राजस्थान (20%) में 59% की तुलना में ग्रेड 11-12 में लड़कियों के लिए विज्ञान स्ट्रीम नामांकन में सबसे कम 16% है।

एसटीईएम पेशेवरों की बढ़ती मांग के बावजूद, योग्य व्यक्तियों की महत्वपूर्ण कमी है। जबकि पंजाब में लड़कियां कक्षा 8, 10 और 12 के लिए बोर्ड परीक्षा में लड़कों को पछाड़ रही हैं, एक उच्च पास प्रतिशत के साथ, एक शांत संकट पक रहा है - एक जो आने वाले दशकों में राज्य को महंगा पड़ सकता है। जैसे-जैसे भारत तेजी से प्रौद्योगिकी-संचालित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ता है, STEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) के साथ इसकी रीढ़ के रूप में, पंजाब की लड़कियां बस को याद कर रही हैं।

एक नई रिपोर्ट - 'अनलॉकिंग पोटेंशियलः फाइनेंशियल एड फॉर ए कैटलिस्ट फॉर गर्ल्स' स्टेम सक्सेस '- 2023 और 2024-25 में दो भागों में आयोजित की गई और संयुक्त रूप से सत्व नॉलेज इंस्टीट्यूट और ऑल इंडिया सोसाइटी फॉर इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कंप्यूटर टेक्नोलॉजी द्वारा प्रकाशित की गई, एक शानदार तस्वीर पेश करती है। यह दर्शाता है कि कैसे पंजाब, एक बार शिक्षा मैट्रिक्स में सबसे आगे है, अब अपनी बेटियों को अंकों, अणुओं या मशीनों में सपने देखने में सक्षम बनाता है।

यहां तक कि भारत की शिक्षा प्रणाली के भीतर, STEM पर बढ़ता जोर दिया जा रहा है क्योंकि यह छात्रों को प्रौद्योगिकी के केवल उपयोगकर्ताओं तक सीमित करने के बजाय क्षेत्रों में भविष्य के नवोन्मेषकों और महत्वपूर्ण विचारकों में बदल सकता है।

इस विज्ञापन के नीचे कहानी जारी है

एसटीईएम पेशेवरों की बढ़ती मांग के बावजूद, योग्य व्यक्तियों की महत्वपूर्ण कमी है।

एक राष्ट्रीय कौशल विकास निगम की रिपोर्ट में भारत के प्रौद्योगिकी क्षेत्र में एक शानदार कौशल अंतर पर प्रकाश डाला गया है - केवल 74 मिलियन पेशेवर 107 मिलियन की मांग के खिलाफ उपलब्ध हैं।

उच्च माध्यमिक शिक्षा के लिए संक्रमण के दौरान छात्रों द्वारा किए गए विकल्पों का देश के भविष्य के तकनीकी कार्यबल पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इस नए सर्वेक्षण में पाया गया है कि सर्वेक्षण किए गए चार राज्यों में से, पंजाब मध्य प्रदेश, झारखंड (29%), और राजस्थान में 59% की तुलना में ग्रेड 11-12 में लड़कियों के लिए विज्ञान स्ट्रीम नामांकन में सबसे कम 16% है। (20%)।

पंजाब में, लुधियाना, अमृतसर, मोगा और संगरूर जिलों में स्थित सरकारी स्कूलों में सर्वेक्षण किया गया था।

इससे पता चलता है कि डिजिटल पहुंच और वित्तीय सहायता की कमी समस्या को कम कर रही है। आधी ग्रामीण लड़कियों के पास उपकरणों या इंटरनेट का उपयोग नहीं होता है, और 3 में 1 कोचिंग या परीक्षा शुल्क नहीं ले सकता है। चौंकाने वाली बात यह है कि सर्वेक्षण में शामिल केवल 23% लड़कियों को ही पता था कि छात्रवृत्ति मौजूद है।

37 जिलों में 4,763 लड़कियों का सर्वेक्षण किया गया - चार पंजाब, झारखंड (5), मध्य प्रदेश (3) और राजस्थान (25) से। उनमें से 69% ने विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए एक बाधा के रूप में वित्तीय कठिनाई का हवाला दिया, उनमें से आधे में डिजिटल उपकरणों या इंटरनेट तक पहुंच की कमी थी, 3 में से 1 कोचिंग या परीक्षा शुल्क नहीं ले सकता था, और केवल 10% को पता था कि विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए छात्रवृत्ति भी मौजूद है।

पंजाब में, जबकि सर्वेक्षण किए गए 77% स्कूल विज्ञान प्रदान करते हैं, केवल 19% महिला विज्ञान शिक्षक हैं, जो एसटीईएम क्षेत्रों में भरोसेमंद रोल मॉडल के बिना लड़कियों को छोड़ देती हैं।

रिपोर्ट में कहा गया है कि लड़कियों को विज्ञान (43%) के साथ जारी रखने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के रूप में उल्लेख और मार्गदर्शन उभरा है।

इनमें से अधिकांश छात्र ग्रामीण क्षेत्रों के हैं और गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) श्रेणी में आते हैं।

सभी छात्रों में से लगभग 75% ने कहा कि वे विज्ञान का अध्ययन करने के लिए अपने शिक्षकों से प्रभावित थे। हालांकि, कई स्कूलों में शिक्षकों की अनुपलब्धता से यह मुद्दा खराब हो जाता है।

पंजाब में सर्वेक्षण में शामिल केवल 28% लड़कियों ने मेंटरशिप की आवश्यकता व्यक्त की - एक ऐसा आंकड़ा जो इस तरह के समर्थन के बारे में जागरूकता की कमी को दर्शाता है - मध्य प्रदेश में 50% और राजस्थान और झारखंड में 42%।

करियर मार्गदर्शन की आवश्यकता राज्यों में समान रूप से मान्यता प्राप्त है - 78% कुल मिलाकर, मध्य प्रदेश में उच्चतम 80%, इसके बाद राजस्थान (74%), झारखंड (71%) और पंजाब (70%)। यह भी कहता है कि 28% लड़कियों के पास उपकरणों और इंटरनेट तक पहुंच की कमी है, पंजाब में सबसे अधिक अनुपात 63% है, इसके बाद राजस्थान (38%), मध्य प्रदेश (24%) और झारखंड (15%) है।

पंजाब में, ग्रामीण लड़कियों के एक सर्वेक्षण से विज्ञान शिक्षा तक पहुंच में महत्वपूर्ण अंतराल का पता चलता है। उनमें से लगभग 17% पाठ्यपुस्तकों जैसे बुनियादी शैक्षणिक संसाधनों का खर्च नहीं उठा सकते हैं, और 1 में 3 कोचिंग या परीक्षा शुल्क के लिए भुगतान करने में असमर्थ हैं। केवल 10 में से 1 छात्रवृत्ति से अवगत हैं जो उनकी पढ़ाई का समर्थन कर सकती हैं।

भारत में विज्ञान चुनने का खुलासा किया गया अध्ययन केवल एक शैक्षणिक निर्णय नहीं है - यह एक वित्तीय है। ग्रामीण क्षेत्रों में, विज्ञान शिक्षा मानविकी की तुलना में 58.5% अधिक महंगी है। शहरी सेटिंग्स में, लागत अंतर 139% तक बढ़ जाता है।

37 जिलों में 4,763 लड़कियों का सर्वेक्षण किया गया - चार पंजाब, झारखंड (5), मध्य प्रदेश (3) और राजस्थान (25) से। उनमें से 69% ने विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए एक बाधा के रूप में वित्तीय कठिनाई का हवाला दिया, उनमें से आधे में डिजिटल उपकरणों या इंटरनेट तक पहुंच की कमी थी, 3 में से 1 कोचिंग या परीक्षा शुल्क नहीं ले सकता था, और केवल 10% को पता था कि विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए छात्रवृत्ति भी मौजूद है।

पंजाब में, जबकि सर्वेक्षण किए गए 77% स्कूल विज्ञान प्रदान करते हैं, केवल 19% महिला विज्ञान शिक्षक हैं, जो एसटीईएम क्षेत्रों में भरोसेमंद रोल मॉडल के बिना लड़कियों को छोड़ देती हैं।

रिपोर्ट में कहा गया है कि लड़कियों को विज्ञान (43%) के साथ जारी रखने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के रूप में उल्लेख और मार्गदर्शन उभरा है।

इनमें से अधिकांश छात्र ग्रामीण क्षेत्रों के हैं और गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) श्रेणी में आते हैं।

सभी छात्रों में से लगभग 75% ने कहा कि वे विज्ञान का अध्ययन करने के लिए अपने शिक्षकों से प्रभावित थे। हालांकि, कई स्कूलों में शिक्षकों की अनुपलब्धता से यह मुद्दा खराब हो जाता है।

पंजाब में सर्वेक्षण में शामिल केवल 28% लड़कियों ने मेंटरशिप की आवश्यकता व्यक्त की - एक ऐसा आंकड़ा जो इस तरह के समर्थन के बारे में जागरूकता की कमी को दर्शाता है - मध्य प्रदेश में 50% और राजस्थान और झारखंड में 42%।

करियर मार्गदर्शन की आवश्यकता राज्यों में समान रूप से मान्यता प्राप्त है - 78% कुल मिलाकर, मध्य प्रदेश में उच्चतम 80%, इसके बाद राजस्थान (74%), झारखंड (71%) और पंजाब (70%)। यह भी कहता है कि 28% लड़कियों के पास उपकरणों और इंटरनेट तक पहुंच की कमी है, पंजाब में सबसे अधिक अनुपात 63% है, इसके बाद राजस्थान (38%), मध्य प्रदेश (24%) और झारखंड (15%) है।

पंजाब में, ग्रामीण लड़कियों के एक सर्वेक्षण से विज्ञान शिक्षा तक पहुंच में महत्वपूर्ण अंतराल का पता चलता है। उनमें से लगभग 17% पाठ्यपुस्तकों जैसे बुनियादी शैक्षणिक संसाधनों का खर्च नहीं उठा सकते हैं, और 1 में 3 कोचिंग या परीक्षा शुल्क के लिए भुगतान करने में असमर्थ हैं। केवल 10 में से 1 छात्रवृत्ति से अवगत हैं जो उनकी पढ़ाई का समर्थन कर सकती हैं।

भारत में विज्ञान चुनने का खुलासा किया गया अध्ययन केवल एक शैक्षणिक निर्णय नहीं है - यह एक वित्तीय है। ग्रामीण क्षेत्रों में, विज्ञान शिक्षा मानविकी की तुलना में 58.5% अधिक महंगी है। शहरी सेटिंग्स में, लागत अंतर 139% तक बढ़ जाता है।

कई परिवारों के लिए, पहले से ही गरीबी और पितृसत्तात्मक मानदंडों से जूझ रहे हैं, इसका मतलब है कि बेटों को संसाधन मिलते हैं जबकि बेटियों को बचा हुआ मिलता है। संख्या केवल सांख्यिकीय लाल झंडे नहीं हैं - वे खोई हुई क्षमता की हजारों अनकही कहानियों को दर्शाते हैं। रिपोर्ट कहती है, ₹हमारी कई प्रतिभाशाली लड़कियों ने कक्षा 10 में 90% से ऊपर स्कोर किया, लेकिन कला को इसलिए चुना क्योंकि वे कोचिंग और स्मार्टफोन का खर्च नहीं उठा सकती थीं.₹ अध्ययन में, सरकारी स्कूलों, सरकारी अधिकारियों, सीएसआर पेशेवरों, नीति निर्माताओं और शिक्षा विभाग के अधिकारियों सहित 30 प्रमुख मुखबिरों के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया था। नेशनल साइंस फाउंडेशन के अनुसार, जैसे ही भारत स्वचालन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं को गले लगाता है, भविष्य की 80% नौकरियों के लिए STEM कौशल की आवश्यकता होगी।

फिर भी, उच्च माध्यमिक शिक्षा के साथ 18-30 वर्ष की आयु की 86% भारतीय महिलाएं गैर-तकनीकी पृष्ठभूमि से आती हैं।

2022 के एनएसएस डेटा के अनुसार, महिलाएं विश्व स्तर पर 28% की तुलना में भारत के एसटीईएम कार्यबल का केवल 14.8% प्रतिनिधित्व करती हैं। इस लिंग अंतर को बंद करने में निवेश करना केवल एक सामाजिक आवश्यकता नहीं है, बल्कि एक आर्थिक अनिवार्यता है।

'एसटीईएम पाइपलाइन जल्दी शुरू होती है, और यह स्कूल में शुरू होती है। लेकिन पंजाब में लड़कियों के लिए, वह पाइप टपका हुआ, संकीर्ण और बाधाओं से भरा है, 'रिपोर्ट चेतावनी देती है।

ये लड़कियां कौन हैं?

अध्ययन लड़कियों को चार श्रेणियों में जोड़ता है, इस आधार पर कि वे स्कूल में कितनी अच्छी तरह से कर रही हैं और उन्हें कितने वित्तीय समर्थन की आवश्यकता है।

पहला ट्रेलब्लेज़र है - वे अकादमिक रूप से मजबूत हैं, लेकिन गरीब परिवारों से आते हैं। कोचिंग, अध्ययन सामग्री, उपकरणों और सलाह के लिए उन्हें प्रति वर्ष 81,000 रुपये से 1,03,000 रुपये की आवश्यकता होती है। सही समर्थन के साथ, वे NEET या JEE जैसी परीक्षाओं को साफ़ कर सकते हैं और शीर्ष STEM पाठ्यक्रमों में शामिल हो सकते हैं। दूसरा, आकांक्षी - वे अकादमिक रूप से संघर्ष करते हैं, और वित्तीय कठिनाई का भी सामना करते हैं। उन्हें बुनियादी विज्ञान कोचिंग, व्यावसायिक प्रशिक्षण और जीवन कौशल की आवश्यकता है। मदद से, वे अभी भी डिप्लोमा या कौशल-आधारित रास्तों के माध्यम से STEM फ़ील्ड में प्रवेश कर सकते हैं। तीसरा, सस्टेनर्स - वे पढ़ाई में अच्छे हैं, और उन्हें ज्यादा पैसे की जरूरत नहीं है। 22,000 रुपये से 45,000 रुपये प्रति वर्ष के साथ, वे परीक्षा प्रस्तुत करने, उपकरणों और परामर्श जैसे समर्थन के साथ स्टेम में अपनी यात्रा जारी रख सकते हैं।

अंतिम समूह असंतुष्ट है - वे न तो अच्छा स्कोर करते हैं और न ही ज्यादा पैसे की जरूरत होती है, लेकिन उनमें प्रेरणा और तत्परता की कमी होती है। उन्हें शुरू करने में मदद करने के लिए गैर सरकारी संगठनों, आकाओं और जागरूकता-निर्माण से समर्थन की आवश्यकता है।

छात्रवृत्तिः एक टूटा हुआ पुल

अध्ययन में पाया गया है कि कई सरकारी और सीएसआर-वित्त पोषित पहलों के अस्तित्व के बावजूद, छात्रवृत्ति प्रणाली उन लड़कियों के लिए काफी हद तक अप्रभावी है जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

अधिकांश योजनाएं मेरिट-आधारित हैं और हाशिए पर और अंडरप्रिपेयर की अनदेखी करती हैं। आवेदन प्रक्रियाएं अक्सर जटिल, ऑनलाइन-केवल और अंग्रेजी में आयोजित की जाती हैं। संवितरण में देरी होती है और शायद ही कभी परिवहन या कोचिंग जैसी अप्रत्यक्ष लागत को कवर किया जाता है। सीएसआर छात्रवृत्ति भौगोलिक रूप से तिरछी होती है, अक्सर कहां छोड़ती है

37 जिलों में 4,763 लड़कियों का सर्वेक्षण किया गया - चार पंजाब, झारखंड (5), मध्य प्रदेश (3) और राजस्थान (25) से। उनमें से 69% ने विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए एक बाधा के रूप में वित्तीय कठिनाई का हवाला दिया, उनमें से आधे में डिजिटल उपकरणों या इंटरनेट तक पहुंच की कमी थी, 3 में से 1 कोचिंग या परीक्षा शुल्क नहीं ले सकता था, और केवल 10% को पता था कि विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए छात्रवृत्ति भी मौजूद है। पंजाब में, जबकि सर्वेक्षण किए गए 77% स्कूल विज्ञान प्रदान करते हैं, केवल 19% महिला विज्ञान शिक्षक हैं, जो एसटीईएम क्षेत्रों में भरोसेमंद रोल मॉडल के बिना लड़कियों को छोड़ देती हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि लड़कियों को विज्ञान (43%) के साथ जारी रखने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण जरूरतों के रूप में उल्लेख और मार्गदर्शन उभरा है। इनमें से अधिकांश छात्र ग्रामीण क्षेत्रों के हैं और गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) श्रेणी में आते हैं। सभी छात्रों में से लगभग 75% ने कहा कि वे विज्ञान का अध्ययन करने के लिए अपने शिक्षकों से प्रभावित थे। हालांकि, कई स्कूलों में शिक्षकों की अनुपलब्धता से यह मुद्दा खराब हो जाता है। पंजाब में सर्वेक्षण में शामिल केवल 28% लड़कियों ने मेंटरशिप की आवश्यकता व्यक्त की - एक ऐसा आंकड़ा जो इस तरह के समर्थन के बारे में जागरूकता की कमी को दर्शाता है - मध्य प्रदेश में 50% और राजस्थान और झारखंड में 42%। करियर मार्गदर्शन की आवश्यकता राज्यों में समान रूप से मान्यता प्राप्त है - 78% कुल मिलाकर, मध्य प्रदेश में उच्चतम 80% के साथ, इसके बाद राजस्थान (74%), झारखंड (71%) और पंजाब (70%)। यह भी कहता है कि 28% लड़कियों के पास उपकरणों और इंटरनेट तक पहुंच की कमी है, जिसमें पंजाब में सबसे अधिक अनुपात 63% है, इसके बाद राजस्थान (38%), मध्य प्रदेश (24%) और झारखंड (15%) ग्रामीण शिक्षा, एक महत्वपूर्ण सर्वेक्षण का पता चलता है। उनमें से लगभग 17% पाठ्यपुस्तकों जैसे बुनियादी शैक्षणिक संसाधनों का खर्च नहीं उठा सकते हैं, और 1 में 3 कोचिंग या परीक्षा शुल्क के लिए भुगतान करने में असमर्थ हैं। केवल 10 में से 1 छात्रवृत्ति से अवगत हैं जो उनकी पढ़ाई का समर्थन कर सकती हैं। भारत में विज्ञान चुनने का खुलासा किया गया अध्ययन केवल एक शैक्षणिक निर्णय नहीं है - यह एक वित्तीय है। ग्रामीण क्षेत्रों में, विज्ञान शिक्षा मानविकी की तुलना में 58.5% अधिक महंगी है। शहरी सेटिंग्स में, लागत अंतर 139% तक बढ़ जाता है। कई परिवारों के लिए, पहले से ही गरीबी और पितृसत्तात्मक मानदंडों से जूझ रहे हैं, इसका मतलब है कि बेटों को संसाधन मिलते हैं जबकि बेटियों को बचा हुआ मिलता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि संख्या केवल सांख्यिकीय लाल झंडे नहीं हैं - वे खोई हुई क्षमता की हजारों अनकही कहानियों को दर्शाते हैं। हमारी कई प्रतिभाशाली लड़कियों ने कक्षा 10 में 90% से ऊपर स्कोर किया, लेकिन कला को चुना क्योंकि वे कोचिंग और स्मार्टफोन का खर्च नहीं उठा सकते थे। अध्ययन में, सरकारी स्कूलों, सरकारी अधिकारियों, सीएसआर पेशेवरों, नीति निर्माताओं और शिक्षा विभाग के अधिकारियों सहित 30 प्रमुख मुखबिरों के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया था। नेशनल साइंस फाउंडेशन के अनुसार, जैसे ही भारत स्वचालन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं को गले लगाता है, भविष्य की 80% नौकरियों के लिए एसटीईएम कौशल की आवश्यकता होगी। फिर भी, उच्च माध्यमिक शिक्षा के साथ 18-30 वर्ष की आयु की 86% भारतीय महिलाएं गैर-तकनीकी पृष्ठभूमि से आती हैं। 2022 के एनएसएस डेटा के अनुसार, महिलाएं विश्व स्तर पर 28% की तुलना में भारत के एसटीईएम कार्यबल का केवल 14.8% प्रतिनिधित्व करती हैं। इस लिंग अंतर को बंद करने में निवेश करना केवल एक सामाजिक आवश्यकता नहीं है, बल्कि एक आर्थिक अनिवार्यता है । ' स्टेम पाइपलाइन जल्दी शुरू होती है, और यह स्कूल में शुरू होता है । लेकिन पंजाब में लड़कियों के लिए, वह पाइप टपका हुआ, संकीर्ण और बाधाओं से भरा है, ₹रिपोर्ट चेतावनी देती है। ये लड़कियां कौन हैं? अध्ययन लड़कियों को चार श्रेणियों में समूहित करता है, इस आधार पर कि वे स्कूल में कितनी अच्छी तरह से कर रही हैं और उन्हें कितनी वित्तीय सहायता की आवश्यकता है। पहला ट्रेलब्लेज़र है - वे अकादमिक रूप से मजबूत हैं, लेकिन गरीब परिवारों से आते हैं। कोचिंग, अध्ययन सामग्री, उपकरणों और सलाह के लिए उन्हें प्रति वर्ष 81,000 रुपये से 1,03,000 रुपये की आवश्यकता होती है। सही समर्थन के साथ, वे नीट या जेईई जैसी परीक्षाओं को साफ़ कर सकते हैं और शीर्ष एसटीईएम पाठ्यक्रमों में शामिल हो सकते हैं। दूसरा, आकांक्षी - वे अकादमिक रूप से संघर्ष करते हैं, और वित्तीय कठिनाई का भी सामना करते हैं। उन्हें बुनियादी विज्ञान कोचिंग, व्यावसायिक प्रशिक्षण और जीवन कौशल की आवश्यकता है। मदद से, वे अभी भी डिप्लोमा या कौशल-आधारित रास्तों के माध्यम से एसटीईएम फ़ील्ड में प्रवेश कर सकते हैं। तीसरा, सस्टेनर्स - वे पढ़ाई में अच्छे हैं, और उन्हें ज्यादा पैसे की जरूरत नहीं है। 22,000 रुपये से 45,000 रुपये प्रति वर्ष के साथ, वे परीक्षा प्रस्तुत करने, उपकरणों और परामर्श जैसे समर्थन के साथ स्टेम में अपनी यात्रा जारी रख सकते हैं। अंतिम समूह असंतुष्ट है - वे न तो अच्छा स्कोर करते हैं और न ही ज्यादा पैसे की जरूरत होती है, लेकिन उनमें प्रेरणा और तत्परता की कमी होती है। उन्हें शुरू करने में मदद करने के लिए गैर सरकारी संगठनों, आकाओं और जागरूकता-निर्माण से समर्थन की आवश्यकता है। छात्रवृत्तिः एक टूटी हुई पुल। अध्ययन में पाया गया है कि कई सरकार और सीएसआर-वित्त पोषित पहलों के अस्तित्व के बावजूद, छात्रवृत्ति प्रणाली उन लड़कियों के लिए काफी हद तक अप्रभावी है, जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। अधिकांश योजनाएं योग्यता-आधारित हैं और हाशिए पर और नीचे की ओर अनदेखी करती हैं। आवेदन प्रक्रियाएं अक्सर जटिल, ऑनलाइन-केवल और अंग्रेजी में आयोजित की जाती हैं। संवितरण में देरी होती है और शायद ही कभी परिवहन या कोचिंग जैसी अप्रत्यक्ष लागत को कवर किया जाता है। सीएसआर छात्रवृत्ति भौगोलिक रूप से तिरछा है, अक्सर नए अध्ययन पर प्रकाश डाला जाता है कि मध्य प्रदेश कैसे

इसके अलावा, सरकार को माइक्रोफाइनेंस मॉडल तैयार करने, अनुप्रयोगों को सरल बनाने और ऑफ़लाइन मोड को सक्षम करने के लिए वास्तविक समय डेटा का उपयोग करने की आवश्यकता है। 'अगर हम और अधिक लड़कियों को विज्ञान शिक्षा में सफल देखना चाहते है और स्टेम में कॅरिअर का निर्माण, फंड और सरकारों को एक जीवन चक्र दृष्टिकोण लेने की जरूरत है, एक है कि सुन क्या लड़कियों की ख्वाहिश और समय के साथ अपनी जरूरतों के साथ विकसित से शुरू होता है ।

ग्लोबल वार्मिंग से दुनिया में नए रोगजनक उभर रहे

विजय गर्ग

ग्लोबल वार्मिंग से दुनिया में नए रोगजनक उभर रहे हैं और मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन रहे हैं। वैज्ञानिकों ने एस्परजिलस नामक फंगस के बढ़ते प्रसार के बारे में चिंता जताई है। इस फंगस के फैलने में जलवायु परिवर्तन और गर्म तापमान की मदद भी शामिल है। इस प्रकार की फफूंद लोगों, पौधों और जानवरों में गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न कर सकती है और कुछ मामलों में मृत्यु का कारण भी बन सकती है। एक नए अध्ययन में ब्रिटेन के शोधकर्ताओं ने दुनिया में फंगस के विस्तार का मॉडल बनाकर दिखाया है कि फंगस की तीन प्रजातियां, एस्परजिलस फ्यूमिगेटस, एस्परजिलस फ्लेवस और एस्परजिलस नाइजर अगले 70-80 वर्षों में उत्तर की ओर फैलेंगी। शोधकर्ताओं ने फंगस के मौजूदा आवासों और वार्मिंग की भविष्यवाणी करने वाले जलवायु मॉडल का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला है।

ब्रिटेन के मैनचेस्टर विश्वविद्यालय के पर्यावरण वैज्ञानिक नॉर्मन वैन रिजन का कहना है कि आर्द्रता और चरम मौसम की घटनाओं जैसे पर्यावरणीय कारकों में परिवर्तन, आवासों को बदल देंगे और फंगस के अनुकूलन और प्रसार को बढ़ावा देंगे। वायरस और दूसरे रोगजनक परजीवियों की तुलना में फंगस पर अपेक्षाकृत कम शोध किया गया है, लेकिन ताजा अध्ययन दिखाते हैं कि भविष्य में फंगस रोगजनकों का दुनिया के अधिकांश क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ने की संभावना है।

गंभीर जलवायु परिवर्तन के परिदृश्य के तहत, यूरोप में एस्परजिलस फ्यूमिगेटस का प्रसार 15 वर्षों में 77.5 प्रतिशत बढ़ सकता है, जिससे 90 लाख और लोगों को संक्रमण का खतरा हो सकता है। एस्परजिलस फ्लेवस जो गर्म क्षेत्रों को तरजीह देता है, यूरोप में 16 प्रतिशत तक प्रसारित हो सकता है, जिससे अतिरिक्त 10 लाख लोग जोखिम में पड़ सकते हैं। शोधकर्ता नए क्षेत्रों में फैलने वाले संक्रमण से चिंतित हैं। इस तरह के फंगस संक्रमण कमजोर लोगों, विशेष रूप से कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोगों को ज्यादा परेशान करेंगे। इस बात की अधिक संभावना है कि नई जगहों पर फंगस की प्रजातियों के अनुकूलन बाद स्वस्थ व्यक्तियों में भी संक्रमण के मामले बढ़ जाएंगे।

शोधकर्ताओं का कहना है कि मानव संक्रमणों के अलावा और भी बातें चिंताजनक हैं। फंगस के प्रकोप से फसलें नष्ट हो सकती हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन के परिदृश्य में दुनिया की आबादी का पेट भरने करने की चुनौतियों में वृद्धि हो सकती है।

शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में लिखा है कि एशिया, यूरोप और दुनिया के दूसरे हिस्सों में एस्परजिलस फंगस के साथ मानव संपर्क में वृद्धि की संभावना आने वाले समय में सार्वजनिक स्वास्थ्य का बोझ बढ़ा सकती है और फसल सुरक्षा परिदृश्य को बदल सकती है। एस्परजिलस के अलावा एक और फंगस, कैंडिडा ऑरिस भी वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय रही है। महत्वपूर्ण स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनने में सक्षम यह फंगस भी दुनिया के गर्म होने के साथ-साथ नए क्षेत्रों में फैल रही है, और अन्य प्रजातियों के भी इसका अनुसरण करने की संभावना है।

इन फंगस प्रजातियों का एक दूसरा पहलू भी है। पर्यावरण संतुलन में उनकी खास भूमिका है। वे पारिस्थितिकी तंत्र को लाभ पहुंचाती हैं, जिसमें कार्बन और पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण शामिल है। जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले बदलावों पर गौर करते समय इन सभी बातों पर भी विचार करने की आवश्यकता पड़ेगी। वैज्ञानिकों का कहना है कि फंगस रोगजनकों के प्रभावों को कम करने के लिए उनके बारे में जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ प्रभावी चिकित्सीय उपचार विकसित करना भी जरूरी होगा। इस बीच, संक्रामक रोग विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि खेती में नए फफूंदनाशक रसायनों के व्यापक उपयोग से मनुष्यों और जानवरों में फंगल संक्रमण के उपचारों के खिलाफ प्रतिरोध बढ़ सकता है।

एक नए अध्ययन में कृषि में उपयोग किए जाने वाले फफूंदनाशक को मनुष्यों और जानवरों दोनों में फफूंद रोधी दवाओं के खिलाफ प्रतिरोध में वृद्धि से जोड़ा गया है। कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के संक्रामक रोग विशेषज्ञ, डॉ. जॉर्ज थॉम्पसन और डॉ. एंजेल देसाई ने चेतावनी दी है कि हानिकारक फफूंद को मारने के लिए विकसित किए गए नए कृषि कीटनाशक लोगों और जानवरों में खतरनाक फंगल संक्रमण का इलाज करना कठिन बना सकते हैं।

फंगस प्रजातियां पहले से ही दुनियाभर में गंभीर स्वास्थ्य और आर्थिक समस्याओं का कारण बन रही हैं। एंटीफंगल एजेंट दवा और कृषि दोनों में आवश्यक रसायन हैं, लेकिन इन यौगिकों के अत्यधिक उपयोग से फफूंद में प्रतिरोध विकसित हो सकता है। इसका मतलब है कि मनुष्यों के लिए जीवन रक्षक उपचार काम करना बंद कर सकते हैं। दोनों विशेषज्ञों ने वैश्विक समुदाय से फफूंद और बैक्टीरिया जैसे रोगजनकों से लड़ने के लिए रासायनिक एजेंटों के विकास, परीक्षण और उपयोग के लिए 'समग्र स्वास्थ्य' दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह किया है। थॉम्पसन ने कहा, दवा प्रतिरोधी रोगजनक एजेंटों का विवेकपूर्ण उपयोग करने की भी आवश्यकता है। हमने सीखा है कि पशुधन के लिए एंटीबायोटिक दवाओं के व्यापक उपयोग के परिणामस्वरूप जीवाणुरोधी दवाओं के खिलाफ प्रतिरोध का तेजी से विकास हुआ है। पर्यावरण में फफूंदनाशक के उपयोग के बारे में भी ऐसी ही चिंताएं हैं। समग्र स्वास्थ्य दृष्टिकोण इस बात पर जोर देता है कि कैसे एक क्षेत्र में परिवर्तन से मानव गतिविधि, पशु स्वास्थ्य और पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है। जलवायु और हवा के पैटर्न में परिवर्तन फफूंद जैसे रोगजनकों को फैलाने में मदद कर सकते हैं। साथ ही, यात्रियों, प्रवासी जानवरों और दूषित वस्तुओं की आवाजाही रोगजनकों को नए क्षेत्रों में ले जा सकती है। पिछले कुछ दशकों में मनुष्यों में गंभीर संक्रमण पैदा करने वाली फंगस के प्रकारों में तेजी से वृद्धि हुई है। मसलन, कैंडिडा ऑरिस एक ऐसी ही फंगस है। इसका इलाज भी कठिन होता है। इस फंगस में मनुष्यों के समान कोशिका तंत्र होता है। यही कारण है कि कैंडिडा ऑरिस जैसे फंगस को मारने वाली दवाओं के लोगों पर अक्सर दुष्प्रभाव होते हैं। नैदानिक देखभाल के दौरान चुनने के लिए बहुत कम एंटीफंगल दवाएं होने के कारण प्रतिरोध को रोकना सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि उपचारों के खिलाफ प्रतिरोध प्रत्येक रासायनिक एजेंट की मात्रा से अत्यधिक जुड़ा हुआ है। उन्होंने नए रोगाणुरोधी एजेंटों के खिलाफ प्रतिरोध के विकास को धीमा करने के लिए समन्वित वैश्विक विनियमन का आह्वान किया है। उन्होंने कहा, एक साझा रोगाणुरोधी अनुमोदन प्रक्रिया की आवश्यकता है जिसमें पर्यावरण और मानव तथा पशु स्वास्थ्य पर संभावित प्रभावों का गहन मूल्यांकन शामिल हो। प्रतिरोधी रोगजनकों के तेजी से प्रसार की जोखिम भरी संभावनाओं से बचने के लिए राष्ट्रीय और वैश्विक स्तरों पर साझा प्रयास करने होंगे।More In

बड़े धार्मिक आयोजनों का वैज्ञानिक प्रबंधन जरूरीबड़े धार्मिक आयोजनों का वैज्ञानिक प्रबंधन जरूरी

शिक्षा की की रोशनी

व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। शिक्षा और विकास एक दूसरे के पूरक हैं। प्रत्येक एक दशक बाद भारत में जनगणना होती है । जनगणना के आंकड़ों से साक्षरता दर का आकलन होता है। आजादी के बाद 1988 में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना के बाद साक्षरता के क्षेत्र में तेज गति से काम होने लगा। 2001 से 2011 के दशक में साक्षरता की दिशा में उल्लेखनीय कार्य हुआ। इस दौरान अनेक प्रदेशों की साक्षरता दर में उछाल आया । इस दशक में साक्षरता के क्षेत्र में उत्तर भारत में उत्साह और उमंग के साथ सराहनीय काम हुआ, जहां साक्षरता प्रतिशत पचास फीसद से भी कम था ।

उस दौरान केरल 93.91 फीसद साक्षरता दर के साथ देश में नंबर एक पर था तो मिजोरम 91.58 फीसद साक्षरता दर के साथ तीसरे स्थान पर था। अब आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण यानी पीएफएलएस रपट के मुताबकि, मिजोरम 98.20 फीसद साक्षरता दर हासिल कर देश का पहला पूर्ण साक्षर प्रदेश बन गया। संपूर्ण साक्षरता अभियान के बाद उत्तर साक्षरता अभियान और सतत शिक्षा कार्यक्रम संचालित होने लगे और धीरे-धीरे साक्षरता अभियानों ने कार्यक्रम का स्थान ले लिया। यहीं से साक्षरता कार्यक्रम बन गया और साक्षर होने की गति और उत्साह भी कम होने लगा। मिजोरम में फिर से साक्षर होने की कार्ययोजना तैयार कर उल्लास कार्यक्रम के तहत फिर वही प्रक्रिया अपनाई गई ।

निरक्षर व्यक्ति को केवल साक्षर बनाना ही मकसद नहीं होता, नवसाक्षरों का शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक विकास करना होता है। यह बात मिजोरम ने समझी । प्रदेश के आर्थिक स्तर को सुधारने, भविष्य उन्नयन और नवसाक्षरों को व्यावसायिक कौशल देने के प्रयास भी किए । संपूर्ण साक्षरता अभियान की तरह सरकार ने जनता के सहयोग से निरक्षरता उन्मूलन के लिए स्वयंसेवक तैयार किए, उन्हें प्रशिक्षण दिया, शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवाई, स्वयंसेवकों के साथ सरकार के प्रतिनिधि और अफसर नियमित संपर्क में बने रहे । प्रदेश भर में साक्षरता के पक्ष में वातावरण बनाया गया, वातावरण निर्माण के तहत घर-घर सर्वेक्षण किया गया, लोगों को आमंत्रित किया गया, असाक्षरों का सम्मान किया गया। उनके साथ निरंतर संपर्क रखा गया। इस कार्यक्रम में असाक्षर की पहचान, मूल्यांकन और निरीक्षण का काम प्रतिदिन होता रहा। क्लस्टर बनाकर क्षेत्र आधारित कार्यक्रम तैयार किए गए। छोटे-छोटे समूह बनाए गए, जिसमें स्थानीय जनप्रतिनिधि, शिक्षाविद और समाज के व्यक्ति, जो साथ मिलकर असाक्षर व्यक्ति के घर जाते, उनसे आग्रह करते ।

समुदाय के सहयोग से संचालित साक्षरता अभियान के अंतर्गत स्थानीय भाषा और गहरी सांस्कृतिक सहायता से लोगों ने सिर्फ पढ़ना ही नहीं सीखा, बल्कि ऐसी संस्कृति का निर्माण किया जो ज्ञान को महत्त्व देने लगे । शिक्षित नागरिक से ही एक समग्र और विकसित राष्ट्र और समाज की परिकल्पना की जा सकती हैं।यह अच्छी और सुखद खबर है। मिजोरम की साक्षरता यात्रा देश के अन्य प्रदेशों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है। 2011 में 91.58 फीसद लोग साक्षर थे। कहने को यह भी कहा जा सकता है कि केवल आठ फीसद लोगों को ही साक्षर करने का काम था । दिखने में और सुनने में आठ फीसद का लक्ष्य तय करना कोई बड़ी बात न हो, पर यही वह समूह था, जिसको साक्षर करना मुश्किल काम था । शिक्षा से दूर रहे इस समूह की मानसिकता बदलना मुश्किल ही नहीं कठिन काम होता है, जिसे मिजोरम ने अपनी इच्छा शक्ति से कर दिखाया ।

नब्बे के दशक में केरल संपूर्ण साक्षर घोषित किया गया था । केरल से पहले एर्नाकुलम जिले को संपूर्ण साक्षर घोषित किया गया था। वहां भी संपूर्ण साक्षरता अभियान को जन आंदोलन बनाया गया था । केरल सरकार ने भारत ज्ञान विज्ञान समिति के साथ मिलकर यह काम किया। वहां भी उस समय केवल नौ फीसद लोगों को ही साक्षर करना था, लेकिन वे भी 'हार्डकोर ग्रुप' यानी शिक्षा से दूर रहे समूह की श्रेणी में थे । केरल की साक्षरता यात्रा घर, गांव और जिला स्तर तक चली। केरल में प्रत्येक सरकारी अधिकारी जन सहयोग से अपनी जिम्मेदारी समझकर निरक्षरता उन्मूलन के पवित्र काम में लगा था। केरल की तर्ज पर पूरे देश में साक्षरता अभियान संचालित हुआ । उसी तकनीक को मिजोरम सरकार ने भी जन सहयोग से अपनाया और संपूर्ण साक्षर प्रदेश बन गया।

दरअसल, घने बांस के जंगलों और पहाड़ियों, गहरी घाटियों के कारण 'हार्डकोर समूह' की पहचान करना भी चुनौतीपूर्ण था। मिजोरम सरकार के लिए अब चुनौती इस बात की है कि ये लोग अभ्यास छूटने के बाद फिर से असाक्षर श्रेणी में न आ जाएं। प्राथमिक शिक्षा में शत-प्रतिशत नामांकन हो और स्कूली पढ़ाई बीच में न छूटे। नवसाक्षरों की साक्षरता सतत बनी रहे, इसलिए व्यावसायिक कौशल के साथ जोड़ना सरकार की प्राथमिकता में होना चाहिए । उनको रोजगार उपलब्ध कराने की जरूरत होगी, जिससे उनकी साक्षरता कायम रहेगी। ऐसी इच्छाशक्ति यह बताती है कि जब समुदाय और सरकार मिलकर काम करते हैं तो असाधारण परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। स्वतंत्र रूप से पूर्ण राज्य बनने के बाद इतने कम समय में पूर्ण साक्षर होना राज्य के लिए गर्व की बात है । अब निरंतरता में शिक्षा की मुहिम चलाए जाने की आवश्यकता है, ताकि मौजूदा उपलब्धि की रोशनी मिजो समाज को रोशन करे ।

विश्व गुरु का संकल्प: आठ दिनों में पांच महादेशों को जोड़ता भारत

[लिथियम से डिजिटल इकोनॉमी तक: मोदी की यात्रा का बहुआयामी दृष्टिकोण]

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

जब विश्व की निगाहें भारत पर टिकी हैं, तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक ऐसी साहसिक और दूरदर्शी यात्रा पर निकले हैं, जो ग्लोबल साउथ में भारत की महत्त्वाकांक्षाओं को नया आयाम देगी और विश्व मंच पर भारत को एक सशक्त, अग्रणी शक्ति के रूप में स्थापित करेगी। यह आठ दिवसीय यात्रा—घाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, अर्जेंटीना, ब्राजील, और नामीबिया—मात्र कूटनीति नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक समृद्धि, रणनीतिक कुशलता और वैश्विक नेतृत्व की प्रबल घोषणा है। ऐसे दौर में, जब वैश्विक भू-राजनीति अनिश्चितता के भंवर में उलझी है और अमेरिकी नीतियां नए वैश्विक समीकरण गढ़ रही हैं, यह यात्रा भारत को एक विश्वसनीय, प्रभावशाली और प्रेरक शक्ति के रूप में उभारती है। यह दौरा भारत के आर्थिक, सांस्कृतिक और रक्षा हितों को ग्लोबल साउथ के देशों के साथ जोड़ने का एक अभूतपूर्व प्रयास है, जो भारत की वैश्विक आवाज को और सशक्त करेगा। साथ ही, यह यात्रा भारत के 'विश्व गुरु' के दृष्टिकोण को मूर्त रूप देती है, जो समावेशी विकास और वैश्विक एकता के प्रति अटल प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

घाना में पहला पड़ाव भारत के लिए पश्चिमी अफ्रीका के साथ एक अभूतपूर्व साझेदारी का स्वर्णिम अवसर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह ऐतिहासिक द्विपक्षीय यात्रा भारत-घाना संबंधों को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगी। 2024-25 में भारत घाना का सबसे बड़ा निर्यातक देश रहा, जिसमें घाना से भारत के आयात का 70% से अधिक हिस्सा सोने का है। इसके साथ ही, भारत ने घाना में डिजिटल बुनियादी ढांचे और स्टार्टअप इकोसिस्टम को सशक्त करने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की है, जिसने घाना की डिजिटल अर्थव्यवस्था को नया बल दिया है। रक्षा सहयोग के तहत भारत द्वारा प्रदान किए गए प्रशिक्षण और अत्याधुनिक उपकरण, साथ ही नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं में रणनीतिक निवेश, इस यात्रा को और भी महत्वपूर्ण बनाते हैं। यह दौरा अफ्रीकी महाद्वीप में भारत की मित्रता को एक नया आलोक प्रदान करेगा, जो शिक्षा, स्वास्थ्य, और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में दीर्घकालिक, परिवर्तनकारी साझेदारी का मजबूत आधार रचेगा।

3-4 जुलाई को त्रिनिदाद और टोबैगो की धरती पर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारतीय मूल की 40-45% आबादी के साथ सांस्कृतिक और ऐतिहासिक बंधनों का एक सशक्त, आत्मीय और प्रेरक उत्सव रचेंगे। 1999 के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली यात्रा, भारतीय प्रवासियों की 180 वर्षों की गौरवमयी विरासत को एक नया आलोक प्रदान करती है। 2024-25 में दोनों देशों के बीच 341.61 मिलियन डॉलर का व्यापार इस रिश्ते की जीवंतता और गहराई को रंगीन कैनवास पर उकेरता है। भारत ने त्रिनिदाद और टोबैगो को नवीकरणीय ऊर्जा और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व सहयोग दिया है, जिसमें सौर ऊर्जा की क्रांतिकारी परियोजनाएं और डिजिटल शिक्षा की नवोन्मेषी पहल शामिल हैं। संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए और राष्ट्रपति क्रिस्टीन कार्ला कंगालू व प्रधानमंत्री कमला प्रसाद बिसेसर के साथ विचार-विमर्श में, पीएम मोदी कैरेबियाई क्षेत्र में भारत की प्रभावशाली उपस्थिति को और अधिक सुदृढ़ करेंगे। यह दौरा सांस्कृतिक एकता, व्यापारिक गतिशीलता और तकनीकी सहयोग का एक अनुपम समन्वय प्रस्तुत करता है, जो भारत के सॉफ्ट पावर को वैश्विक मंच पर एक चमकते सितारे की तरह देदीप्यमान बनाएगा।

4-5 जुलाई को अर्जेंटीना की धरती पर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राष्ट्रपति जेवियर मिलेई के साथ रक्षा, कृषि, खनन और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में सहयोग को एक नई, गतिशील दिशा देंगे। 57 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली यात्रा, लिथियम जैसे रणनीतिक खनिजों में साझेदारी को अभूतपूर्व ऊंचाइयों तक ले जाएगी। लिथियम, भारत की इलेक्ट्रिक वाहन क्रांति और हरित ऊर्जा के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों का आधार है, और अर्जेंटीना विश्व के सबसे विशाल लिथियम भंडारों का धनी है। 2024-25 में दोनों देशों के बीच व्यापार, जो सोयाबीन और सूरजमुखी तेल पर केंद्रित है, 2.5 बिलियन डॉलर के आंकड़े को पार कर चुका है, जो भारत को दक्षिण अमेरिका में एक प्रमुख व्यापारिक शक्ति के रूप में स्थापित करता है। यह ऐतिहासिक मुलाकात भारत की ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करने के साथ-साथ दक्षिण अमेरिका में भारत की रणनीतिक उपस्थिति को और अधिक प्रबल करेगी, एक नए युग की शुरुआत करते हुए।

5-8 जुलाई को ब्राजील में आयोजित 17वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत की प्रबल और दूरदर्शी आवाज को वैश्विक मंच पर और अधिक सशक्त करेंगे। आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जिम्मेदार उपयोग जैसे वैश्विक चुनौतियों पर भारत का स्पष्ट और प्रेरक दृष्टिकोण विश्व को एक नई दिशा प्रदान करेगा। भारत ने ब्रिक्स ढांचे के तहत डिजिटल अर्थव्यवस्था और स्टार्टअप सहयोग को नया आयाम दिया है, जिसमें यूपीआई जैसे क्रांतिकारी मॉडल को वैश्विक मंच पर गौरव के साथ प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्रपति लुइज़ इनासियो लूला दा सिल्वा के साथ द्विपक्षीय वार्ता में व्यापार, रक्षा, अंतरिक्ष और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में भारत-ब्राजील साझेदारी को अभूतपूर्व गति और गहराई मिलेगी। 2024-25 में दोनों देशों के बीच व्यापार 15 बिलियन डॉलर के प्रभावशाली आंकड़े को छू चुका है, और इसरो व ब्राजील की अंतरिक्ष एजेंसी के बीच अंतरिक्ष अनुसंधान में सहयोग इस रिश्ते को और अधिक मजबूत कर रहा है। यह दौरा भारत और ब्राजील के बीच सहयोग को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगा, जो वैश्विक एकता और समृद्धि का प्रतीक बनेगा।

नामीबिया में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहली यात्रा ग्लोबल साउथ के प्रति भारत की अटूट और प्रेरक प्रतिबद्धता को एक नया आयाम देगी। भारत ने नामीबिया को सौर ऊर्जा परियोजनाओं और उन्नत कृषि तकनीकों के माध्यम से सशक्त समर्थन प्रदान किया है, जिसने ग्रामीण विकास को नई गति दी है। यह दौरा दोनों देशों के बीच आर्थिक और विकास सहयोग को एक प्रगतिशील और दूरदर्शी दिशा में ले जाएगा। भारत का 'साउथ-साउथ कोऑपरेशन' का दृष्टिकोण नामीबिया जैसे देशों के साथ साझेदारी को और अधिक गहरा करेगा, जो समावेशी और टिकाऊ विकास का एक विश्वसनीय मॉडल स्थापित करेगा।

यह यात्रा भारत के वैश्विक नेतृत्व की एक प्रेरक और अमर गाथा है। यह वह भारत है, जो अपने हितों को अटल दृढ़ता से संरक्षित करता है, साथ ही ग्लोबल साउथ के देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर विश्व में शांति, स्थिरता और समृद्धि का एक स्वर्णिम युग रचता है। यह दौरा 'वसुधैव कुटुंबकम' के पवित्र सिद्धांत को साकार करता है, जहां विश्व एक परिवार है और भारत उसका साहसी, दूरदर्शी और प्रेरक मार्गदर्शक है। यह यात्रा न केवल द्विपक्षीय संबंधों को नई ऊर्जा और गति प्रदान करेगी, बल्कि भारत को ग्लोबल साउथ का अग्रणी नेतृत्वकर्ता बनाएगी, जो विश्व के भविष्य को आकार देने के लिए दृढ़संकल्प और पूर्णतः तैयार है।

एक अनंत मशाल: स्वामी विवेकानंद का निर्वाण और अविनाशी प्रकाश

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

जब मैं अपनी आँखें बंद करता हूँ और भारत की उस सनातन आत्मा की कल्पना करता हूँ, जो युगों से सत्य, प्रेम और साहस की प्रेरणा देती रही है, तो मेरे सामने स्वामी विवेकानंद का तेजस्वी चेहरा उभर आता है। वह चेहरा, जो केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि एक युग का प्रतीक है; वह आवाज़, जो केवल शब्दों की नहीं, बल्कि आत्मजागरण की हुंकार है। 4 जुलाई 1902 का वह दिन, जब यह महान आत्मा अपने भौतिक शरीर को त्यागकर अनंत में विलीन हो गई, भारत के लिए केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक अनश्वर प्रेरणा का स्मारक है। स्वामी विवेकानंद कोई साधारण सन्यासी नहीं थे; वे उस अग्नि के समान थे, जिसने भारत के सोए हुए मानस को झकझोरा और विश्व को भारतीय अध्यात्म की अनंत गहराई से परिचित कराया। उनकी पुण्यतिथि हमें नमन करने का अवसर देती है—न केवल उनके जीवन को, बल्कि उस साहस, करुणा और आत्मविश्वास को, जो उन्होंने हमें विरासत में दिया।

स्वामी विवेकानंद, जिनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में नरेंद्र नाथ दत्त के रूप में हुआ, बचपन से ही एक असाधारण आत्मा थे। उनकी जिज्ञासु बुद्धि और आध्यात्मिक पिपासा उन्हें उनके समकालीनों से अलग करती थी। 1881 में रामकृष्ण परमहंस से उनकी मुलाकात ने उनके जीवन को एक नया मोड़ दिया। रामकृष्ण ने उनके भीतर छिपे उस सूर्य को देखा, जो विश्व को आलोकित करने वाला था। 1886 में रामकृष्ण के देहावसान के बाद, नरेंद्र ने स्वामी विवेकानंद के रूप में उनके संदेश को विश्व तक पहुँचाने का बीड़ा उठाया। यह केवल एक शिष्य का अपने गुरु के प्रति समर्पण नहीं था, बल्कि एक ऐसी क्रांति का प्रारंभ था, जिसने भारत की आत्मा को पुनर्जागृत किया और विश्व को भारतीय दर्शन की गहनता से परिचित कराया।

1893 में शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद का भाषण इतिहास का वह स्वर्णिम क्षण था, जिसने भारत को वैश्विक मंच पर अमर कर दिया। जब उन्होंने अपनी गूंजती वाणी में "मेरे अमेरिकी भाइयों और बहनों" कहकर सभागार को संबोधित किया, तो वह पल समय को ठहरा देने वाला था। सात मिनट के उस संक्षिप्त भाषण में उन्होंने वेदांत, सहिष्णुता और विश्व बंधुत्व का ऐसा सशक्त संदेश दिया, जो आज भी विश्व के हृदय में गूंज रहा है। न्यूयॉर्क हेराल्ड ने लिखा, "विवेकानंद इस सम्मेलन के सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्व हैं।" यह केवल एक व्यक्ति की प्रशंसा नहीं थी, बल्कि भारतीय संस्कृति की वैश्विक स्वीकृति का प्रतीक था। उस भाषण ने पश्चिमी जगत को यह सिखाया कि भारत का अध्यात्म केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं, बल्कि मानवता के लिए एक सार्वभौमिक दर्शन है।

स्वामी विवेकानंद का दर्शन रूढ़ियों को तोड़ने वाला था। उन्होंने धर्म को मंदिरों और पूजा-पाठ तक सीमित नहीं किया। उनके लिए धर्म था—करुणा का सागर, साहस का शिखर और मानव सेवा का जीवंत स्वरूप। वे कहते थे, "जो दरिद्रों और असहायों में ईश्वर के दर्शन नहीं कर सकता, वह सच्चा धार्मिक नहीं है।" यह वाक्य मेरे हृदय को गहरे तक छूता है। जब मैं समाज में व्याप्त दुख और असमानता को देखता हूँ, तो उनके शब्द मेरे भीतर एक नई चेतना जागृत करते हैं। 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना उनके इसी दर्शन का मूर्त रूप थी। 2025 तक, यह मिशन 200 से अधिक शैक्षणिक संस्थानों और 700 से अधिक गैर-औपचारिक शिक्षा केंद्रों के माध्यम से लाखों लोगों के जीवन को शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा के ज़रिए संवार रहा है। स्वामीजी ने यह सिद्ध किया कि सच्चा धर्म वह है, जो मानवता की सेवा में समर्पित हो।

स्वामी विवेकानंद के विचारों में आत्मविश्वास की वह अग्नि थी, जो एक व्यक्ति को नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र को प्रज्वलित कर सकती थी। उस दौर में, जब भारत औपनिवेशिक गुलामी और आत्मग्लानि से जूझ रहा था, उन्होंने घोषणा की, "अपने को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।" यह वाक्य केवल शब्द नहीं थे, बल्कि एक ऐसी क्रांतिकारी हुंकार थी, भारत के युवाओं में आत्मसम्मान और साहस का संचार किया। उनके विचारों में एक विराट आकाश की अनंतता थी, जो हर भय और दुर्बलता को निगल लेती थी। मुझे उनका वह प्रसंग स्मरण आता है, जब एक पाश्चात्य विद्वान ने उनसे उनकी निर्भीकता का रहस्य पूछा। स्वामीजी ने मुस्कुराते हुए कहा, "ब्रह्मचर्य और स्वाध्याय।" इस संक्षिप्त उत्तर में उनके जीवन की साधना और संयम का सार छिपा था। उन्होंने अपने जीवन से यह दिखाया कि आत्मानुशासन और साधना ही वह शक्ति है, जो मनुष्य को महामानव बनाती है।

स्वामी विवेकानंद का एक और विशेष पहलू था उनकी युवाओं के प्रति अपार श्रद्धा। वे मानते थे कि युवा शक्ति ही राष्ट्र के भविष्य का आधार है। उन्होंने कहा, "मुझे सौ ऊर्जावान युवा दो, और मैं भारत को बदल दूँगा।" यह वाक्य आज भी मेरे हृदय में आग की तरह जलता है। यह वह आह्वान था, जो युवाओं को अपनी शक्ति पहचानने और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित करता था। उनके इस विश्वास ने भारत के युवाओं में एक नई चेतना का संचार किया, जो आज भी प्रासंगिक है। 2023 के आँकड़ों के अनुसार, भारत की 65% जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है, और स्वामीजी का यह संदेश आज के युवाओं के लिए उतना ही प्रेरक है, जितना उनके समय में था।

उनका सबसे अमर संदेश था, "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।" यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि जीवन का मंत्र है। जब-जब मैं हताशा या असफलता के क्षणों से जूझता हूँ, यह वाणी मेरे भीतर नई ऊर्जा का संचार करती है। यह वह आह्वान है, जो हर सोई हुई आत्मा को झकझोरकर उसे उसकी अनंत संभावनाओं का स्मरण कराता है। स्वामी विवेकानंद ने हमें सिखाया कि हमारी सबसे बड़ी शक्ति हमारे भीतर ही निहित है। उन्होंने कहा, "प्रत्येक आत्मा में अनंत शक्ति छिपी है।" यह विश्वास उनके दर्शन का मूल था, और यही विश्वास आज भी हमें अपने भीतर की दिव्यता का आभास कराता है।

शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण भी क्रांतिकारी था। वे मानते थे कि शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्रियाँ अर्जित करना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और आत्मनिर्भरता का विकास करना है। उन्होंने कहा, "शिक्षा वह है, जो मनुष्य को अपने पैरों पर खड़ा करे।" आज, जब शिक्षा का व्यवसायीकरण अपने चरम पर है, उनके यह शब्द हमें शिक्षा के सच्चे अर्थ की याद दिलाते हैं। रामकृष्ण मिशन के शैक्षणिक संस्थान उनके इस दृष्टिकोण को जीवंत रूप दे रहे हैं। 2023 के आँकड़ों के अनुसार, मिशन के स्कूल और कॉलेज भारत के कोने-कोने में लाखों बच्चों को न केवल ज्ञान, बल्कि नैतिकता और आत्मविश्वास भी प्रदान कर रहे हैं।

स्वामी विवेकानंद का जीवन केवल 39 वर्ष का रहा, लेकिन इस संक्षिप्त समय में उन्होंने जो प्रभाव छोड़ा, वह अनंत काल तक प्रेरणा देता रहेगा। 4 जुलाई 1902 को, बेलूर मठ में, ध्यानमग्न अवस्था में उन्होंने अपने शरीर का त्याग किया। कहा जाता है कि वे महासमाधि में लीन हो गए, जो एक सिद्ध योगी की पराकाष्ठा है। उनकी मृत्यु केवल एक अंत नहीं थी, बल्कि उनके विचारों का अमरत्व था। एक विशेष प्रसंग में, स्वामीजी ने अपने शिष्यों से कहा था, "मैं मरने के बाद भी तुम्हारे बीच रहूँगा।" यह वाक्य उनके अविनाशी प्रभाव का प्रतीक है। आज भी, उनके विचार भारत के हर कोने में गूंज रहे हैं।

स्वामी विवेकानंद, भारत की आत्मा का प्रज्वलित सूर्य, उस युग-द्रष्टा की पुण्यतिथि एक पावन आह्वान है, जो हर हृदय में आत्मविश्वास और साहस की ज्योति प्रज्वलित करती है। जब वे अनंत में विलीन हुए, उन्होंने अपने विचारों की अमर अग्नि को युगों-युगों तक जलाए रखने का संदेश छोड़ा। उनका जीवन एक सनातन गाथा है, जो सिखाता है कि सच्ची शक्ति बाहरी परिस्थितियों में नहीं, बल्कि प्रत्येक आत्मा में बसी उस अखंड सामर्थ्य में निहित है, जो असंभव को संभव बनाती है। उनकी अमर वाणी, "तुम अनंत शक्तियों के स्वामी हो, अपने को दुर्बल मत मानो," निराशा के घने अंधेरों को चीरकर हर हृदय में उद्देश्य की लौ जलाती है। "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए," यह मंत्र हर आत्मा को उसकी अंतर्निहित दिव्यता से जोड़ता है, उसे विश्व कल्याण का साधक बनने को प्रेरित करता है। स्वामीजी का जीवन एक चिरस्थायी दीपस्तंभ है, जिसकी किरणें समय के अंधकार को भेदकर मार्ग दिखाती हैं। उनकी पुण्यतिथि हमें प्रण लेने को प्रेरित करती है कि उनके आदर्शों को कर्म में उतारकर हम राष्ट्र और मानवता की सेवा करें, और उनकी प्रेरणा से भारत को पुनः विश्व गुरु के स्थान पर प्रतिष्ठित करें।

मोदी का घाना दौरा -: कूटनीति का वही ढोल या साख लौटाने की ठोस कवायद ?

क्या भारत ग्लोबल साउथ में अपनी खोई विरासत फिर हासिल कर पाएगा?

'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद तमाम सवालों से घिरे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब घाना की धरती पर उतरे, तो उनके कदमों में 75 साल की उम्र की थकान और हार न मानने की जिद एकसाथ झलक रही थी। अक्रा के हवाई अड्डे पर, हल्के नीले नेहरू जैकेट में सजे मोदी का चेहरा तनाव और सुकून के मिश्रित भाव लिए था। शायद यह नेहरू जैकेट सिर्फ एक परिधान नहीं, बल्कि उस नेहरू की याद का प्रतीक था, जिन्होंने कभी घाना की जनता को आजादी और ग्लोबल साउथ की एकजुटता का सपना दिखाया था। घाना के राष्ट्रपति जॉन ड्रामानी महामाहा ने उनका स्वागत किया, लेकिन हवा में सवाल गूँज रहे थे। ऑपरेशन सिंदूर की आधी-अधूरी कहानी, अमेरिका की मध्यस्थता की खबरों ने भारत की स्वायत्तता को कटघरे में खड़ा किया है, और हालिया भारत-पाक तनाव में चीन की सैन्य मदद ने ग्लोबल साउथ में भारत की साख को दांव पर ला दिया है।

क्या यह घाना, जो कभी गांधी और नेहरू की अहिंसा व साझेदारी से प्रेरित था, मोदी के नेतृत्व में भारत के ग्लोबल साउथ के सपने को नया जीवन दे पाएगा? क्या यह यात्रा, गंभीर सवालों से जूझ रही विदेश नीति को पुनर्परिभाषित करने की बजाय, एक और कूटनीतिक शो बनकर रह जाएगी?

ऑपरेशन सिंदूर और कूटनीतिक भंवर

पिछले महीने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत भारत ने सीमित सैन्य कार्रवाई की। सेना निर्णायक कदम के लिए तैयार थी, मगर आखिरी पल में राजनीतिक नेतृत्व ने कदम पीछे खींच लिए। इंडोनेशिया में तैनात नौसेना अधिकारी कैप्टन शिव कुमार ने खुलासा किया, "हम तैयार थे, लेकिन रणनीति में स्पष्टता की कमी ने हमें रोका।" इस खुलासे ने देश में हलचल मचा दी। अमेरिका की मध्यस्थता की खबरों ने भारत की स्वायत्त कूटनीति पर सवाल उठाए। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने तंज कसा, "मोदी सरकार की विदेश नीति अब फोटो सेशन और खोखली घोषणाओं तक सिमट गई है। नीतिगत दृढ़ता गायब है।"

पर्दे के पीछे, चीन की भूमिका ने आग में घी डाला। हालिया भारत-पाक तनाव में चीन ने पाकिस्तान को फाइटर जेट, मिसाइल, और सैटेलाइट डेटा देकर समर्थन दिया, जिसे विशेषज्ञ भारत के खिलाफ रणनीतिक चाल मानते हैं।

घाना यात्रा: अवसर या मजबूरी?

इस तूफानी माहौल में मोदी अक्रा पहुंचे। घाना की संसद में उनका स्वागत पारंपरिक ढोल की थाप और स्थानीय गीतों ने किया। मोदी ने ट्वीट किया, "अक्रा पहुंचना सम्मान की बात है। राष्ट्रपति महामाहा का स्वागत हमारे पुराने, भरोसेमंद रिश्तों का प्रतीक है। हम भारत-घाना संबंधों को नई ऊँचाइयों पर ले जाएंगे।"

लेकिन सवाल वही है—क्या यह यात्रा ऑपरेशन सिंदूर की चूक, अमेरिका पर निर्भरता, और चीन की बढ़ती चुनौती को पार कर भारत की साख सुधारेगी? या यह सिर्फ एक और कूटनीतिक चमक-दमक बनकर रह जाएगी?

भारत-घाना: ऐतिहासिक बंधन और रोचक किस्से

अक्रा के बाजारों में भारतीय मसालों की खुशबू और बॉलीवुड गानों की गूँज घाना को भारत से जोड़े रखती है। यह रिश्ता कागजी कूटनीति से कहीं गहरा है—यह साझा संघर्ष और सपनों की कहानी है। 1950 के दशक में घाना के पहले राष्ट्रपति क्वामे एनक्रूमा भारत आए। गांधी की अहिंसा और नेहरू की 'ग्लोबल साउथ' की सोच ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने घाना की आजादी की लड़ाई को नई दिशा दी। 1957 में घाना के आजाद होने पर भारत ने वहाँ अपना पहला दूतावास खोला।

एक पुराना किस्सा है—1960 में नेहरू की घाना यात्रा के दौरान एनक्रूमा ने उन्हें एक शानदार 'केन्टे' कपड़ा भेंट किया, जो आज अक्रा के नेशनल म्यूजियम में प्रदर्शित है। उस स्वागत में स्थानीय जनजातियों ने ढोल-नगाड़ों के साथ नृत्य किया, और नेहरू की सादगी ने सबका दिल जीत लिया।

2011 में मनमोहन सिंह की यात्रा भी कम यादगार नहीं थी। नीली पगड़ी और सादे सूट में वह घाना की संसद में बोले, "भारत अफ्रीका का प्राकृतिक सहयोगी है। हमारा रिश्ता संसाधनों या निवेश तक सीमित नहीं, बल्कि साझा विकास और मानवीय सहयोग पर आधारित है।" उनकी बातों में गहराई थी, और स्वागत में घानाई गायकों ने पारंपरिक गीत गाए।

आर्थिक समीकरण: प्रगति और चुनौतियाँ

भारत-घाना व्यापार नेहरू काल से लंबा सफर तय किया है। 2004 में यह महज 213 मिलियन डॉलर था, जो मनमोहन सिंह के कार्यकाल में 2013-14 तक 1.2 अरब डॉलर पहुंचा। मोदी सरकार में यह 2017-18 में 3.34 अरब और 2018-19 में 4.48 अरब डॉलर तक गया, लेकिन 2023-24 में 2.51 अरब तक सिमट गया। 2024-25 (अप्रैल-अक्टूबर) में शुरुआती व्यापार 3.13 अरब डॉलर रहा। भारत का व्यापार घाटा बढ़ा है, क्योंकि घाना से सोना और तेल (घाना के निर्यात का 70%) तेजी से आयात हो रहा है।

भारत ने घाना को 450 मिलियन डॉलर की लाइन ऑफ क्रेडिट (LoC) दी, जिससे गांवों में बिजली, आईटी पार्क, और स्वास्थ्य सुविधाएँ बनीं। लेकिन चुनौती सामने खड़ी है—चीन। घाना इन्वेस्टमेंट प्रमोशन सेंटर (GIPC) के मुताबिक, भारत प्रोजेक्ट संख्या में दूसरे स्थान पर है, लेकिन निवेश राशि में चीन, स्पेन, और मिस्र से पीछे है। 1994-2024 में भारत का निवेश 1.92 अरब डॉलर रहा, जबकि चीन का इससे कहीं अधिक। 2023 में भारत का निवेश 77.93 मिलियन डॉलर था, लेकिन चीन की आर्थिक पकड़ मजबूत है।

ग्लोबल साउथ में चीन को चुनौती?

हालिया भारत-पाक तनाव में चीन ने पाकिस्तान को फाइटर जेट, मिसाइल, और सैटेलाइट डेटा देकर समर्थन दिया, जिसे विशेषज्ञ भारत के खिलाफ रणनीतिक चाल मानते हैं। घाना की सड़कों पर पारंपरिक नृत्यों की रौनक के बीच मोदी की यह यात्रा सिर्फ भारत-घाना दोस्ती की कहानी नहीं है। यह ग्लोबल साउथ में भारत की साख को पुनर्जनन करने और चीन की आक्रामकता को टक्कर देने की कोशिश है। चीन ने अफ्रीका में 200 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश किया है, जबकि भारत 80 बिलियन के आसपास है। घाना में चीन की पकड़ इंफ्रास्ट्रक्चर और खनन में मजबूत है। लेकिन भारत की ताकत उसकी सॉफ्ट पावर में है—ऐतिहासिक दोस्ती, सांस्कृतिक जुड़ाव, और लोकतांत्रिक मूल्य।

मोदी की यह यात्रा आर्थिक प्रतिद्वंद्विता का नया अध्याय भी शुरू कर सकती है। घाना के तेल-गैस भंडार, समुद्री मार्गों की सुरक्षा, और ग्लोबल साउथ में नेतृत्व के लिए भारत के पास मौका है। यह भारत के लिए न सिर्फ घाना, बल्कि पूरे अफ्रीका में अपनी स्थिति मजबूत करने का अवसर है, बशर्ते यह चीन की रणनीति को संतुलित करने के लिए स्पष्ट कदम उठाए।

सांस्कृतिक ताकत और जनमानस

अक्रा के बाजारों में भारतीय मसालों की खुशबू और अमिताभ बच्चन व शाहरुख खान की फिल्मों की गूँज घाना को भारत से जोड़े रखती है। 15,000 भारतीय समुदाय, योग, और क्रिकेट यहाँ भारत की सॉफ्ट पावर हैं। एक पुराना किस्सा है—1980 के दशक में 'डिस्को डांसर' ने घाना के सिनेमाघरों को फिर से जिंदा कर दिया। आज भी वहाँ के बुजुर्ग "आओ, ओम शांति ओम" गुनगुनाते हैं। लेकिन चीन और यूरोपीय देशों की आक्रामक मौजूदगी ने भारत के लिए मुकाबला कठिन कर दिया। घाना की सड़कों पर बच्चों के नृत्य और पारंपरिक गीत भारत-घाना की दोस्ती की गर्मी दिखाते हैं, मगर क्या यह नीतिगत ठोस कदमों में बदलेगा?

मोदी का इम्तिहान

घाना की संसद से लेकर अक्रा की सड़कों तक, मोदी की यह यात्रा कोई साधारण कूटनीति नहीं। यह भारत की विदेश नीति की अग्निपरीक्षा है। भारत कई मोर्चों पर जूझ रहा है। ऑपरेशन सिंदूर का अधूरा नतीजा जनता के मन में सवाल छोड़ गया है। कैप्टन शिव कुमार जैसे सैन्य अधिकारियों ने सरकार की रणनीतिक अस्पष्टता पर उंगली उठाई है। अमेरिका की मध्यस्थता की खबरों ने भारत की स्वायत्तता को कटघरे में खड़ा किया। और अब, चीन की पाकिस्तान को सैन्य मदद ने भारत को ग्लोबल साउथ में अपनी साख बचाने की चुनौती दी है।

मोदी के सामने सवाल है—कि क्या वह इस यात्रा को भाषणों और ट्वीट्स से आगे ले जा पाएंगे? यह मौका है—नेहरू और एनक्रूमा की ऐतिहासिक दोस्ती को नया जीवन देने का, ग्लोबल साउथ में भारत की पुरानी साख को पुनर्जीवित करने का, और चीन की आक्रामकता का मुकाबला करने का। अगर यह यात्रा भाषणबाजी तक सिमट गई, तो विपक्ष का तंज—"विदेश नीति उड़ानों और उद्घाटनों तक सीमित है"—और गहरा हो जाएगा।

घाना क्यों ज़रूरी है?

घाना भारत के लिए एक रणनीतिक खजाना है। इसके बाजारों में कोको और सोने की चमक भारत की आर्थिक भूख को ललचाती है। यह देश तेल, बॉक्साइट, और कोको का पावरहाउस है। भारत ने यहाँ आईसीटी, हेल्थकेयर, कृषि, और इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश किया है। 450 मिलियन डॉलर की लाइन ऑफ क्रेडिट ने घाना के गाँवों में बिजली, आईटी पार्क, और अस्पताल बनाए हैं। घाना का तेल भारत की ऊर्जा जरूरतों को मिटा सकता है। अटलांटिक महासागर के समुद्री मार्ग भारत की सुरक्षा रणनीति का हिस्सा हैं। और सबसे बड़ी बात, घाना ग्लोबल साउथ में भारत के नेतृत्व को मजबूत करने का रास्ता खोल सकता है।

घाना की सामाजिक ताकत भी अनोखी है। यहाँ महिलाओं की आबादी पुरुषों से अधिक है, जो सामाजिक बदलाव की मिसाल है। भारत के लिए यह मौका है—साझा लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने का, और अफ्रीका में अपनी सॉफ्ट पावर को चमकाने का। लेकिन चीन की गहरी आर्थिक पकड़ और यूरोपीय देशों की नई सक्रियता रास्ते में रोड़े हैं। घाना की सड़कों पर पारंपरिक नृत्यों की रौनक भारत-घाना की दोस्ती की गर्मी दिखाती है। मोदी की इस यात्रा से भारत और घाना नये बदलते वैश्विक दौर में रिश्तों की नयी परिभाषा लिखें, यह दोनों देशों की जनता चाहेगी। इसके लिए दोनों देशों को दिखावे से अलग जमीनी हकीकत और ज़रूरत के हिसाब से ठोस कदम उठाने होंगे।

यह यात्रा तस्वीरों और ट्वीट्स की चमक से आगे बढ़नी चाहिए। यह भारत के लिए मौका है—ग्लोबल साउथ में नेतृत्व को नई परिभाषा देने का, ऐतिहासिक साझेदारी को ठोस नीतियों में बदलने का, और चीन से मुकाबले के लिए रणनीतिक स्पष्टता लाने का।

घाना का इतिहास हमें सिखाता है कि सच्ची दोस्ती परस्पर विश्वास और ठोस कदमों से बनती है। नेहरू और एनक्रूमा ने यह दिखाया था। क्या मोदी इस बार उस विरासत को नया जीवन दे पाएंगे, या यह यात्रा एक और कूटनीतिक सैर-सपाटा बनकर रह जाएगी? भारत को चाहिए रणनीतिक स्पष्टता, आर्थिक ताकत, और सांस्कृतिक जुड़ाव। अगर यह मौका चूक गया तो सुर्खियाँ भले बनें, मगर भारत का अफ्रीकी सपना अधूरा रह जाएगा।

-ओंकारेश्वर पांडेय

भीगे मौसम का कड़वा सच : सावधानी नहीं तो संक्रमण तय

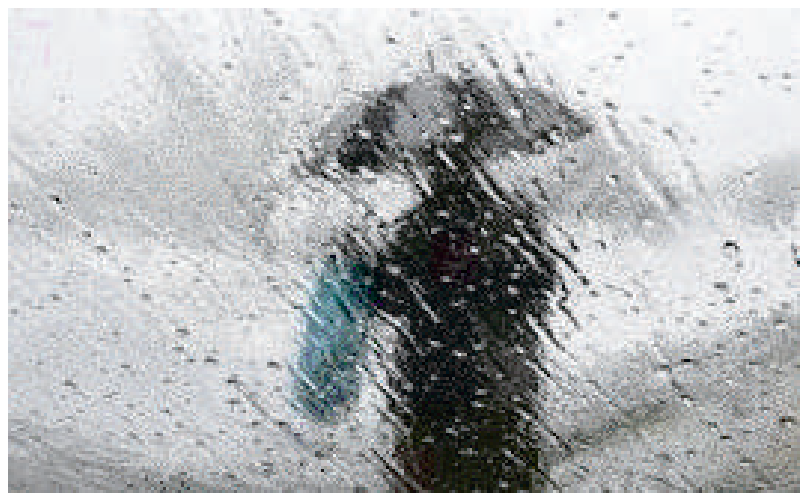

जब पहली बारिश की बूंदें ज़मीन से टकराती हैं, तो मिट्टी की सौंधी खुशबू के साथ एक उम्मीद जन्म लेती है। लगता है जैसे तपती गर्मी के बाद प्रकृति ने हमें अपने आँचल में ले लिया हो।

पर क्या आपने कभी गौर किया है? इसी आँचल में छिपा है बीमारियों का एक अदृश्य जाल, जो हर साल हजारों जिंदगियों को बीमारी, पीड़ा और कभी-कभी मौत की ओर धकेल देता है।

बरसात का मौसम केवल प्राकृतिक बदलाव नहीं है। यह हमारी जीवनशैली, स्वास्थ्य व्यवस्था और व्यक्तिगत सतर्कता की कड़ी परीक्षा है।

जब बारिश रूमानी नहीं, रोगकारी हो जाती है

बारिश कभी कवियों की प्रेरणा होती थी। आज यह डॉक्टरों की चिंता बन गई है।

कारण साफ है, जलभराव, गंदगी, नमी और वायरस का खुला तांडव।

हर गली, हर मोहल्ला एक संभावित संक्रमण-स्थल बन चुका है।

कुछ बेहद आम पर घातक बीमारियाँ जो इस मौसम में फैलती हैं :-

डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया : मच्छर जनित रोग जो जानलेवा हो सकते हैं।

वायरल फीवर और फ्लू : हवा में नमी वायरस को लंबे समय तक जीवित रखती है।

टाइफाइड, हैजा और दस्त : दूषित पानी और भोजन से तेजी से फैलते हैं।

फंगल इंफेक्शन और स्किन डिज़ीज़ : लगातार गीले कपड़े और पसीने से त्वचा कमजोर हो जाती है।

लक्षणों को पहचानिए, नज़रअंदाज़ मत कीजिए

बरसात में शरीर के छोटे से बदलाव को भी हल्के में लेना भारी पड़ सकता है।

लक्षण जो आपके भीतर खतरे की घंटी बजा रहहों :-

बार-बार बुखार आना या ठंड लगना

शरीर में टूटन और थकान

पेट में मरोड़, उल्टी या डायरिया

आँखों में जलन, त्वचा पर लाल चकत्ते

जोड़ों में तेज दर्द और कमजोरी

ये सभी लक्षण सामान्य नहीं होते। ये आपके शरीर की SOS कॉल हैं ₹अब इलाज जरूरी है !₹

सिर्फ दवा नहीं, बचाव है असली इलाज

बरसात में बीमारियों से लड़ने के लिए सबसे बड़ा हथियार है - सावधानी और जागरूकता।

इन छोटे मगर असरदार उपायों से आप और आपका परिवार सुरक्षित रह सकते हैं:

1. पानी की पवित्रता ही जीवन है

पानी हमेशा उबालकर या फिल्टर किया हुआ ही पिएं। बारिश में पानी के ज़रिए संक्रमण सबसे तेज़ी से फैलता है।

2. मच्छरों को घर से बाहर रखिए

फुल बाजू कपड़े पहनें, मच्छरदानी का उपयोग करें, और आसपास कहीं पानी जमा न होने दें।

3. संयमित भोजन ही अमृत है

बाहर के चाट-पकौड़े का मोह न करें। ताजा, गर्म और घर का बना खाना ही खाएं। विटामिन-C से भरपूर फल (नींबू, आंवला, कीवी) रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं।

4. नमी से नजदीकी, बीमारी से दोस्ती

भीगने के बाद गीले कपड़े तुरंत बदलें। गीले मोजे, जूते या तौलिए संक्रमण के स्रोत बन सकते हैं।

5. योग और धूपः शरीर की ढाल

हर दिन 20 मिनट धूप लें और हल्का व्यायाम करें। यह शरीर को भीतर से मज़बूत करता है।

बुज़ुर्गों और बच्चों पर विशेष ध्यान दें

इस मौसम में सबसे ज्यादा खतरा उन्हीं को होता है जिनकी इम्यूनिटी कमजोर होती है। बच्चों को बारिश के पानी में खेलने से रोकें, और बुज़ुर्गों को भीगने या ठंडी हवा से बचाएं।

अब सवाल यह नहीं कि बारिश होगी या नहीं?

सवाल यह है कि आप तैयार हैं या नहीं?

बूँदें रोकना हमारे हाथ में नहीं। लेकिन हर बूंद से निकलती बीमारी की चुपचाप दस्तक को अनसुना करना हमारी लापरवाही है।

हर साल के आंकड़े गवाही देते हैं, डेंगू और मलेरिया से हज़ारों मौतें होती हैं, जिनमें से ज्यादातर रोकी जा सकती थीं, यदि थोड़ी सी सतर्कता बरती जाती।

अंत में एक विनम्र अपील, एक ज़िम्मेदारी

इस बार जब बारिश की पहली बूँद आपके चेहरे को छूए, तो ज़रा रुकिएउसके पीछे छिपी संभावित बीमारी को याद कीजिए।

सिर्फ अपने लिए नहीं, अपने बच्चों, माता-पिता और समाज के लिए सतर्क बनिए।

क्योंकि बरसात आएगी और जाएगी, पर सावधानी रही तो ज़िंदगी मुस्कुराएगी।

-उमेश कुमार साहू

स्वामी विवेकानंद : भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक जागरण के अग्रदूत

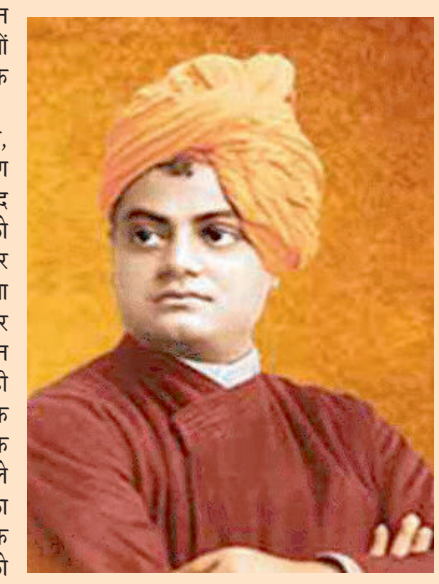

आधुनिक भारत के एक महान चिंतक। महान देशभक्त एवं दार्शनिक। युवा संन्यासी एवं युवाओं के प्रेरणास्रोत। और भारतीय नवजागरण के अग्रदूत। स्वामी विवेकानंद की एक पहचान

एक भारतीय हिंदू भिक्षु, दार्शनिक, लेखक, धार्मिक शिक्षक और भारतीय रहस्यवादी रामकृष्ण के मुख्य शिष्य के रूप में भी है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि उठो और जागो और तब तक रुको नहीं जब तक कि तुम अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते। स्वामी विवेकानंद का यह कथन देश के युवा एवं विद्यार्थी से लेकर हर वर्ग के लोगों के जीवन पर सटीक बैठता दिखाई पड़ता है। क्योंकि लक्ष्यहीन जीवन का ना तो कोई मतलब होता है और ना ही उपयोगिता। यही वजह है कि स्वामी विवेकानंद के सिद्धांत और कथन उनके निधन के कई सालों के बाद भी प्रासंगिक हैं। करीब सवा सौ साल पहले आज ही के दिन 4 जुलाई को स्वामी विवेकानंद का निधन हुआ था। आज उनकी पुण्यतिथि के मौके पर उनके आध्यात्मिक तथा युवाओं को संदेश को स्मरण करने का दिन है।

अपने ओजस्वी विचारों से लोगों की जिंदगी को रोशन करने वाले स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। उनके बचपन का नाम नरेंद्र नाथ था, लेकिन संन्यास लेने के बाद इनका नाम विवेकानंद हुआ। वर्ष 1884 में अल्पायु में ही उनके पिता विश्वनाथ दत्त की मृत्यु हो गई। पिता की मृत्यु के बाद अत्यंत गरीबी की मार ने उनके चित्त को कभी डिगने नहीं दिया। स्वामी विवेकानंद ने 16 वर्ष की आयु में कलकत्ता से एंट्रेंस की परीक्षा पास की और कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक उपाधि प्राप्त की। स्वामी विवेकानंद नवंबर 1881 ईस्वी में संत रामकृष्ण से मिले और उनकी आंतरिक आध्यात्मिक चमत्कारिक शक्तियों से नरेन्द्रनाथ इतने प्रभावित हुए कि वे उनके सर्वप्रमुख शिष्य बन गए। धर्म और आध्यात्म की अपनी यात्रा में स्वामी विवेकानंद ने 1 मई 1897 में कलकत्ता में रामकृष्ण मिशन और 9 दिसंबर 1898 को कलकत्ता के निकट गंगा नदी के किनारे बेलूर में रामकृष्ण मठ की स्थापना की।

पहली नजर में भले ही यह अतिशयोक्ति लगे लेकिन महज 25 वर्ष की आयु में नरेंद्र दत्त ने गेरुआ वस्त्र पहन लिए। तत्पश्चात उन्होंने भारतवर्ष में सामाजिक और आध्यात्मिक तथा हिंदू धर्म की हालत को देखने के लिए पैदल ही पूरे भारतवर्ष की यात्रा की। सन 1893 में अमेरिका के शिकागो में विश्व धर्म परिषद् हो रही थी। स्वामी विवेकानंदजी उसमें भारत के प्रतिनिधि के रूप से पहुंचे। विदेसी लोग उस समय पराधीन भारतवासियों को बहुत हीन दृष्टि से देखते थे। वहां लोगों ने बहुत प्रयत्न किया कि स्वामी विवेकानंद को सर्वधर्म परिषद में बोलने का समय ही न मिले। एक अमेरिकन प्रोफेसर के प्रयास से उन्हें थोड़ा समय मिला, किंतु उनके विचार सुनकर सभी विद्वान चकित हो गए। अमेरिका में उन्होंने रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखाएं स्थापित कीं। अनेक अमेरिकन विद्वानों ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। वे सदा अपने को गरीबों का सेवक कहते थे। भारत के गौरव को देश-देशांतरों में उज्ज्वल करने का उन्होंने सदा प्रयत्न किया।

स्वामी विवेकानंद का मानना है कि किसी भी राष्ट्र का युवा जागरूक और अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित हो, तो वह देश किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। युवाओं को सफलता के लिये समर्पण भाव को बढ़ाना होगा तथा भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिये तैयार रहना होगा। विवेकानंद युवाओं को आध्यात्मिक बल के साथ-साथ शारीरिक बल में वृद्धि करने के लिये भी प्रेरित करते हैं। युवाओं के लिये प्रेरणास्रोत के रूप में विवेकानंद के जन्म दिवस, 12 जनवरी को भारत में राष्ट्रीय युवा दिवस तथा राष्ट्रीय युवा सप्ताह मनाया जाता है। इस महोत्सव का उद्देश्य राष्ट्रीय एकीकरण, सांप्रदायिक सौहार्द्र तथा भाईचारे में वृद्धि करना है। स्वामी विवेकानंद का मानना है कि भारत की खोई हुई प्रतिष्ठा तथा सम्मान को शिक्षा द्वारा ही वापस लाया जा सकता है। किसी देश की योग्यता तथा क्षमता में वृद्धि उस देश के नागरिकों के मध्य व्याप्त शिक्षा के स्तर से ही हो सकती है।

स्वामी विवेकानंद ने ऐसी शिक्षा पर बल दिया जिसके माध्यम से विद्यार्थी की आत्मोन्नति हो और जो उसके चरित्र निर्माण में सहायक हो सके। साथ ही शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिसमें विद्यार्थी ज्ञान प्राप्ति में आत्मनिर्भर तथा चुनौतियों से निपटने में स्वयं सक्षम हों। विवेकानंद ऐसी शिक्षा पद्धति के घोर विरोधी थे जिसमें गरीबों एवं वंचित वर्गों के लिये स्थान नहीं था। आज भी देश में बनाई गई नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। इसके साथ

-प्रदीप कुमार वर्मा

ओडिशा से जमशेदपुर जा रही बस व हाईवा मे दर्दनाक भिड़ंत, दो दर्जन घायल

एक्सीडेंट जोन बन रहा इलाका अनेक इलाकों में परिवहन कर्मी मालामाल !

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

सरायकेला ,ओडिशा के क्योंझर जिले के बड़बिल इलाके से झारखंड के टाटानगर आ रही खचाखच भरी बस सरायकेला खरसावां जिले में सीधे सामने से तेज रफ्तार से आ रही एक हाईबा से जा टकराई जिससे करीब दो दर्जन लोग गंभीर रूप से घायल हो गये । दुर्धटना के बाद चीख पुकार मच गई. यह दर्दनाक दुघटना चाईबासा-हाता मार्ग पर चाईबासा से लगभग 13 किलोमीटर की दूरी पर रूंगटा के चालियामा स्टील पार कर के बाद हुआ जो सरायकेला खरसावां जिले में आता है .यह सडक अब एक एक्सीडेंट जोन के रूप में अपना स्थान बना रहा है ।

आये दिनों इलाके में औद्योगिक गतिविधि बढ़ने के कारण यहां ट्रैफिक बढ़ गयी है उस अनुपात में नियम अनुपालन नहीं होने एवं लागु नहीं होने सड़क हादसा आम हो गयी है . यहां रोज सुबह ट्रेफिक का नजारा घातक बना रहता है .जिले में वसुली कर्मी के कारण यह हाल बनी हुई है . यहां तक की स्कूली बच्चे अपने शिक्षण संस्थानों में समय पर पहुंच नहीं पाते .जिसमें सड़क आवाजाही व सुरक्षा नाम के नियमों की धज्जियां उड़ती है.

झारखंड में कुछ समय से अत्यधिक वर्षाजल के कारण मार्ग फिसलनभरी है जहां सावधानी पूर्वक ड्राइविंग अत्यधिक मायने रखता पर इस इलाके में मालवाहक वाहन चालक इसे अनुपालन नहीं करते .आज इस हादसे में बस सवार लगभग दो दर्जन यात्री गंभीर रूप से घायल होने की घटना है , जिनमें से कई की हालत चिंताजनक बनी हुई है. अधिकतर यात्रियों को चेहरे, हाथ और सीने में गहरी चोटें आई हैं. टक्कर इतनी तेज थी कि कई यात्री सीट से उछलकर बस के अंदर ही लोहों मे जाकर जोरदार पीटे फिर घायल हो गए जहां चीख पुकार मच गयी .

विगत कुछ समय में इस इलाके में औधोगिक विकास के नाम जो कुछ हुआ उसमें सबसे बड़ी क्षति पर्यावरण एवं आमजनों को आवाजाही में आज उठानी पड़ रही है . आज इस हादसे के बाद निकट अस्पताल का नहीं होना बड़ी समस्या लोगों ने माना यद्यपि जिला में सी एस आर जा रहा कहां यह जांच का विषय है. इलाज की व्यवस्था न होने के कारण घायलों और उनके परिजनों में काफी नाराज़गी देखी गई. नाम नहीं छपने के शर्त पर कुछ लोगों ने कहा सरायकेला परिवहन विभाग के कर्मियों द्वारा वर्षों से संचालित उगाही मिशन पर भ्रष्ट कर्मचारी नेता आदि से वे सबकुछ जान कर भी त्रस्त है जो गंभीर सवाल खड़ा करता है .

डीएमओ सत्पथी ने जप्त कराये अवैध बालू लदे दो ट्रेक्टर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची , एन जी टी के सख्त आदेश के वाबजूद छिटपुट तरीके से राज्य के हर हिस्से में जारी थोडी बहुत बालू चोरी पर सरायकेला जिला नकेल कसने में सफल है । सरायकेला खरसावां जिला खनन पदाधिकारी ज्योति शंकर सतपथी ने ईचागढ़ के पातकुम में छापेमारी कर अवैध बालू लदे दो ट्रैक्टर को जब्त करवाया है । खनन इंस्पेक्टर समीर ओझा के नेतृत्व में खनन विभाग ने गुरुवार को छापेमारी कर ईचागढ़ के पातकुम में अवैध बालू लदे दो ट्रैक्टर को जब्त कर किया। इधर, खनन विभाग की टीम को देखकर चालक ट्रैक्टर को छोड़कर भागने में सफल रहा। इसके अलावे खनन विभाग की टीम ने कई जगहों पर लौह अयस्क लदे वाहनों की कागजातों की जांच की। खनन इंस्पेक्टर ने बताया कि अवैध बालू के खनन और परिवहन के खिलाफ छापेमारी लगातार जारी रहेगी ।

ओडिशा सरकार ने पुरी रथ यात्रा भीड़ दुर्घटना की जांच के लिए चार सदस्यीय टीम गठित की

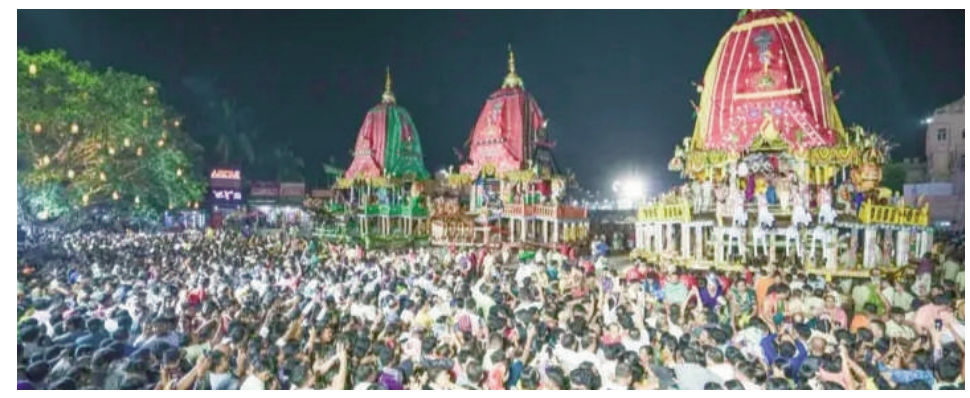

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राज्य सरकार ने पुरी के गुंडिचा मंदिर के पास हाल ही में हुई भगदड़ की जांच के लिए ओडिशा प्रशासनिक सेवा (ओएएस) के चार अधिकारियों की एक टीम गठित की है। यह टीम विकास आयुक्त और अतिरिक्त मुख्य सचिव अनु गर्ग की जांच में सहायता करेगी ।जांच दल में नियुक्त अधिकारी हैं: मानस रंजन सामल, संयुक्त निदेशक (संपदा) और अतिरिक्त सचिव, सामान्य प्रशासन और लोक शिकायत (जीएएंडपीजी) विभाग; बिनय कुमार दाश, अतिरिक्त सचिव, आवास और शहरी विकास विभाग; रश्मि रंजन नायक, अतिरिक्त सचिव, जल संसाधन विभाग; और प्रदीप कुमार साहू, अतिरिक्त सचिव, निर्माण विभाग।

जीएएंडपीजी विभाग के निर्देशानुसार, दाश और साहू फिलहाल पुरी में हैं और 8 जुलाई तक वहीं रहेंगे। ये चारों अधिकारी अपने मौजूदा कर्तव्यों के अलावा इस जांच का संचालन भी करेंगे। निर्देश में आगे कहा गया है कि ये अधिकारी जांच में सहायता के लिए प्रतिदिन दोपहर 3 बजे से शाम 5 बजे तक दो घंटे के लिए विकास आयुक्त-सह-अतिरिक्त मुख्य सचिव, योजना और समन्वय विभाग के कार्यालय में मौजूद रहेंगे। 29 जून को वार्षिक रथ यात्रा उत्सव के दौरान गुंडिचा मंदिर के पास भगदड़ मच गई थी, जब बड़ी संख्या में भक्त भगवान जगन्नाथ और उनके भाई-बहनों के दर्शन करने के लिए एकत्र हुए थे। इस दुखद घटना में तीन भक्तों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए।

इस घटना ने पुरी में रथ यात्रा के प्रबंधन और भीड़ नियंत्रण व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। उम्मीद है कि सरकार दुर्घटना के कारणों की पहचान करने के लिए एक जांच दल गठित करेगी और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए आवश्यक उपाय सुझाएगी।

मंत्री गडकरी के हाथों झारखंड में 6300 करोड़ योजनाओं का शिलान्यास व लोकार्पण

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची , अपनी पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार समय निकाल कर केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने गढ़वा एवं राजधानी रांची में बड़ी योजनाओं को वृहस्पतिवार को लोकार्पण व आधारशिला रखी . उन्होंने रातू रोड में एक महत्वपूर्ण फ्लाईओवर का उद्घाटन किया. रांची पहुंचने पर नितिन गडकरी भव्य स्वागत की गयी .फूलों से उन्हें भर दिया गया . रातू रोड एलीवेटेड कॉरिडोर के निर्माण पर करीब 560 करोड़ रुपए खर्च हुए हैं. नितिन गडकरी ने आज झारखंड में 6300 करोड़ रुपए की योजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया.

नागा बाबा खटाल से नितिन गडकरी ने झारखंड को 6300 करोड़ रुपए का तोहफा दिया. उन्होंने 1900 करोड़ की लागत से पलमा से गुमला तक बने फोर लेन सड़क, 560 करोड़ रुपए की लागत से रांची शहर में रातू रोड पर बने एलिवेटेड कॉरिडोर, 70 करोड़ की लागत से बने बाराहाट से तुलसीपुर खंड तक 2 लेन पेव्ड शोल्डर के चौड़ीकरण, 825 करोड़ की लागत से बने बरही-कोडरमा खंड फोर लेन, 100 करोड़ की लागत वाली गोड्डा से सुंदरपहाड़ी खंड तक 2 लेन पेव्ड शोल्डर के चौड़ीकरण, 20 करोड़ की लागत से गिरिडीह शहर में सड़क के चौड़ीकरण और 1130 करोड़ की लागत से शंखा से खजुरी तक बने फोर लेन सड़क का लोकार्पण किया.

केंद्रीय मंत्री ने 285 करोड़ रुपए की लागत वाली दामोदर नदी पर हाई लेवल पुल और भौरा रेलवे लेवल क्रॉसिंग पर आरओबी के निर्माण, 95 करोड़ की लागत वाले मुर्गाताल से मानपुर खंड तक 2 लेन पेव्ड शोल्डर के चौड़ीकरण, 35 करोड़ की लागत से सिमडेगा जिले में 8 हाई लेवल पुलों के निर्माण और 1330 करोड़ रुपए की लागत से छत्तीसगढ़-झारखंड सीमा से गुमला तक 4 लेन सड़क का शिलान्यास भी किया.

राष्ट्रपति 14 को ओडिशा आएंगे

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : महामहिम राष्ट्रपति 14 तारीख को ओडिशा आ रहे हैं। 15 तारीख को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के रावेन्सा विश्वविद्यालय के 13वें दीक्षांत समारोह और दो अन्य कार्यक्रमों में शामिल होने की संभावना है। राष्ट्रपति और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के समारोह में शामिल होने की उम्मीद है ।समारोह में 150 पीएचडी छात्रों को शैक्षणिक वर्ष 2023, 2024 और 2025 के लिए डिग्री और प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे। तीनों वर्षों के कुल 6 पीएचडी छात्रों को सर्वश्रेष्ठ स्नातक के रूप में स्वर्ण पदक प्रदान किए जाएंगे। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले व्यक्तियों को भी सम्मानित किया जाएगा, ऐसा रेवेन्सा अधिकारियों ने बताया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023